विक्रम संवत् 2083 ▪ भाद्रपद/ आश्विन (क्वॉर) मास (07) ▪ 01 सितंबर 2026 ▪ मूल्यः 23 रु.

चरैवेति

आर. एन. आई. पंजीयन क्र.017261/69; डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या - 44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

भारत माता के लाड़ले सपूत, विश्व के सर्वमान्य नेता एवं सनातन संस्कृति के रक्षक, भारत के माननीय प्रधानमंत्री, जन-जन के नेता, प्रधान सेवक, माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी को जन्म दिवस के शुभ अवसर पर चरैवेति परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएें।

साकार होगा विकसित भारत का लक्ष्य

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को उज्बेकिस्तान का सर्वोच्च राजकीय सम्मान प्राप्त हुआ।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ''नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत संकल्प अभियान'' की शुरुआत पर संबोधित किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक युवा केंद्र-विवेक स्मारक, श्री रामकृष्ण आश्रम का उद्घाटन किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बच्चों के साथ रक्षाबंधन का त्योहार मनाया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कॉमनवेल्थ गेम्स -2026 में पदक विजेता खिलाड़ियों से मुलाकात की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन के साथ द्विपक्षीय बैठक की।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय ▪ संजय गोविन्द खोचे** 04

▪ लक्ष्य विकसित भारत @ 2047

» **कवर स्टोरी ▪** 05

▪ साकार होगा विकसित भारत का लक्ष्य

13

26

▪ **स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण** 13

» संकल्प हो रहे हैं साकार - डॉ. मोहन यादव

» विकसित राष्ट्र का संकल्प होगा साकार - हेमंत खण्डेलवाल

» खादी आत्मनिर्भरता का माध्यम - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **प्रदेश कार्यसमिति** 15

» संकल्प पत्र के 70 प्रतिशत वादे पूर्ण - डॉ. मोहन यादव

» भाजपा विचार, संस्कार, सेवा व राष्ट्र निर्माण की यात्रा - हेमंत खण्डेलवाल

» एक ही लक्ष्य - 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था

▪ **राजनीतिक प्रस्ताव** 18

» भारतीय जनता पार्टी, मध्यप्रदेश राजनीतिक प्रस्ताव प्रदेश कार्यसमिति बैठक 30 एवं 31 अगस्त 2026, ओरछा

▪ **अनुसूचित जाति, किसान एवं युवा मोर्चा की बैठक** 23

» लक्ष्य अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **तिरंगा यात्रा** 24

» एकता और अखंडता के साथ समझौता अस्वीकार -डॉ. महेन्द्र सिंह

» क्रांतिकारियों ने दिलाई आजादी -डॉ. मोहन यादव

» राष्ट्र सर्वोपरि - हेमंत खण्डेलवाल

» तिरंगा यात्रा को जन-जन का अभियान बनाएं कार्यकर्ता - अजय जामवाल

▪ **कलश वंदन यात्रा** 26

» महापुरूषों के विचारों को आचरण में आत्मसात करें - डॉ. मोहन यादव

» समरसता अभियान, व्यापक आंदोलन है - हेमंत खण्डेलवाल

» समरसता अभियान महाअभियान है - दुर्गादास उइके

» संत रविदास जी ने समानता का संदेश दिया - लाल सिंह आर्य

▪ **सोशल मीडिया** 29

» विकसित भारत संकल्प, जन-जन तक पहुंचाऐं - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **कविता** 29

» दूर कहीं कोई रोता है

▪ **विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस** 30

» विस्थापन मानव निर्मित भयानक त्रासदी - हेमंत खण्डेलवाल

» भाजपा और मजबूत - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **महिला,अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग मोर्चा बैठक** 31

» सभी का सहयोग अत्यावश्यक - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **मन की बात** 32

» नशा मुक्त भारत के मिशन से जुड़ने का आव्हान

▪ **पुण्यतिथि** 36

» अटल जी राष्ट्रसेवा का संकल्प - डॉ. मोहन यादव

» अटल जी, युग थे - हेमंत खण्डेलवाल

» अटल जी ने नई दिशा दी - डॉ. महेंद्र सिंह

» देश सेवा में डॉ. विश्वेश्वरैया

▪ **शिक्षक दिवस** 39

» संपूर्ण शिक्षक बिरादरी के सम्मान का दिन है शिक्षक दिवस

▪ **विचार प्रवाह** 41

» राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. गोगा पंचमी, भाई भिन्ना 2. हलषष्ठी (हरछठ) व्रत 4. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत 5. गोगा नवमी 7. जया/ अजा एकादशी व्रत 8. ओमद्वास, गोवत्स द्वादशी, प्रदोष 9. शिव चतुर्दशी व्रत 10. कुशग्रहणी अमावस पिठोरा 11. स्ना. दा. अमावस, तान्हा पोला 13. बाबू दोज 14. हरतालिका तीज व्रत, विनायकी चतुर्थी, गणेशोत्सव प्रारम्भ 15. ऋषि पंचमी 17. मोरयाई छठ, संतान सातें व्रत, मुक्ताभरण सप्तमी, दूबरी सातम 19. दूर्वाष्टमी, राधाष्टमी 22. जलझूलनी (डोल) एकादशी 24. प्रदोष व्रत 25. अनंत चौदस, पा. गणेश विसर्जन 26. स्ना. दा. व्रत पूर्णिमा 27. पितृपक्ष प्रारम्भ 29. अं. गणेश चतुर्थी व्रत

• मुख्य जयंती-दिवस

2. श्री धरणीधर जयंती 4. संत ज्ञानेश्वर जयंती 8. विश्व साक्षरता दिवस, मां वेलांकनी पर्व 11. गोटमार मेला पांढुर्ना 12. गुरू ग्रंथ साहिब प्रकाश दिवस 13. स्वा. ब्रह्मानंद लोधी निर्वाण दिवस 14. राष्ट्रीय हिन्दी दिवस 15. इंजीनियर डे, इं. विश्वश्वैरिया जयंती 18. नवाखाई 23. राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस 25. पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती, सद्गुरु धनीदेव परमधाम वास दिवस 27. विश्व पर्यटन दिवस 28. लता मंगेशकर जयंती

वर्ष-58, अंक : 07, भोपाल, सितंबर 2026

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

शक्ति हमारे असंयत व्यवहार में नहीं बल्कि संयत कारवाई में निहित है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•

सम्पादक

मुद्रक एवं प्रकाशक

संजय गोविंद खोचे*

•

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

•

व्यवस्थापक

योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,

ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016

e-mail:charevetibpl@gmail.com

web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

लक्ष्य विकसित भारत @ 2047

सिद्धि तो मोदी जी अवश्य ही दिलवायेंगे। क्योंकि सारा विश्व जानता है- मोदी की गारण्टी-गारण्टी पूरा होने की गारण्टी है।

15 अगस्त के अवसर पर लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को सम्बोधन में बहुत बड़े लक्ष्य। ''विकसित भारत @ 2047'' को सिद्ध करने के लिए सरकार के प्रयासों की चर्चा की। सिद्धि तो मोदी जी अवश्य ही दिलवायेंगे। क्योंकि सारा विश्व जानता है- मोदी की गारण्टी-गारण्टी पूरा होने की गारण्टी है। इस विशाल सिद्धि को पाने के लिए मोदी जी रात-दिन एक करके हर संभव दिशा मे प्रयासरत हैं। असंभव से भी लड़कर-संभव बनाने का प्रयास जारी है। मोदी जी को पुरानी सरकारों से विरासत में प्राप्त गलत निर्णयों, भेदभाव, जातिवाद, परिवारवाद, भ्रष्टाचार जैसे अवरोधों से लड़ कर देश को आगे बढ़ाने का प्रयास करना पड़ रहा है।

मोदी जी ने लालकिले से अपने सम्बोधन में बताया कि काँग्रेस सरकार ने 99 प्रतिशत समुद्री तटों को नो-गो एरिया घोषित करके रखा था। जिसके चलते समुद्र के अन्दर एक्सप्लोरेशन संभव नहीं हो पा रहा था। जिससे भारत को कच्चे तेल के लिए विदेशों पर निर्भर रहना पड़ रहा था। अब मोदी जी ने 99 प्रतिशत समुद्री तट जो नो-गो एरिया था, उसे गो-अहेड एरिया बना दिया है। अब भारतीय समुद्र तट पर एक्सप्लोरेशन के साथ-साथ नए भंडार खोजने में सहायता मिलेगी। विदेशी निर्भरता से मुक्ति मिलेगी या विदेशी निर्भरता समाप्त होगी। कच्चे तेल के लिए भारत का यह कदम आत्मनिर्भरता हासिल करने की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। मोदी सरकार ने समुद्र मंथन के लिए 85000 करोड़ रूपये की व्यवस्था पहले ही कर रखी है। जिससे समुद्र मंथन के प्रयासों को सार्थकता व गति प्राप्त होगी।

ईरान-इजराइल-अमेरिका के बीच जारी तनाव एवं रूस-युक्रेन तनाव के चलते भारत को विभिन्न मोर्चों पर अपने 140 करोड़ देशवासियों के हितों की रक्षा के लिए नित्य नए-नए प्रयास करना पड़ रहे हैं तथा भविष्य में ऐसी वैश्विक समस्या आने पर निपटने के लिए देश को तैयार करने का प्रयास जारी हैं।

ऊर्जा संकट अपने आप में बहुत बड़ा भीषण संकट है। क्योंकि बिना ऊर्जा के देश की प्रगति का पहिया थम सा जावेगा। सामान्य मानवी के जीवन में परेशानियाँ उत्पन्न हो जावेंगी। सरकार ने विदेशी कच्चे तेल पर निर्भरता कम करने के लिए वैकल्पिक स्त्रोतों पर प्रयास करना प्रारम्भ कर दिये हैं। मोदी सरकार के प्रयासों को उल्लेखनीय सफलता हाथ आई है। विश्व की सबसे बड़ी व सबसे ज्यादा शक्तिशाली हाईड्रोजन ट्रेन का सफल संचालन प्रारम्भ हो चुका है। 700 शहरों में घरों तक गैस पाईप से पहुँचाई जा चुकी है। सोलर एनर्जी का 160 गीगावॉट का लक्ष्य भारत हॉसिल कर चुका है। रेल्वे इलेक्ट्रिफिकेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। जिससे डीजल पर निर्भरता कम होने के साथ-साथ पर्यावरण को भी लाभ मिल रहा है। मोदी सरकार के वैकल्पिक ऊर्जा के क्षेत्रों में किये गये प्रयासों के कारण देश वैश्विक संकटों का सामना करने में सक्षम हो रहा है। ऊर्जा संकट से देश को बचाने के साथ-साथ गरीब किसान को भी वैश्विक संकट न झेलना पड़े, इसका भी मोदी जी ने पूरा प्रबन्ध किया है। गरीब किसान की पूरी-पूरी चिंता की है। डीएपी की एक बोरी जो विश्व बाजार में 5000 रूपये में उपलब्ध है पर मोदी जी के किसान भाईयों को 1350 रूपये में उपलब्ध है, यूरिया की एक बोरी का विश्व बाजार में दाम 3000 रूपये है पर मोदी जी के किसान भाईयों के लिए 300 रूपये में उपलब्ध है। निश्चित ही मोदी जी, किसान भाईयों को वैश्विक संकट के कष्टों से बचाने में सफल रहे। यह मोदी जी की बहुत बड़ी सफलता है।

इसी प्रकार आजादी के साथ-साथ देश में सेमीकंडक्टर की चर्चा तो होती रही पर सरकारों ने इस दिशा में कोई सघन प्रयास नहीं किया। मोदी जी के प्रयासों के चलते आज भारत में तीन सेमीकंडक्टर प्लांट प्रारम्भ हो चुके हैं और शीघ्र ही आठ सेमीकंडक्टर प्लांट प्रारम्भ होने जा रहे हैं। क्रिटिकल मिनरल्स की दिशा में भारत बहुत आगे निकल चुका है।

सभी दिशाओं में किये जा रहे प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत विश्व की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था बन चुका है। संकटों के बावजूद भारत की जीडीपी नए शिखर पर पहुँच रही है। 40 देशों के साथ हुए मुक्त व्यापार समझौतों ने भारत के नागरिकों को विश्व के बाजारों में अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान किया है।

म. प्र. भाजपा की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक राजाराम सरकार के तीर्थ स्थली ओरछा में सम्पन्न हुई। भाजपा प्रदेश नेतृत्व ने राजाराम के सिद्धांतों को आत्मसात कर जनता के बीच कार्य करने का निर्णय लिया। प्रदेश कार्यसमिति ने म. प्र. सरकार व प्रदेश भाजपा संगठन के प्रयासों व सिद्धियों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। कार्यसमिति ने मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव जी के नेतृत्व की सरकार की सिद्धियों पर हर्ष प्रकट किया। डॉ. मोहन यादव जी के यशस्वी नेतृत्व में म. प्र. ने वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय किया है तथा वर्ष 2027 को माता-बहनों के सशक्तिकरण और कल्याण के लिए समर्पित करने का निर्णय किया है। यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार ने प्रदेश को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने के लिए ठोस कार्य योजना तैयार की है।

भाजपा का मूल आधार सेवा, संगठन और सामाजिक समरसता है। संत शिरोमणी रविदास महाराज की 650 वीं जयंती के अवसर पर भाजपा संगठन ''समरसता संकल्प अभियान'' के माध्यम से समाज में समरसता का संदेश पहुँचायेगा।

मध्यप्रदेश भाजपा प्रदेश कार्यसमिति ने कार्यकर्ताओं से मध्यप्रदेश भाजपा संगठन को और अधिक मजबूत बनाने तथा आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश -आत्मनिर्भर भारत बनाने के संकल्प के लिए नए जोश के साथ कार्य करने का आव्हान किया। ■

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

साकार होगा विकसित भारत का लक्ष्य

- दृढ़ संकल्प के साथ भारत ने एक बहुत बड़े सपने की कल्पना की है, सपना यह है कि जब हम आजादी के 100 साल मनाएंगे, 2047 तक हम एक विकसित भारत का निर्माण करेंगे।
- हमें खुद पर विश्वास करना चाहिए और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में गर्व महसूस करना चाहिए।
- जिन क्षेत्रों को कभी 'नो-गो एरिया' के रूप में देखा जाता था, वे अब 'गो-अहेड एरिया' हैं।
- मेक इन इंडिया और वोकल फॉर लोकल की भावना को हर भारतीय अपना रहा है।
- भारत के पास स्थिर राजनीतिक जनादेश, स्थिर सरकार, जीवंत लोकतंत्र, मजबूत न्यायिक प्रणाली और संविधान है जो हम सभी का मार्गदर्शन करता है।
- हमें तीन चीजों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, लागत, गुणवत्ता और व्यापकता।
- हमारे कारखाने प्रतिस्पर्धी होने चाहिए, हमारे उत्पाद उपयोगकर्ता के अनुकूल होने चाहिए और हमारी पैकेजिंग सर्वोत्तम होनी चाहिए।
- नक्सली हिंसा से प्रभावित स्थानों पर शांति, विकास और नई उम्मीद देखी जा रही है।
- आने वाले वर्षों में सप्तधाराएं भारत को आगे ले जाकर देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगी।

आजादी के बाद 15 अगस्त को लाल किले पर पहली बार वंदे मातरम् गूंजा। जब देश के लोग वंदे मातरम् के 150 वर्ष मना रहे हैं, तो इससे बड़ा उत्तम अवसर क्या हो सकता है।

कोई भी राष्ट्र तब महान बनता है, तब अपनी सिद्धियों को प्राप्त करता है, जब अपने सपनों, अपने संकल्पों और अपने सामर्थ्य के दम पर आगे बढ़ता है।

अब छोटे सपनों से चलने वाला नहीं है, हमें बड़े सपने क्योंकि बड़े सपने हमारी सोच को भी विस्तार देते हैं। हमारी सोच के क्षितिज को भी विस्तृत करते हैं। हमारे संकल्प दृढ़ होने चाहिए, जब संकल्प दृढ़ होता है, तो कठिनाइयों से, आपदाओं के बीच से रास्ते निकालने का सामर्थ्य अपने आप उभरकर के आता है।

हमारे संकल्प भी ऊंचे होने चाहिए क्योंकि जब सपने ऊंचे होते हैं, संकल्प ऊंचे होते हैं, तो हमारे सामर्थ्य की ऊंचाई भी बढ़ती है, हमारे प्रयासों की ऊंचाई भी बढ़ती है और तब जाकर के हम सपनों को साकार कर सकते हैं।

भारत ने भी एक बहुत बड़ा सपना देखा है, दृढ़ संकल्प के साथ देखा है, नई ऊंचाइयों को छूने के लिए देखा है, और वह सपना है, जब आजादी के 100 साल होंगे। 2047 में हम विकसित भारत बना के रहेंगे। 140 करोड़ देशवासियों के पुरुषार्थ से, इस लक्ष्य को हासिल करना है और जब दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश विकसित होने का संकल्प लेता है, तो यह दुनिया की नजरों में भी हमारे साहस का परिचायक बन जाता है। दुनिया हमारी तरफ देखने का नजरिया बदलने के लिए मजबूर हो जाती है।

पिछले 12 वर्ष में देश के कोटि-कोटि नागरिकों ने दलित हो, पीड़ित हो, वंचित हो, आदिवासी हो, गांव में रहने वाला हो, शहर में रहने वाला हो, गरीब हो, मध्यम वर्ग का हो, युवा हो, बुजुर्ग हो, नारी हो, पुरुष हो, उत्तर हो, दक्षिण हो, पूरब हो, पश्चिम हो, हर किसी ने पिछले 12 साल में एक संकल्प के साथ, समर्पण के साथ, देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में हर प्रकार से प्रयास किया है। और उसी का परिणाम है, कि इतने, कितने कम समय में 25 करोड़ देशवासी, गरीबी को परास्त करके गरीबी से बाहर निकले हैं। इन्हीं देशवासियों के प्रयासों का परिणाम है कि हम कभी फ्रेजाइल फाइव में गिने जाते थे। 12 साल के भीतर-भीतर हम एक मेजर इकोनॉमी में फास्टेस्ट ग्रोइंग इकोनॉमी बन गए हैं।

देश आजाद हुआ, बहुत सारे सपने लेकर के आजाद हुआ, लेकिन हम गति नहीं पकड़ पाए, रफ्तार नहीं पकड़ पाए। होती है, चलती है, अरे हो जाएगा, देखा जाएगा, उसी में खोए रहे। 2014 तक आते-आते तो पूरे विश्व ने हमें फ्रेजाइल फाइव की श्रेणी में डाल दिया था। ऐसे समय, पिछले 12 साल में भारत ने एक नई रफ्तार पकड़ी है, तेज गति से हम आगे बढ़ रहे हैं और देशवासियों का संकल्प है कि अब 140 करोड़ देशवासियों के संकल्प को, सामर्थ्य को रोकना नामुमकिन है।

पिछले 12 वर्षों में

- डिफेंस प्रोडक्शन करीब 4 गुना हुआ।
- खादी और ग्रामोद्योग का उत्पादन करीब 5 गुना हुआ।
- इलेक्ट्रॉनिक मैन्युफैक्चरिंग करीब 7 गुना बढ़ा।
- आधुनिक रेलवे कोच का निर्माण 21 गुना बढ़ा।
- मोबाइल फोन उत्पादन 35 गुना बढ़ा।
- आधुनिक युग को देखकर के डिजिटल और इनोवेशन की दुनिया में हमने अपना परचम लहराया।
- इंटरनेट यूजर, इंटरनेट कंज्यूमर करीब-करीब चार गुना बढ़े।
- पेटेंट ग्रांट होने की संख्या 4 गुना बढ़ी।
- डिजिटल ट्रांजेक्शन 100 गुना बढ़े।
- सामान्य मानवी की सुविधाओं की तरफ भी हमने उतना ही गंभीरता से काम किया।
- हर साल औसतन 15 गुना ज्यादा तेजी से हमने नल से जल कनेक्शन दिए।
- हर साल औसतन छह गुनी ज्यादा रफ्तार से लोगों को गैस कनेक्शन दिए।
- हर साल चार गुनी रफ्तार से गरीबों के लिए टॉयलेट बनाने का काम किया।
- हर साल तीन गुना ज्यादा तेजी से गरीबों को घर देने का काम किया।
- देश ने गवर्नेंस में भी बहुत बदलाव लाया।
- हजारों की संख्या में compliances खत्म किए।

पिछली शताब्दी के कानूनों से 21वीं शताब्दी की मार्च नहीं हो सकती। हमने आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए मेट्रो का विस्तार किया है, हमने पब्लिक ट्रांसपोर्ट को ताकत दी। जिस स्पीड से काम, जिस स्केल पर काम किया, यह रफ्तार, यह विस्तार, यह अचीवमेंट आजादी के बाद पहली बार, पिछले एक दशक ने देखा है। और जब इतनी सारी सिद्धियां हमारे सामने हों, इतनी तेज गति दिखाई देती हो, देशवासियों का सामर्थ्य पल-पल प्रबल होता है, तब तो 2047 में विकसित भारत बनने का संकल्प कभी भी अधूरा नहीं रह सकता है। यह सारे आंकड़े इस बात की गवाही देते हैं कि हम आगे बढ़ने वाले हैं।

लेकिन उसके लिए आत्मविश्वास की जरूरत होती है, आत्म गौरव की जरूरत होती है और साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत होना भी बहुत जरूरी होता है। और इसलिए बीते वर्षों में हमारा कनविक्शन रहा है कि भारत को हमें अब दूसरे देशों पर निर्भर रहकर के नहीं जीना चाहिए, हमें आत्मनिर्भर बनना चाहिए। दुनिया में बहुत कुछ मिलता है, सस्ता मिलता है, जल्दी मिल सकता है, लेकिन उससे हमारा सामर्थ्य तैयार नहीं होता है, ना हमारे सामर्थ्य की कसौटी होती है और इसलिए हमें भी अपनी क्षमताओं को बढ़ाना है, अपने हितों की सुरक्षा हमें खुद को करनी है, और इसलिए आत्मनिर्भर भारत का संकल्प बहुत दृढ़ता के साथ हम लेकर के आगे बढ़ रहे हैं। मेक इन इंडिया, स्वदेशी, वोकल फॉर लोकल, इन सारे क्षेत्रों में आज हर भारतीय का मन जुड़ रहा है।

देश आजाद होने के बाद विश्व में तो सेमीकंडक्टर की चर्चा हो चुकी थी। हमारे यहां भी बातें होती थी, लेकिन सेमीकंडक्टर का कोई बड़ा प्लान हम आगे नहीं बढ़ा पाए और आज स्थिति क्या है? आज की डिजिटल दुनिया में, आज की टेक्नोलॉजी में, चिप का महात्म्य हम समझते हैं। कोई भी इलेक्ट्रॉनिक गुड्स होगा, हमारे मेडिकल इक्विपमेंट होंगे, हमारे ट्रांसपोर्ट के रास्ते होंगे, हर किसी में चिप अनिवार्य है और इस चिप के बिना दुनिया थम जाए, ऐसी स्थिति पैदा हो चुकी है और इसलिए भारत ने आत्मनिर्भर होने की दिशा में अपना सेमीकंडक्टर प्लांट, बड़ा सेमीकंडक्टर प्लांट, तीन सेमीकंडक्टर प्लांट शुरू हो चुके हैं। और वहां जो प्रोडक्शन हो रहा है, वह एक्सपोर्ट होना भी शुरू हो चुका है और आने वाले सात-आठ वर्ष में और 5-7 या 8 सेमीकंडक्टर प्लांट बहुत ही जल्द शुरू होने वाले हैं। यह आत्मनिर्भर भारत हमें विकसित भारत की दिशा में जाने का महामार्ग देती है।

वैसी ही एक चर्चा क्रिटिकल मिनरल की हो रही है। पूरी टेक्नोलॉजी क्रिटिकल मिनरल पर निर्भर है। भारत इसमें भी अपने आप को सुरक्षित करने में जुटा हुआ है। क्रिटिकल मिनरल का लक्ष्य साझा किया जाए, नेशनल क्रिटिकल मिनरल्स यह हमने लॉन्च किया। बजट में क्रिटिकल मिनरल्स कॉरिडोर की हमने घोषणा की है, कई देशों के साथ एग्रीमेंट हो रहे हैं, विश्व के कई देश अब इस क्रिटिकल मिनरल्स की दिशा में भारत पर भरोसा करने लगे हैं।

जैसे सेमीकंडक्टर की बात हो, क्रिटिकल मिनरल की बात हो, वैसे ही जिस टेक्नोलॉजी की दिशा में हम जा रहे हैं, दुनिया जा रही है, उसमें एनर्जी का महत्व और बढ़ता चला जा रहा है। अब एनर्जी के बिना भी नई दुनिया को चलाना मुश्किल है और इसलिए हमें चिप हो, AI हो, डाटा सेंटर हो, हमें बहुत बड़ी मात्रा में बिजली की जरूरत होगी। एनर्जी सिक्योरिटी, यह हमारे समय की मांग है और इसलिए हमने पहले से ही उस दिशा में एक के बाद एक मजबूत कदम उठाए हैं। एनर्जी सिक्योरिटी का एक बड़ा माध्यम है, परमाणु ऊर्जा, न्यूक्लियर एनर्जी, हमने पार्लियामेंट में शांति एक्ट पास करके, एक नए लक्ष्य पर जाने का रास्ता तय कर लिया है। 2047 तक हम 100 गीगावॉट न्यूक्लियर पावर का लक्ष्य लेकर के चल रहे हैं। इसी एक दशक में हम पांच नए न्यूक्लियर रिएक्टर शुरू करने का लक्ष्य लेकर के चल रहे हैं। इस वर्ष भारत ने फास्ट ब्रीडर न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी में महारत हासिल करके एक अहम पड़ाव पार किया है और उसके कारण परमाणु ईंधन में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में हमें एक बहुत बड़ी सफलता मिली है।

कई बार संसाधनों की कमी के कारण देश रुकता नहीं है, लेकिन रुकने का कारण सोच की सीमाएं होती हैं। जब सोच बंध जाती है, सीमाओं में सड़ने लग जाती है, तब हम अपने सामर्थ्य को भी पहचान नहीं पाते हैं। देश को आज कच्चे तेल पर निर्भर रहना पड़ रहा है और हमारी गलत सोच के कारण। हमने समुद्री तट पर 99 प्रतिशत हमारा समुद्री तट का पूरा हिस्सा ऐसी सोच के कारण नो-गो एरिया घोषित करके रखा था, हमने ही समुद्र के अंदर जाकर के एक्सप्लोरेशन न करने का निर्णय

कर लिया था। यह सोच का दारिद्रय था, हमने फैसला किया, यह नहीं चल सकता। हमने उस 99 प्रतिशत को, जो कभी नो-गो एरिया हुआ करते थे, हमने उसको गो अहेड एरिया के रूप में खुला कर दिया है और अब हम समुद्र के भीतर भी एक्सप्लोरेशन करने की और नए-नए भंडार खोजने की दिशा में हम प्रवृत्त हैं, प्रयास कर रहे हैं। हमने पिछले वर्ष उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रखते हुए, समुद्र मंथन की घोषणा की थी और पिछले दिनों हमने 85000 करोड़ रुपए इस काम के लिए आवंटित करके काम को गति देने का निर्णय कर लिया है।

एनर्जी सिक्योरिटी, हमें अल्टरनेट स्रोतों की तरफ भी पूरी शक्ति लगाना बहुत जरूरी है और इसलिए ऊर्जा का सही इस्तेमाल बढ़ाते हुए भारत इसी दिशा में तेजी से काम कर रहा है। 2014 से पहले, हमारे देश में सिर्फ 70 शहरों में पाइप से गैस की व्यवस्था थी, पाइप से गैस डिस्ट्रीब्यूशन होता था। 12 साल में इन 70 शहरों को हमने 700 शहरों तक पहुंचा दिया है। यह होती है रफ्तार, यह होता है विस्तार। 2014 के पहले मुश्किल से 20-22 लाख घरों में पाइप से गैस पहुंचता था, आज पौने दो करोड़ घरों में पाइप से गैस पहुंचाने का काम हो रहा है। 12 वर्ष पहले देश में सोलर एनर्जी की कैपेसिटी सिर्फ 2 गीगावॉट थी, आज 160 गीगावॉट सोलर एनर्जी की कैपेसिटी का लक्ष्य हमने प्राप्त किया है।

हमने इसका लाभ देश के मध्यम वर्ग को, सामान्य परिवार को मिले, इस तरफ भी ध्यान केंद्रित किया है। हमने पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना चालू की और आज इतने कम समय में 50 लाख घरों का सोलर एनर्जी का काम, हम आंकड़ा पार कर चुके हैं, तेजी से चल रहा है और उसके कारण हजारों घरों का बिजली बिल जीरो हो गया है, हजारों घर अपनी बिजली का उपयोग करने से अतिरिक्त बिजली बेचकर के कमाई कर रहे हैं। इस काम के लिए 80000 रुपया सरकार की तरफ से एक-एक परिवार को मदद दी जा रही है, तब जाकर के हम इस काम को पूरा कर रहे हैं।

रेलवे इलेक्ट्रिफिकेशन का काम हमारे देश में 1925 में शुरू हुआ था। लेकिन 1925 से लेकर 2014 तक, 90 साल में सिर्फ 30 प्रतिशत रेल का इलेक्ट्रिफिकेशन हुआ था। हमने एक दशक के अंदर शत प्रतिशत काम पूरा कर दिया। एक तरफ 90 साल में 30 प्रतिशत, हमारे 10 साल में 70 प्रतिशत, यह

होता है काम। और इसके कारण डीजल, जो हमें बाहर से लाना पड़ता है, उसकी बचत हुई। बिजली से हमारी ट्रेनें चली, पर्यावरण को फायदा होने लगा।

हम यहां से नहीं रुके हैं। हम दुनिया के अंदर पीछे रहना नहीं चाहते, पिछले दिनों भारत ने ईंधन के नए क्षेत्र को भी छू लिया है। देश ने पहली हाइड्रोजन से चलने वाली ट्रेन शुरू कर दी है और ये सबसे लंबी ट्रेन है, सबसे ताकतवर ट्रेन है, दुनिया में हाइड्रोजन ट्रेन के क्षेत्र में भी भारत ने अपना झंडा गाड़ दिया है।

पिछले 10-12 साल से हम लगातार 2047 के लक्ष्य को पाने के लिए दौड़ रहे हैं। एक के बाद एक सोपान सिद्ध कर रहे हैं। हमने सोचा भी नहीं था कि हमें इसमें भी कुछ मुसीबतों को झेलना पड़ेगा। पिछले 10-12 वर्ष में कितने संकटों का सामना करना पड़ा। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी ने पूरी दुनिया को चिंता में डाल दिया था, सारी व्यवस्थाएं चरमरा गई थीं, कोरोना से बाहर निकले, युद्ध की विभीषिका की खबरें आने लगीं, कहीं यूक्रेन तो कहीं पश्चिम एशिया, हर जगह पर तनाव का माहौल और पता नहीं भविष्य वेत्ताओं ने तो न जाने क्या-क्या घोषणाएं कर दी थीं। देश को डराना, देश को भयभीत रखना, देश को चिंतित रखना, इसी में कुछ लोगों को आनंद आता है। वैक्सीन नहीं मिलेगी, कोविड में लोग बचेंगे नहीं, कुछ भी नहीं होने वाला। वेस्ट एशिया का क्राइसिस आया, पेट्रोल पंप पर पेट्रोल नहीं मिलेगा, गैस नहीं मिलेगा, डीजल नहीं मिलेगा, फर्टिलाइजर नहीं मिलेगा, सारी दुनिया भर की अफवाहें फैला करके, भारत के लोगों को भयभीत करने का, डराने का, चिंता के अंदर डुबो देने का, कुछ लोगों को आनंद आ रहा था। लेकिन देश ने देख लिया कि पिछले 10-12 साल की सुविचारित योजनाएं रंग ला रही हैं और हम इतने बड़े संकट के बावजूद भी नागरिक देवो भवः के मंत्र को लेकर के जीते हुए भारत ने जो तैयारियां की थी, एक के बाद एक कदम उठाया था, सोचा नहीं था कि यह संकट आएगा, लेकिन उस संकट के समय में यह सारी चीजें काम आ गईं और आज देश में गैस भी है, पेट्रोल भी है, यूरिया भी है। हम अपनी ताकत के ऊपर खड़े हो रहे हैं, चल रहे हैं।

दुनिया के इन संकटों का प्रभाव हर किसी पर हुआ, हम भी अछूते नहीं हैं। दुनिया में एक बोरी यूरिया का दाम 3000 रूपया पहुंच गया। पर आज भी हम देश के किसानों को वो बोझ सहने के लिए मजबूर नहीं कर रहे, सरकार अपने कंधों पर वो बोझ उठा रही है और दुनिया से जो 3000 रूपया में यूरिया का बोरा हमें मिलता है, वो हमारे किसानों को हम सिर्फ 300 रूपये में दे रहे हैं। इतना ही नहीं DAP, आज दुनिया में बाजार 5000 रूपये पहुँच चुका है, लेकिन मेरे देश के किसानों को दिक्कत ना हो, इसलिए 1350 रुपए में आज भी DAP देने का काम हम कर रहे हैं।

एक समय था, जब मैं आत्मनिर्भरता की बात कर रहा था, तो कुछ लोग एयर कंडीशन चैंबर में बैठकर सोचने वाले लोग हमें बता रहे थे- ग्लोबलाइजेशन का क्या होगा? लेकिन दुनिया देख रही है कि पिछले एक दशक में ऐसा लग रहा है कि दुनिया ने ग्लोबलाइजेशन बोलना ही बंद कर दिया है। जहां से ग्लोबलाइजेशन की आवाजें आती थी, वह बंद हो गई, सुनाई नहीं देती है। दुनिया का हर देश अपने-अपने सवालों के मिजाज की तरफ गया है, लेकिन दुर्भाग्य से इस संकट के कालखंड में कुछ लोगों ने अपना रुतबा दिखाने के लिए संसाधनों को वेपनाइज करने का खेल खेला है। दुनिया अपने पास जो कुछ भी है, उसको वेपनाइज करने में लगी है। संसाधनों का वेपनाइज, रिसोर्स का वेपनाइज, पेट्रोल, डीजल, फर्टिलाइजर, दवाइयां, टेक्नोलॉजी की चिप्स, इतना ही नहीं भू-भाग को भी वेपनाइज किया जा रहा है।

और ऐसे समय अगर हम आत्मनिर्भरता के मंत्र को लेकर 10 साल सही दिशा में न चले होते, तो हम कल्पना कर सकते हैं कि, तो ऐसी चुनौतियों का मजबूती से मुकाबला कैसे करते और हमारी तैयारियां निरंतर बढ़ती जा रही हैं।

दूसरी तरफ आज भारत का प्रोफाइल पूरी तरह बढ़ रहा है। आज भारत, दुनिया के लिए एक स्वीकृत और सम्माननीय देश के रूप में बन रहा है। भारत के पास स्थिर पॉलिटिकल मैंडेट है, स्थिर सरकार है, भारत का वाइब्रेंट लोकतंत्र है, भारत का मजबूत न्याय तंत्र है, हम सबको दिशा देने वाला भारत का संविधान है और अब दुनिया हमारे इस सामर्थ्य को पहचानने लगी है। इसलिए 2014 के बाद, दुनिया के करीब 40 देशों के साथ हमारा एफटीए एग्रीमेंट हो रहा है। आप देखिए, कितना बड़ा अवसर आया है, लेकिन मैं यह जो ट्रेड एग्रीमेंट्स हुए हैं, यह एक बहुत बड़ा अवसर है और इसलिए खास करके मैं मेरे MSMEs को कहना चाहूंगा कि हमें इस मौके को छोड़ना नहीं है। दुनिया में हमें पहुंचना है, भारत के उत्पाद की हर चीज विश्व के बाजार में पहुंचे और चाहे हमारा टेक्सटाइल हो, हमारी मशीनरी हो, दवाइयां हो, हमें मौका छोड़ना नहीं है, लेकिन जो वैश्विक पैरामीटर्स हैं, उन पैरामीटर्स को हमें पार करना होगा। हमें दुनिया से जो मिलता है, उससे अच्छा देना पड़ेगा। दुनिया में जो मिलता है, उससे सस्ता देना पड़ेगा। अब पंजाब के लुधियाना से लेकर के तमिलनाडु के तिरुपुर तक का हमारा टेक्सटाइल सेक्टर दुनिया में पहुंच सकता है। इतना ही नहीं, केरलम से लेकर के गुजरात और तमिलनाडु से लेकर के बंगाल, यह हमारा समुद्री तट, हमारे मछुआरे भाई-बहन आज इस एफटीए एग्रीमेंट के कारण हमारे श्रिंप यानी झींगा, उसके एक्सपोर्ट की बहुत संभावना बढ़ी है। हमारे सी फूड की दुनिया में पहुंच बनने की संभावना बढ़ी हुई है और इसलिए हमें इस स्थिति का फायदा उठाते हुए, हम आगे चलते हुए, हम इन कामों को पार करने के लिए प्रयास करें।

2047 का लक्ष्य मजबूत नींव पर खड़ा है। 2047 विकसित भारत का लक्ष्य हमने पिछले 10-12 साल में देशवासियों ने जो सामर्थ्य दिखाया है, उस सामर्थ्य का हिस्सा है।

सदी का एक चौथाई हिस्सा बीत चुका है, और अगला एक चौथाई हिस्सा हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अब हम रुक नहीं सकते हैं, हमारी गति नहीं रुक सकती है, हमारी दिशा तय हो चुकी है, हमें प्राप्त करके रहना है और इसके लिए हमें अपना वर्क कल्चर बदलना होगा, हमारे वर्क कल्चर को बदलते हुए हमें हमारी सोच को भी बदलना होगा, हमें हमारे काम की गति को भी बदलना होगा। जो काम पिछले 5-7 दशक में नहीं हुए हैं, वो काम हमें आने वाले 5-7 साल में करने हैं और मेरा भरोसा है, मेरे देश की युवा शक्ति पर, मेरे देश के नौजवानों पर, मेरे देश की माताओं-बहनों पर, मेरे देश के किसानों पर, मेरे देश के मजदूरों पर कि हम इस सपने को साकार कर सकते हैं। इसलिए हमें रिफॉर्म की गति को भी आगे बढ़ाना है। रिफॉर्म ना ही हमारे लिए कंपल्शन है, ना ही रिफॉर्म हमारे लिए मूलमंत्र है, हमारी यह रिफॉर्म यह कनविक्शन है, आउट आफ कनविक्शन। हम रिफॉर्म एक्सप्रेस पर चल पड़े हैं और हम आने वाले दिनों में भी नेक्स्ट लेवल रिफॉर्म की ओर बढ़ने वाले हैं और इसलिए सरकार, समाज, उद्योग, उत्पादक, किसान, हर किसी को अपनी ट्रेडिशनल व्यवस्थाओं में रिफॉर्म करना पड़ेगा, सोच में रिफॉर्म करना होगा, अपने लक्ष्यों को रिफॉर्म करना होगा।

हमें एक निश्चित दिशा को लेकर के चलना होगा। मैं आज उस युग को भी याद करना चाहूंगा, जब भारत देश का सामर्थ्य - सप्त सिंधु के रूप में हम जानते थे, हम समझते थे, हम सुनते थे। विकसित भारत बनाने के लिए हमें नई धारा चाहिए। आज लाल किले की प्राचीर से मैं देश के सामने शक्ति की इस सप्त धारा का आह्वान करता हूं। आने वाले 5-7 साल में, जो पिछले 5-7 दशक में नहीं हुआ, वो सप्त धारा के सामर्थ्य से, शक्ति से, हम देश को नई ऊंचाई, नई गति देंगे और नए लक्ष्यों को पार करने वाला सामर्थ्य देंगे। और इसके साथ-साथ देश की युवा शक्ति के सामर्थ्य का भरपूर उपयोग राष्ट्र निर्माण में होगा, उनकी शक्ति जोड़ी जाएगी।

आने वाले दिनों में जब मैं सप्त धारा की बात करता हूं,

सप्त धारा की पहली शक्ति है -
मैन्युफैक्चरिंग पावर

हमें मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को बहुत आगे बढ़ाना होगा और प्रोडक्शन बढ़ाने के साथ-साथ हमें छोटे-छोटे पुर्जे भी बनाने हैं और बड़े-बड़े प्रोडक्ट भी बनाने हैं। पूरा वैल्यू चैन हमारा होना चाहिए और उसे लेकर के चलना, हमें कंपोनेंट भी चाहिए और हमें कंप्लीट मैन्युफैक्चरिंग भी चाहिए, कंप्लीट प्रोडक्ट भी चाहिए। डिजाइन से लेकर मैन्युफैक्चरिंग तक भारत को ग्लोबल सप्लाई चैन का भरोसेमंद केंद्र बनना होगा। इसके लिए मैं तीन चीजों पर विशेष जोर देना चाहता हूं। मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में जो मेरे भाई-बहन हैं। इस समय का यह अवसर है, इस अवसर को जाने मत दें और इसके लिए हमें कास्ट, क्वालिटी और स्केल, इसके विषय में वैश्विक मानदंडों से खरा उतरना पड़ेगा। हमारी factories competitive हो, हमारे प्रोडक्ट्स यूजर फ्रेंडली हो, हमारा पैकेजिंग दुनिया के लोगों को लुभावने वाला हो, आकर्षित करने वाला हो। हमारा जीरो डिफेक्ट precision मैन्युफैक्चरिंग, यह हमारी पहचान बनना चाहिए। हर मैन्युफैक्चरर, हर एंटरप्रेन्योर, हर MSMEs से मैं कहना चाहता हूं, ग्लोबल मार्केट में हमारी पहचान विश्वसनीयता और गुणवत्ता के आधार पर होनी चाहिए। क्वालिटी के संबंध में नो कॉम्प्रोमाइज और इसलिए हमारा मंत्र क्वालिटी, क्वालिटी, क्वालिटी होना चाहिए। यही हमारा ग्लोबल ब्रांड वैल्यू बनेगा।

सप्त धारा की दूसरी शक्ति है-
कृषि और फूड प्रोडक्शन

फूड प्रोसेसिंग, हमें इस दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे किसानों के लिए अब दुनिया के बाजार खुल चुके हैं, एफटीए एग्रीमेंट के कारण हमें एक बहुत बड़ा मार्केट मिल रहा है, हमें वहां पहुंचना है, हमें उस जगह को हाथ लगाना है, हमें खेत से लेकर के एक्सपोर्ट मार्केट की ओर जाना होगा। हमारे पारंपरिक खान-पान हो, हमारे मिलेटस हों, हमारे मसाले हों, हमारे फल हों, फूल हों, क्या कुछ नहीं है हमारे पास। वह ग्लोबल ब्रांड्स बनने चाहिए, हमारे किसान केमिकल फ्री खेती को बल देंगे, दुनिया में इनकी मांग और बढ़ने वाली है और जो ग्लोबल parameters के अंदर हर प्रकार से सिद्ध होने वाले हमारे एग्रो प्रोडक्ट होंगे, तो उस दुनिया में हम आसानी से पहुंच पाएंगे।

सप्तधारा की तीसरी शक्ति है-
टेक्नोलॉजी और इनोवेशन

आज जमाना AI का है, क्वांटम का है, स्पेस का है, रोबोटिक्स का है, डाटा सेंटर्स का है, पूरी तरह एक नया क्षेत्र खुल चुका है। और इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज, यह भी हर पल हमें चुनौती दे रही हैं और इसलिए देश को दुनिया

के लिए मार्केट नहीं बना देना, हमें इनोवेशन का हब बनना है। हमने यूपीआई और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर में लोहा मनवा लिया है, हमारी ताकत का परिचय करवा दिया है। अब भारत को डिजिटल पब्लिक टेक्नोलॉजीज, उसको भी दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाना है। भारत को नेक्स्ट जनरेशन कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी में लीड करना है। मेड इन इंडिया 6G हर कोने में पहुंचे यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए और हमें इसमें तेजी करनी चाहिए और इसके लिए हमारा प्रयास कम नहीं होना चाहिए।

सप्त धारा की चौथी शक्ति है-

गति शक्ति

यह गति शक्ति, देश के अंदर सीमलेस फास्ट कनेक्टिविटी पर हमें बल देना होगा। शहरों को हाई स्पीड रेल से हमें जोड़ना होगा। मॉडर्न हाईवेज चाहिए, इनलैंड वाटरवेज चाहिए, एयरपोर्ट्स चाहिए, multimodel लॉजिस्टिक्स की व्यवस्था चाहिए। हमें पोर्ट्स को सिर्फ सामान उतारने चढ़ाने की जगह नहीं, दुनिया के शिप्स आकर के लंगर हो जाए इतना नहीं, हमें हमारे पोर्ट्स को पोर्ट लेड डेवलपमेंट ग्रोथ की दिशा में हमें आगे बढ़ना होगा।

सप्त धारा की पांचवी शक्ति है-

रक्षा शक्ति

और यह रक्षा शक्ति का महत्व हर प्रकार से है। डिफेंस में आत्मनिर्भर होना, अब भारत ने अनुभव कर लिया है, दुनिया ने अनुभव कर लिया है, इसके बिना कोई चारा नहीं है। विश्व जब अपनी-अपनी ही सोच रहा है, तब भारत विश्व के लिए बाजार बनकर के नहीं रह सकता है। हमें डिफेंस के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना होगा। नेक्स्ट जनरेशन डिफेंस टेक्नोलॉजी डेवलप करके हमें ग्लोबल सप्लायर बनने की दिशा में लक्ष्य लेकर के चलना है। हमें ड्रोन, काउंटर ड्रोन सिस्टम को विकसित करना होगा और हायपरसोनिक डिफेंस टेक्नोलॉजीज, उस पर हमें लीडरशिप लेनी होगी।

साइबर सुरक्षा भी आज हर घर के लिए एक समस्या बन रही है। वह भी एक रक्षा का क्षेत्र है, जिसमें हमारे युवाओं के जो सामर्थ्य है, उस सामर्थ्य का उपयोग हम देश के और दुनिया के लिए कर सकते हैं।

सप्त धारा की छठी शक्ति है-

ग्रीन इकोनॉमी, ब्लू इकोनामी

जो ग्रीन जॉब्स को भी जन्म देती है। हमें ग्रीन हाइड्रोजन, रिन्यूएबल एनर्जी, एनर्जी स्टोरेज, ग्रीन मोबिलिटी, ग्रीन मैन्युफैक्चरिंग इन ग्लोबल स्केल, हमें पाकर के रहना है। हमें दुनिया में, दुनिया जब ग्लोबल वार्मिंग की चर्चा करते रहती है, हम रास्ते खोजते रहते हैं, हम समस्याओं का समाधान दे रहे हैं और भारत यह ग्रीन मूवमेंट का बहुत बड़ा सामर्थ्य लेकर के चला है। भारत के पास ब्लू इकोनॉमी के लिए भी बहुत बड़ा अवसर है, बहुत बड़ा लंबा हमारा कोस्ट लाइन है, फिशरीज हैं, कोस्टल टूरिज्म है, ओसियन टेक्नोलॉजी है, ऐसे कितने ही क्षेत्र हैं, जिसमें हम आगे बढ़ सकते हैं।

सप्त धारा की सातवी शक्ति है-

भारत का सॉफ्ट पावर

भारत के सॉफ्ट पावर की ताकत है। आज योग ने पूरी दुनिया को भारत के साथ जोड़कर रखा हुआ है। योग दुनिया के लिए एक ऊर्जा बनता जा रहा है। भारत के लिए विश्वास का बड़ा कारण बनता जा रहा है। जिस भारत के पास आस्था के केंद्र हो, जिस भारत के पास आयुर्वेद हो, जिस प्रकार से भारत के पास होलिस्टिक हेल्थ केयर की व्यवस्था हो, हील इन इंडिया का मूवमेंट हो, हम दुनिया के अंदर हमारे सामर्थ्य को लेकर के जा सकते हैं। हैंडीक्राफ्ट हो, संस्कृति हो, हमारी फिल्में हो, हमारा क्रिएटिव वर्ल्ड हो, वीएफएक्स हो, हमारा एनीमेशन हो, हमारे गेमिंग हो, डिजिटल कंटेंट हो, क्रिएटिव वर्ल्ड के अंदर भारत अपना रुतबा दिखा सकता है। हमने उसको एक वैश्विक सामर्थ्य के रूप में विकसित करना होगा। आज भारत ने WAVES समिट को एक बहुत बड़ी ताकत दी है। दुनिया धीरे-धीरे भारत का यह जो वर्ल्ड ऑडियो विजुअल एंड एंटरटेनमेंट समिट है, उसकी राह देखता रहता है और वह भारत के सॉफ्ट पावर को, भारत के क्रिएटिव दुनिया को दुनिया से परिचित कराएगा।

भारत के पास विशाल वन्य संपदाएं हैं। हमारे पास 100 से ज्यादा नेशनल पार्क हैं। क्षमता बहुत है, लेकिन विदेशी टूरिस्टों को आकर्षित करने में हम कम पड़े हैं। हमें मौका है हमारे सॉफ्ट पावर के माध्यम से दुनिया के टूरिस्टों को भारत के लिए आकर्षित करने का, हमारा सामर्थ्य हमें दुनिया को दिखाना है। हम यह काम करें और जल्द से जल्द। आज दुनिया में स्पोर्ट्स जो है, वो भी एक बहुत बड़ा भारत के प्रति आकर्षण का केंद्र, दुनिया के स्पोर्ट्स इवेंट भारत में क्यों ना हो। कॉन्सर्ट इकॉनामी बहुत बढ़ रही है, देश के नौजवानों का आकर्षण है। विश्व का हर कोई कलाकार चाहता है, कभी न कभी भारत की धरती पर अपना कॉन्सर्ट करे। यह बहुत बड़ा अवसर है, हमें इसको मोबिलाइज करने के लिए व्यवस्थाएं खड़ी करनी होंगी।

सप्तधारा की सात शक्तियां, सप्त शक्तियां।

उद्देश्य सिर्फ एक सेक्टर में प्रगति करने का नहीं है। एक होलिस्टिक एप्रोच के साथ हमें राष्ट्र को जो लक्ष्य लेकर के हम चल रहे हैं, जो एंबिशन लेकर के चल रहे हैं, उस स्केल को हमें पार करने की दिशा में काम करना है।

देश यानी सिर्फ सरकार नहीं होती है, देश यानी हर नागरिक जुड़ता है। क्या हम सोच नहीं सकते कि Fortune 500 की चर्चा तो बहुत सुनते हैं। आने वाले एक दशक में इन Fortune 500 में 50 कंपनियां भारत की क्यों ना हो, यह लक्ष्य हमारा क्यों ना होना चाहिए। आज बैंकिंग सेक्टर फल फूल रहा है। दुनिया की टॉप बैंक के अंदर भारत की बैंक का झंडा भी क्यों ना फहरता हो। भारत की बैंक भी टॉप बैंक, टॉप पांच बैंक में भारत की भी एक बैंक होनी चाहिए। भारत की फार्मा, दुनिया की पांच बड़ी फार्मा कंपनियों में भारत की भी एक-दो फार्मा कंपनियों का नाम गूंजना चाहिए। भारत का उसमें अपना स्थान बनना चाहिए। लॉ फर्म्स होते हैं, रेटिंग एजेंसीज होती हैं। क्या समय की मांग नहीं है कि ग्लोबल लीडरशिप अब हमारे हाथ में होनी चाहिए। टैलेंट है, सामर्थ्य है, हमारा लंबा इतिहास भी है, भाषाओं पर हमारा प्रभुत्व है। हमें विश्व में पहुंचना चाहिए। हमारी कोई कंसल्टिंग फर्म, अकाउंटिंग फर्म, दुनिया के टॉप फर्म्स के अंदर क्यों नहीं होनी चाहिए। भारत की टेक्नोलॉजी कंपनियां दुनिया के अंदर सिरमौर हो, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हमारे ऐसे ब्रांड हो, जिससे दुनिया आकर्षित होती हो। हमारे ब्रांड हमारे देश की पहचान हो और विश्व के लिए एक डेस्टिनेशन बन जाए, उस दिशा में हमें काम करना है।

हमें हमारे रिफॉर्म की गति बढ़ानी होगी। हमें 2047 के लक्ष्य के अनुरूप हमारी व्यवस्थाओं को विकसित करना होगा। हम बीते हुए काल के नीति नियमों से नहीं चल सकते। हमें आने

वाले सपनों के हिसाब से नीति नियमों को गढ़ना होगा और इसको अगर हम गढ़ेंगे, तो इसी रास्ते मेहनत में कोई कमी ना रखते हुए हम विकसित भारत का सपना पार करके रहेंगे। हम सबको मिलकर के चलना है। केंद्र सरकार हो, राज्य सरकार हो, इंडस्ट्री हो, हम सब ने मिलकर के आगे बढ़ना है। हमें रिफॉर्म्स करते रहना है। रिफॉर्म्स को आगे बढ़ाते रहना है।

रिफॉर्म कंपलशन से नहीं, कन्विक्शन से कर रहे हैं। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कर रहे हैं।

जब मैं विकसित भारत की बात कर रहा हूं, देश को तेज गति से आगे बढ़ाने की बात कर रहा हूं, उसका सबसे बड़ा लाभार्थी कौन है, इन सारे प्रयासों का सबसे बड़ा साधक कौन है, अगर साधक है तो मेरे देश का युवा है, मेरे देश की युवा शक्ति है। विकसित भारत की यात्रा में युवाओं की बहुत बड़ी भूमिका है। इतना ही नहीं, विकसित भारत का सबसे बड़ा लाभार्थी भी मेरे देश का युवा है और इसलिए हमें विकसित भारत के लक्ष्य को युवाओं के साथ जोड़कर के आगे बढ़ाना है। युवाओं, हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ हमें आगे बढ़ना है।

पिछले 10-12 साल में इस दिशा में बहुत कुछ हुआ है। स्टार्टअप इंडिया अभियान आज पूरे देश में ढाई लाख से ज्यादा registered स्टार्टअप्स बन गए हैं। देश के नौजवान, खुद तो काम कर रहे हैं, अनेकों को रोजगार दे रहे हैं। 1 लाख करोड़ रुपया, इनोवेशन फंड भारत सरकार ने घोषित किया है। मैं देश के नौजवानों को कहना चाहता हूं, आप अपने सपनों को लेकर के आइए, संसाधनों की कमी नहीं रहने देंगे। 1 लाख करोड़ रुपया, आपके दिल दिमाग को सामर्थ्य देने का एक व्यवस्था हमने कर दी है। रिसर्च के नए अवसर मिले, डिजिटल इंडिया के नए सस्ते डाटा, यह युवाओं को सशक्त किया है। दुनिया में सस्ता डाटा कहीं है, तो भारत की धरती पर है और देश के नौजवानों को उसने नई ताकत दी है। स्किल इंडिया हमने नेशनल प्रोग्राम बनाया है। स्पेस सेक्टर को हमने ओपन कर दिया। नेशनल ड्रोन पॉलिसी हमने बनाई है। खेलो इंडिया पॉलिसी बनाई है। 35 वर्षों तक एजुकेशन पॉलिसी नहीं थी, नई एजुकेशन पॉलिसी लेकर के आए हैं और इसका फायदा मिडिल क्लास के परिवारों को हुआ है।

2004 से 2014, हमारे देश में 350 से भी कम यूनिवर्सिटीज थी और आज 10-12 साल के भीतर-भीतर, करीब 650 नई यूनिवर्सिटीज जुड़ चुकी है। करीब 1000 का आंकड़ा हम पहुंच रहे हैं। 2014 के पहले मेडिकल के सिर्फ 400 कॉलेज हुआ करते थी, आज 2026 में करीब-करीब 850 मेडिकल कॉलेज हो रहे हैं। इतना ही नहीं, अब विदेशी यूनिवर्सिटीज भी भारत की धरती पर आ रही है। भारत के अंदर विदेशी यूनिवर्सिटी की डिग्री मेरे नौजवान को मिले इसका प्रबंध भी हो चुका है। हमारे देश के युवा मन बचपन से ही टेक्नोलॉजी की तरफ आकर्षित हो, उस दिशा में हम काम कर रहे हैं और इसलिए हमने करीब 10,000 से अधिक अटल टिंकरिंग लैब छोटे-छोटे बच्चों के हवाले कर दी है, ताकि उनका इनोवेशन और टेक्नोलॉजी के अंदर उनका मन बने। हमने अनेक रास्ते खोले, हमने स्टार्टअप ओपन कर दिया। भारत के प्राइवेट स्टार्टअप 28 साल के एवरेज उम्र के बच्चों ने, नौजवानों ने, दुनिया में पहला, पहले ही ट्रायल में अपना सेटेलाइट लॉन्च कर दिया और रॉकेट लॉन्च कर दिया उन्होंने, बहुत बड़ा काम कर दिया।

आज करीब ढाई लाख से ज्यादा रजिस्टर्ड स्टार्टअप हैं। एआई का विस्तार बहुत तेजी से बढ़ रहा है। आने वाले एक वर्ष में 1 करोड़ युवाओं को एआई स्किल के लिए ट्रेनिंग देने का हम काम करेंगे ताकि हमारा देश का नौजवान एआई की दुनिया में भी नेतृत्व करने का सामर्थ्य हो।

बायोइकोनॉमी एक नया क्षेत्र है। एक समय था 2014 के पहले, सिर्फ 60,000 करोड़ रुपये का बायोइकोनॉमी का काम होता था। बायोइकोनॉमी में देश की युवा शक्ति ने सामर्थ्य दिखाया। 2014 के पहले बायोइकोनॉमी का कारोबार जो 60 हजार करोड़ का था, आज वो बायोइकोनॉमी का कारोबार 20 लाख करोड़ पहुंच चुका है। 2009-2010 का कालखंड था, सिर्फ डेढ़ लाख इलेक्ट्रिक व्हीकल बिके थे, इस 2025-2026 में 25 लाख इलेक्ट्रिक व्हीकल बिके हैं।

एविएशन सेक्टर भी मेरे नौजवानों के लिए बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। नए एयरपोर्ट, नए रूट, नए-नए रोजगार के अवसर बना रहे हैं। मेंटेनेंस, ओवरहालिंग, इसके भी कारण देश में बहुत बड़ी मात्रा में skilled मैन पावर को काम मिल रहा है। मेड इन इंडिया हवाई जहाज बनाने की दिशा में हमने सफलता पाई है। मेड इन इंडिया डिफेंस ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट C295 ऑलरेडी अपनी सफल उड़ान भर चुका है। देश के नौजवानों के लिए, ड्रोन ने भी बहुत बड़ा काम किया है। गांव में ड्रोन से स्वामित्व योजना सफल हो रही है। करीब सवा तीन करोड़ परिवारों को स्वामित्व योजना का लाभ मिला है और इसके कारण 140 लाख करोड़ रुपये जैसी संपत्ति अनलॉक हुई है, जिसके कारण बैंक से लोन मिल सकता है, लोग अपना कारोबार कर सकते हैं।

कोचिंग क्लासिस की स्पर्धा हमारे मध्यम वर्गीय परिवारों के सामने एक बहुत बड़ा बोझ बन चुका है, हर मां-बाप को लग रहा है कि कोचिंग क्लास में बच्चे को नहीं भेजा, तो हम प्रतिष्ठित परिवार नहीं हैं। इन गरीब और मिडिल क्लास परिवारों की हम चिंता करते हुए हजारों-करोड़ रुपए का उनका खर्च है, वो भी बचे, बेटे भी अपने आस पास रह सके, उनकी देखभाल हो सके, परिवार पर आर्थिक बोझ न आए और इसलिए हमने युवाओं के लिए विभिन्न परीक्षाओं की फ्री ऑनलाइन कोचिंग हमने करने का निर्णय किया है, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर है हमारे पास, उत्तम टैलेंट है, टीचर्स हैं, उन संसाधनों को जोड़ करके हम देश के नौजवानों को फ्री कोचिंग देने का एक पूरा नेटवर्क हम खड़ा करने वाले हैं।

आज भारत खेल की दुनिया में अपनी जगह बना रहा है। अब खेल के पोडियम में भारत का राष्ट्रीय गीत सुनाई देता है, भारत का राष्ट्रगान सुनाई देता है, भारत का तिरंगा झंडा लहराता नजर आ रहा है। टॉप्स योजना ने बहुत बड़ी सफलता पाई है। खेलो इंडिया गेम्स, यूनिवर्सिटी गेम्स, विंटर गेम्स, बीच गेम्स, स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर, स्पोर्ट्स के लिए कोचिंग, स्पोर्ट्स मेडिसिन, स्पोर्ट्स के लिए न्यूट्रिशन, इन सारे विषयों में भारत अब महारत हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। नौजवानों के लिए पूरा नया क्षेत्र खिलाड़ी ना बन सके, तो उसकी सपोर्ट सिस्टम में भी बहुत बड़ा क्षेत्र खुल रहा है। स्पोर्ट्स की दुनिया में भारत का प्रदर्शन बेहतर होता जा रहा है और हम 2036 में ओलंपिक के मजबूत दावेदार बनकर के आगे बढ़ रहे हैं, और 2030 में कॉमनवेल्थ गेम्स को भारत अब होस्ट करने वाला है।

दुनिया में जो ओलंपिक के खेल होते हैं, करीब 40 प्रकार के गेम होते हैं और करीब 325-350 स्पर्धाएं होती हैं ओलंपिक में और आपको जानकर के दुख होगा 325 स्पर्धाओं में भारत दो तिहाई खेलों में कहीं होता ही नहीं

है। हमारी मौजूदगी नहीं होती, हम क्वालीफाई नहीं होते हैं, हमने तय किया है कि 2036 में जो ओलंपिक होगा, हम चाहते हैं कि वो भारत में हो, लेकिन 2036 में जिन विधाओं में आज भारत खेलता नहीं है, जिन विधाओं में भारत क्वालीफाई नहीं करता है, जिन स्पर्धाओं में भारत ने छोड़ के रखा है, तीन चौथाई हिस्सा हमारा इंतजार कर रहा है, भारत उस पर बल देगा और इसके लिए हम टैलेंट हंट का एक अभियान भी चलाना चाहते हैं। हमें अगर 2036 के लिए खिलाड़ी चाहिए, तो आज जो 5 साल, 10 साल, 15 साल की उम्र के नौजवान हैं, उन पर ध्यान देना होगा। और इसलिए 5 साल से 15 साल उम्र के बच्चों में खेल प्रतिभा ढूंढने के लिए गांव-गांव, शहर-शहर, स्कूल-स्कूल टैलेंट हंट का अभियान चलाया जाएगा, बच्चों की प्रतिभा को देखा जाएगा और फिर उनको स्पेशल ट्रेनिंग देकर के देश के लिए खेलने वाले अच्छे खिलाड़ी बनाए जाएंगे।

देश के सामने, नौजवानों के सामने, नशा एक बहुत बड़ा संकट बनता जा रहा है। नशा मुक्त भारत, यह हम सबका सामूहिक दायित्व होना चाहिए। हमारे उज्ज्वल भविष्य के लिए युवा पीढ़ी मजबूत हो, युवा सामर्थ्य देश के लिए काम आए, इसलिए नशा मुक्त भारत, पिछले दिनों माय भारत के वालंटियर्स ने, देश के एनजीओस ने, देश के सामाजिक सांस्कृतिक संगठनों ने, देश के आध्यात्मिक पुरुषों ने मिलकर के नशा मुक्त भारत का 100 सप्ताह का एक कार्यक्रम तय किया है। 100 सप्ताह तक एक अभियान चलने वाला है। हर परिवार इस अभियान का हिस्सा बने, नशा मुक्त भारत के सपने को पूरा करने के लिए आगे आइए।

21वीं सदी में दशकों पुरानी जो चुनौतियां है, उन चुनौतियों को खत्म करना बहुत अनिवार्य है। नक्सलवाद, माओवाद ने लाखों युवाओं के भविष्य को तबाह कर दिया। अनेक माताओं के नौजवानों को छीन लिया, बर्बाद कर दिया, हर मां-बाप के सपनों को चूर-चूर कर दिया। इस नक्सलवाद ने चार-चार दशक तक हिंदुस्तान के बहुत बड़े हिस्से को, बहुत बड़ी आबादी को दबोच करके रखा था, बंदूक के नोक पर दबोच करके रखा था, संविधान की धज्जियां उड़ा दी थीं और देश के सामान्य नागरिकों की रक्षा में 3500 से ज्यादा पुलिस के सुरक्षा बल के जवान शहीद हो गए। युद्ध के अंदर जितने सैनिक मरते हैं, उससे ज्यादा पुलिस जवानों को जान की बाजी लगानी पड़ी, ताकि देश के सामान्य मानवी को सुरक्षा मिले। इस नक्सलवाद ने धरती को लहूलुहान कर दिया था। 2014 में जब हमें मौका दिया, उसी दिन हमने संकल्प लिया था कि हम देश को नक्सलवाद से मुक्त करेंगे और आज नक्सली माओवादी हिंसा आखिरी सांस भी शायद रहने की अब तो ताकत नहीं रही है, पूरी तरह उसे खत्म करने की दिशा में, जहां पर कभी नक्सलवादियों की गोलियां चलती थी, जहां पर कभी धरती रक्त रंजित रहा करती थी, आज उसी नक्सल क्षेत्रों में, उसी इलाकों में, नक्सल मुक्त होने के कारण विकास, विश्वास और प्रयास का तिरंगा लहरा रहा है।

लेकिन इस चुनौती को हमने कम नहीं आंकना है। इस चुनौती से हमें और भी सावधान रहने की जरूरत है। वर्षों तक देश की सत्ता में माओवादी सोच के लोग गलियारों में अपनी जगह बनाकर के बैठे थे। सरकारी कमेटियों में सलाहकार के रूप में भी ये माओवादी सोच ने नीतियों को प्रभावित किया था।

जंगलों में हमें हथियारी नक्सलों का खात्मा बुलाने में उस संकट से देश को मुक्त कराने में सफलता मिली है। लेकिन हथियारी नक्सल तो गए, लेकिन दिमागी नक्सल मौके की तलाश में है। हिंसा अराजकता के वो रास्ते खोज रहे हैं। समाज को गलत राह पर घसीटने के लिए भांति-भांति के दांव कर रहे हैं। इन दिमागी नक्सलियों को पहचानना होगा। इन दिमागी नक्सलियों को आइसोलेट करना होगा और राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाने की मुख्यधारा की ओर देश की युवा पीढ़ी को जोड़ना होगा।

सुरक्षित भारत बनाना हम सबका दायित्व है। चुनौती सीमा के भीतर हो या सरहद से बाहर, भारत हर परिस्थिति के लिए तैयार है। आज युद्ध का नेचर बदल रहा है। अब युद्ध सीमा पर ही होता है यह गारंटी नहीं है। आज युद्ध सीमा के अंदर कहीं रिफाइनरी में जा करके, कहीं बैंकिंग सेक्टर में जा करके, कहीं डाटा सेंटर में जा करके,एक प्रकार से लड़ाई का नया रूप- इंफ्रास्ट्रक्चर तोड़े जा रहे हैं, फैक्ट्रियां तोड़ी जा रही हैं। हमने मिशन सुदर्शन चक्र की पिछले सालों घोषणा की थी। बहुत तेजी से उस पर काम चल रहा है। आज डिफेंस एक्सपोर्ट हमारा करीब 50 गुना बढ़ा है। करीब 100 देशों में हमारे अस्त्र-शस्त्र पहुंच रहे हैं। वैश्विक पटल पर भारत की प्रतिष्ठा धीरे-धीरे बढ़ रही है। बदलते हुए समय में अस्त्र-शस्त्र की तरफ काम करना है, सैन्य बलों का सामर्थ्य बढ़ाना है। लेकिन साथ-साथ नागरिकों को भी तैयार करना होगा। पिछली शताब्दी के युद्धों के अनुरूप जो सिविल डिफेंस की व्यवस्थाएं हमारे देश में विकसित हुई है, वो कालबाह्य हो चुकी है और इसलिए आने वाले दिनों में हम सिविल डिफेंस का एक वाइब्रेंट नेटवर्क खड़ा करेंगे। आधुनिक व्यवस्थाओं से उनको परिचित कराएंगे। आधुनिक संकटों

से नागरिकों को रक्षा करने की क्या व्यवस्था हो सकती है, एक बहुत बड़ा वॉलंटरी फोर्स सिविल डिफेंस का आधुनिक चुनौतियों को पार करने वाला हम बनाने वाले हैं।

राष्ट्र के निर्माण में आज हमारी बहनों-बेटियों का योगदान हम सबके लिए बहुत बड़ा प्रेरणा का कारण बना हुआ है। फाइटर जेट हो या सिविल एविएशन, हमारी बेटियां सबसे आगे दिखाई दे रही हैं। खेल कूद का मैदान हो, हमारी बेटियां आगे दिखाई दे रहीं हैं। स्टेम एजुकेशन में भर्ती होने की प्रक्रिया हो सबसे ज्यादा हमारी बेटियां आगे दिख रही हैं। आज सेना में भी एनडीए से जो बेटियां निकली हैं वो बड़े रौब के साथ सेना का नेतृत्व करने का सामर्थ्य दिखाने लगी हैं। मेरी बेटियों की ताकत कैसी है, मैं पिछले दिनों सानंद में एक सेमीकंडक्टर प्लांट में गया था, वहां आदिवासी बेटियां देश के अलग-अलग कोने से आई हुई बेटियां काम कर रही थी। वो उस गांव से आई थी जिन्होंने पासपोर्ट क्या होता है पता तक नहीं था। वो बेटियां विदेशों में गईं, ट्रेनिंग लेकर के आईं और आज चिप निर्माण का काम कर रही हैं और बड़े कॉन्फिडेंस के साथ, मैंने जो उनका कॉन्फिडेंस देखा, मैं सचमुच में बहुत प्रभावित हुआ था। आज तीन 3 करोड़ बहनों को हमने लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य तय किया था, उसको पार कर लिया। अब हम 6 करोड़ लखपति दीदी बनाने के लक्ष्य को लेकर के आगे बढ़ रहे हैं। 3 करोड़ नई लखपति दीदी बनना मतलब ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा बदलाव मातृशक्ति के द्वारा आने वाला है।

आज पंचायतों में, नगर पालिका में, महानगर पालिका में, बहुत बड़ी मात्रा में हमारी महिलाएं जनप्रतिनिधि बनकर के देश का मार्गदर्शन कर रही हैं, समस्याओं का समाधान कर रही हैं, बहुत ही सक्षम नेतृत्व दे रही हैं और इसी को ध्यान में रखते हुए हमने पार्लियामेंट में नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित किया था। लेकिन किसी न किसी कारण से राजनीति के अखाड़े में पिछले 40 साल से यह सपना हमेशा राजनीतिक अखाड़े का शिकार हो गया है। मैं देश के सभी राजनीतिक दलों से आज लाल किले की प्राचीर से तिरंगे झंडे की छाया में खड़े होकर के प्रार्थना करता हूं, आग्रह करता हूं। आइए, उन महिलाओं के सामर्थ्य के पुजारी बनिए। उन महिलाओं के सम्मान में आगे आइए और जल्द से जल्द हमारी माताओं-बहनों को 33 प्रतिशत विधानसभा और लोकसभा में उनको प्रतिनिधित्व मिले, वह भारत की नीति गढ़ करके अंदर अपना योगदान दें। समय की मांग है और मैं सभी राजनीतिक दलों से फिर से आग्रह करता हूं, आइए महिला आरक्षण लागू करके महिला सम्मान में आप भी जुड़िए, आप भी यश लीजिए, आप भी क्रेडिट लीजिए, लेकिन मेरी माताओं-बहनों को हक दीजिए।

विकसित भारत का संकल्प तभी पूरा होगा, जब विकास अंतिम व्यक्ति तक पहुंचेगा। 2014 से पहले सिर्फ 25 करोड़ लोगों के पास सोशल सिक्योरिटी का कवर था।

पिछले 5-7 दशक में सिर्फ 25 करोड़, हमने एक दशक के भीतर-भीतर 100 करोड़ देशवासियों को सोशल सिक्योरिटी का कवच दिया है। आयुष्मान भारत योजना से 70 साल की उम्र के बुजुर्गों से भी आज 5 लाख रुपये तक मुफ्त दवाई की व्यवस्था हो रही है। करोड़ों-करोड़ों परिवारों को इसके कारण बहुत बड़ी सुविधा मिली है और इस आयुष्मान कार्ड के कारण 2 लाख करोड़ रुपया जो दवाई और ऑपरेशन के पीछे खर्च होना था, वो मेरे परिवारों के बचे हैं, वो गरीब परिवार हैं, वो मध्यम वर्ग के परिवार हैं, उनको इतनी बड़ी मदद मिली है!

आज मुझे एक काम के लिए आपकी मदद चाहिए। मैं आप सबसे एक मदद मांग रहा हूं। सभी नौजवानों से मैं चाहता हूं कि आप इसका नेतृत्व करिए। आपका एक या दो घंटे देश को बहुत बड़ी शक्ति देने वाले हैं। आपको लगेगा एक दो घंटे में मैं देश की क्या शक्ति, मैं बताता हूं। आप बहुत बड़ी शक्ति बनने वाले हैं और इसलिए हर घर में वातावरण बने। इन दिनों देश में जनगणना का काम हो रहा है। Census का काम हो रहा है, गिनती चल रही है और गिनती सिर्फ आंकड़ों से बात बनती नहीं है। उसकी बारिकियों से नीतियां बनती हैं, योजनाएं बनती हैं, देश आगे बढ़ने की अपनी रूपरेखा तैयार करता है और इसलिए सटीक जानकारियां होना बहुत जरूरी है। कभी-कभी जो सरकार की तरफ से प्रतिनिधि आते हैं, वो इतनी जल्दी में होते हैं, कभी स्पेलिंग एक लिख देते हैं, कभी अलग लिख देते हैं और इसके कारण अल्टीमेटली परिणाम हमें सही मिलने में दिक्कतें आती है। अब जब टेक्नोलॉजी अवेलेबल है और इस बार निर्णय किया है आप स्वयं भी जनगणना में अपनी जानकारियां अपने मोबाइल फोन से भरकर के दे सकते हैं। बाद में कोई बाबू आएंगे, कोई प्रतिनिधि आएंगे, आपसे चर्चा करेंगे, लेकिन आप परिवार के सब बैठकर के अगर डिजिटली अपना रजिस्ट्री करवा दें, सारी बारीकियां स्पेलिंग में भी गलती ना हो, कोई भी जानकारियों में गलती ना हो, आप जितनी परफेक्ट जानकारी देंगे, देश को आगे बढ़ने में बहुत बड़ी मदद मिलेगी और इसलिए मैं देश के नौजवानों को कहता हूं कि आप अपने परिवार के लोगों को बिठा करके पूरे फॉर्म को समझिए। पहले कागज पर फॉर्म को भर दीजिए, कोई गलती है, तो करेक्ट कर लीजिए और फिर टेक्नोलॉजिकली उसको डिजिटली, इसको अपलोड कर दीजिए। आप देखिए, इतना बड़ा काम देश कर लेगा और देश का समय और शक्ति सही काम के लिए उपयोग आएगा और इसलिए मेरे देश के नौजवानों को जनगणना के इस काम में सक्रियता से जुड़ने के लिए मैं आग्रह करता हूं।

मैंने लाल किले से पंचप्रण की बात कही थी। इस पंच प्रण ने देश को अपने आत्म गौरव की ओर लेकर के आगे बढ़ने का, लक्ष्यों को पार करने के सामर्थ्य के साथ आगे बढ़ने का एक बहुत बड़ा संबल दिया है। हमें गुलामी की मानसिकता हर पल मिटाते ही रहना है। जिस भारत का सपना नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने देखा था, बाबा साहब आंबेडकर ने देखा था, पंडित नेहरू ने देखा था, सरदार पटेल, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु ने देखा था, डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देखा था, भगवान बिरसा मुंडा ने देखा था, ज्योतिबा फुले ने देखा था, उन सब से प्रेरणा लेकर के हम आगे बढ़े। आइए इस संकल्प को हम दोहराए। स्वयं से ऊपर राष्ट्र का हित हो।

स्वयं से ऊपर राष्ट्र का हित हो और
कर्तव्य ही हमारी पहचान हो।
मैं सभी देशवासियों से कहूंगा
समय हमारा है,
अवसर हमारा है,
संकल्प हमारा है,
आइए सपनों को संकल्प बनाएं,
संकल्प को सामर्थ्य बनाएं और
सामर्थ्य को सफलता में बदल के रहें।
आइए हर कदम को विकास का कदम बनाएं,
कदम से कदम मिलाएं,
मन से मन मिलाए,
लक्ष्य से जुड़े रहे,
एक दीप से जले दीप हजारों,
आओ मिलकर विकसित भारत बनाएं। ■

संकल्प हो रहे हैं साकार - डॉ. मोहन यादव

- **प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत विकास, गौरव और आत्मविश्वास की नई ऊंचाइयां छू रहा।**
- **लोकतंत्र की मजबूती के लिए परिवारवाद और अर्बन नक्सलिज्म से लड़ना होगा।**

सौभाग्य की बात है कि हमारा अतीत उज्ज्वल रहा है। भारत ने सदैव दुनिया के सामने मानवता की मिसाल पेश की है। देश की आजादी लाखों स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, क्रांतिकारियों और वीर सपूतों के संघर्ष, त्याग और बलिदान का परिणाम है। स्वतंत्रता दिवस हमारे लिए केवल उत्सव का पर्व नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों और संकल्पों को दोहराने का अवसर भी है। हमें उन अमर शहीदों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के त्याग को सदैव स्मरण रखना चाहिए, जिनके बलिदान से भारत स्वतंत्र हुआ। देश में लंबा समय गुलामी का भी रहा, जिसे याद करने पर आज भी सिरहन होती है, लेकिन हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों ने देश की आजादी के लिए कुर्बानियां देकर लंबी और कठिन लड़ाई लड़ी। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई सहित अनेक क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों का बलिदान देकर आजादी की लड़ाई को मजबूत किया। प्रवासी भारतीयों ने भी दुनिया के जिस कोने में थे, वहीं से भारत की स्वतंत्रता के लिए आवाज बुलंद की। स्वतंत्रता के बाद देश को लेकर अनेक संकल्प लिए गए और सभी प्रधानमंत्रियों ने अपने-अपने स्तर पर देश के विकास में योगदान दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज दुनिया में भारत का डंका बज रहा है। भारत का सामर्थ्य लगातार बढ़ रहा है और हमारा लोकतांत्रिक तंत्र तीनों स्तरों पर मजबूती के साथ कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत अमृतकाल में तेजी से आगे बढ़ रहा है। दुनिया के सबसे बड़े युवा देश के रूप में भारत के युवा देश की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जनसंघ के समय से जिन विचारों और संकल्पों को लेकर हमारी पार्टी आगे बढ़ी, उन्हें आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पूरा किया जा रहा है। विकसित भारत के संकल्प को साकार करने की दिशा में देश तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाने में पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता अपना योगदान दे रहा है। आज परिवारवाद और अर्बन नक्सलिज्म लोकतांत्रिक व्यवस्था के सामने चुनौती हैं, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत हर चुनौती का मजबूती से सामना कर रहा है। भारत अपनी एकता, सामर्थ्य और लोकतांत्रिक शक्ति के बल पर सभी खतरों से निपटने में सक्षम है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आह्वान पर प्रदेश भर में तिरंगा यात्राओं के माध्यम से राष्ट्रभक्ति और देशप्रेम का संदेश गूंजा हैं। ■

विकसित राष्ट्र का संकल्प होगा साकार - हेमंत खण्डेलवाल

- **विकसित भारत के संकल्प के साथ सशक्त और समृद्ध राष्ट्र निर्माण की ओर बढ़ रहा देश।**

देश को आजादी असंख्य वीरों के त्याग और बलिदान से प्राप्त हुई है। स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर हमें स्वतंत्र भारत दिया। उनका बलिदान व्यर्थ न जाए और देश की स्वतंत्रता, एकता एवं अखंडता सदैव अक्षुण्ण रहे, यह हम सभी की जिम्मेदारी है। आज देश और प्रदेश सशक्त एवं मजबूत नेतृत्व के हाथों में है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत विकसित राष्ट्र बनने के संकल्प के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंच रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हर वर्ग, हर क्षेत्र और हर व्यक्ति के विकास को केंद्र में रखकर नीतियां और योजनाएं बनाई हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में जनहित और विकास के अनेक कार्य तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं और उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाएं तथा प्रदेश के विकास में सक्रिय भागीदारी निभाएं। मध्यप्रदेश को सशक्त, समृद्ध और विकसित प्रदेश बनाने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को अपनी भूमिका पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभानी होगी। स्वतंत्रता दिवस के इस पावन अवसर पर हम सभी को राष्ट्र की एकता, अखंडता और संप्रभुता की रक्षा के साथ विकसित भारत और विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण का संकल्प लेना चाहिए। ■

खादी आत्मनिर्भरता का माध्यम - हेमंत खण्डेलवाल

खादी केवल एक वस्त्र नहीं, बल्कि हमारे स्वाधीनता संग्राम की आत्मा और आत्मनिर्भर भारत का सशक्त प्रतीक है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने खादी को स्वदेशी, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता का माध्यम बनाया था। आज भी खादी भारतीय संस्कृति, आत्मनिर्भरता और स्थानीय कारीगरों के सम्मान का प्रतीक बनी हुई है। मध्यप्रदेश के चंदेरी, महेश्वरी, नंदना प्रिंट और बाग प्रिंट जैसी समृद्ध हस्तकरघा परंपराएँ हमारे बुनकर साथियों की अद्‌भुत प्रतिभा, परिश्रम और सांस्कृतिक विरासत की पहचान हैं।

7 अगस्त भारतीय इतिहास में स्वदेशी आंदोलन की प्रेरणादायी तिथि है। 7 अगस्त 1905 में कोलकाता से स्वदेशी आंदोलन का शंखनाद हुआ था। उसी ऐतिहासिक विरासत को स्मरण करते हुए देशभर में राष्ट्रीय हैंडलूम दिवस मनाया जाता है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 45 लाख बुनकर हैंडलूम उद्योग से जुड़े हुए हैं, जिनमें लगभग 70 प्रतिशत महिलाएं हैं। कृषि के बाद हैंडलूम एवं बुनकर उद्योग देश में रोजगार का सबसे बड़ा आधार है। हमारे पारंपरिक वस्त्र न केवल भारतीय संस्कृति और विरासत के संवाहक हैं, बल्कि लाखों परिवारों की आजीविका का भी प्रमुख साधन हैं। प्रदेशवासी अधिक से अधिक हैंडलूम और खादी से बने वस्त्रों का उपयोग करें, ताकि स्थानीय बुनकरों और कारीगरों को रोजगार एवं आर्थिक मजबूती मिल सके। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के वोकल फॉर लोकल और स्वदेशी को बढ़ावा देने के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व है। ■

खादी हमारे स्वाभिमान, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है।

स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए खादी से निर्मित राष्ट्रीय ध्वज एवं वस्त्र खरीदें।

खादी अपनाएं, स्थानीय बुनकरों को सशक्त बनाएं।

संकल्प पत्र के 70 प्रतिशत वादे पूर्ण - डॉ. मोहन यादव

कांग्रेस लगातार वर्ग संघर्ष बढ़ाने का कार्य कर रही है। कांग्रेस ने पहले मुस्लिम लीग के साथ समझौता किया था और आज भी केरल में मुस्लिम लीग के साथ समझौता कर सत्ता में आई है। कांग्रेस पहले भी तुष्टिकरण की राजनीति करती रही है और आज भी वही कार्य कर रही है। सत्ता की भूख के कारण कांग्रेस समय-समय पर समाज को बांटने का प्रयास करती रही है। इसके विपरीत भारतीय जनता पार्टी सामाजिक समरसता और सबका साथ, सबका विकास की भावना के साथ कार्य करती है। भाजपा का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर प्रदेश और देश को विकास के पथ पर आगे बढ़ाना है। मध्यप्रदेश लगातार विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। प्रदेश सरकार ने अलग-अलग वर्षों को विशेष प्राथमिकता के साथ समर्पित किया है। वर्ष 2025 को 'उद्योग वर्ष' मनाया। वर्ष 2026 को 'किसान कल्याण वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है, ताकि युवाओं, उद्योगों और किसानों के विकास को नई गति मिल सके। वर्ष 2027 माता-बहनों के सशक्तिकरण और कल्याण के लिए समर्पित रहेगा। सरकार का संकल्प है कि समाज के प्रत्येक वर्ग के विकास और कल्याण के साथ मध्यप्रदेश को निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाया जाए।

जब भाजपा सरकार ने लाड़ली बहना योजना का संकल्प लिया था, तब कांग्रेस ने इसका मजाक उड़ाया और कहा था कि यह योजना चल नहीं सकती। आज 1 करोड़ 25 लाख बहनों के खातों में लगातार राशि पहुंच रही है और सरकार 55 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि बहनों के खातों में पहुंचा चुकी है। लाड़ली बहना योजना बहनों के प्रति सरकार के विश्वास और महिला सशक्तिकरण का प्रतीक है। सरकार महिलाओं को केवल आर्थिक सहायता देने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें रोजगार और आत्मनिर्भरता से जोड़ने के लिए भी नई योजनाओं पर काम कर रही है। रेडीमेड गारमेंट्स जैसे उद्योगों में बड़ी संख्या में बहनों को रोजगार मिलने पर प्रति बहन 5 हजार रुपए प्रतिमाह की सहायता 10 वर्षों

तक उद्योग को देने जैसे प्रोत्साहन पर सरकार आगे बढ़ रही है।

मध्यप्रदेश ने बजट, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। कांग्रेस शासनकाल में जहां प्रदेश का बजट लगभग 22 हजार करोड़ रुपए और बिजली उत्पादन क्षमता करीब 5 हजार मेगावाट थी, वहीं आज प्रदेश का बजट 4.38 लाख करोड़ रुपये और बिजली उत्पादन क्षमता 31 हजार मेगावाट तक पहुंच गई है। कांग्रेस शासनकाल में एमबीबीएस की सीटें 1250 थीं, उसे हमारी सरकारों ने बढ़ाकर 6250 तक पहुंचा दिया है। प्रदेश में 39 मेडिकल कॉलेज संचालित हो रहे हैं, जिन्हें 50 से अधिक करने का लक्ष्य है। सांदीपनि विद्यालय, पीएम एक्सीलेंस कॉलेज, ग्लोबल स्किल पार्क और आईटीआई के माध्यम से युवाओं को रोजगारपरक शिक्षा एवं कौशल से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। सरकारी नौकरियों और स्वरोजगार के अवसरों का भी लगातार विस्तार किया जा रहा है। दो साल में ढाई लाख पदों पर भर्ती का लक्ष्य रखा गया है। पुलिसकर्मियों के साढ़े 18 हजार पदों पर भर्ती प्रक्रिया की जा रही है। 85 हजार अलग-अलग तरह के पदों पर भर्ती की जा रही है। 86 लाख किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि दी जा रही है। 1.25 करोड़ लाड़ली बहनों के खाते में प्रतिमाह राशि दी जा रही है।

वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में समर्पित कर किसानों की आय, सिंचाई, बिजली और कृषि उत्पादन बढ़ाने की दिशा में लगातार निर्णय लिए जा रहे हैं। कांग्रेस शासनकाल में सिंचाई का रकबा लगभग 7.5 लाख हेक्टेयर था, आज प्रदेश में करीब 55 लाख हेक्टेयर क्षेत्र सिंचित हो रहा है। किसानों को एमएसपी, किसान सम्मान निधि, मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना और बिजली सहित विभिन्न सुविधाओं का लाभ दिया जा रहा है। किसानों को मात्र 5 रुपए में बिजली कनेक्शन देने के साथ दिन में बिजली उपलब्ध कराने की दिशा में भी सरकार आगे बढ़ रही है। केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना बुंदेलखंड के लिए ऐतिहासिक सौगात है, जिससे सिंचाई, पेयजल, उद्योग और बिजली के माध्यम से क्षेत्र की तस्वीर बदलेगी। कांग्रेस के लंबे शासनकाल में बुंदेलखंड से पलायन और पिछड़ेपन की समस्या बनी रही, जबकि भाजपा सरकार बुंदेलखंड को समृद्धि की दिशा में ले जा रही है। कांग्रेस के समय में बुंदेलखण्ड में पलायन होता था। केन-बेतवा परियोजना से बुंदेलखण्ड अनाज उत्पादन में पंजाब और हरियाणा को पीछे छोड़ देगा। एक लाख कर्मचारियों को पदोन्नति देकर उन्हें सम्मान दिया गया।

मध्यप्रदेश शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन, सड़क, विमानन और शहरी अधोसंरचना के क्षेत्र में तेजी

से आगे बढ़ रहा है। दतिया, सतना और रीवा में नए एयरपोर्ट शुरू हुए हैं, पर्यटन निगम लंबे समय बाद लाभ की स्थिति में आया है तथा होमस्टे योजना के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाए जा रहे हैं। भोपाल, इंदौर और उज्जैन को मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र के रूप में विकसित करने के साथ जबलपुर और ग्वालियर को भी इससे जोड़ने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत 3.62 लाख से अधिक जल संरचनाओं पर कार्य हुआ है। सरकार ने गौवंश के लिए सहायता राशि दोगुनी की है और सड़क, स्वास्थ्य तथा अन्य अधोसंरचना के विस्तार पर भी लगातार काम हो रहा है। भाजपा सरकार समाज को बांटने के बजाय सभी वर्गों को साथ लेकर 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ आगे बढ़ रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा किए जा रहे सेवा, सुशासन और जनकल्याण के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक 'सेवा संकल्प अभियान' चलाया जाएगा। अभियान के अंतर्गत विभिन्न सेवा एवं जनकल्याणकारी कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। ■

भाजपा विचार, संस्कार, सेवा व राष्ट्र निर्माण की यात्रा - हेमंत खण्डेलवाल

भाजपा की विचारधारा और संगठन की मजबूत नींव उन महान राष्ट्र नायकों और महापुरुषों के विचारों से निर्मित हुई है, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र और समाज की सेवा के लिए समर्पित किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने हमें एकात्म मानववाद और अंत्योदय का मार्ग दिखाया, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए संघर्ष करते हुए देशहित का संकल्प दिया तथा मध्यप्रदेश की माटी के सपूत कुशाभाऊ ठाकरे जी ने संगठन, अनुशासन, कार्यकर्ता निर्माण, सेवा और समर्पण की ऐसी परंपरा स्थापित की, जो आज भी भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए प्रेरणा का स्रोत है। भारतीय जनता पार्टी केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि विचार, संस्कार, सेवा और राष्ट्र निर्माण की यात्रा है। हमारे संगठन की शक्ति हमारे कार्यकर्ता हैं और कार्यकर्ताओं की शक्ति हमारी विचारधारा है। अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक विकास और सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाना ही अंत्योदय की वास्तविक भावना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सामाजिक सेवा और राष्ट्र हित की यात्रा के 25 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इन वर्षों में उन्होंने राजनीति को सेवा का माध्यम बनाकर देश के विकास, सुशासन और जनकल्याण को नई दिशा दी तथा अनुशासन, संवेदनशीलता, आत्मविश्वास और राष्ट्र सेवा की भावना को मजबूत किया है। गुजरात से प्रारंभ हुई उनकी जनसेवा की यात्रा आज पूरे देश के लिए प्रेरणा बनी है। जनधन योजना, डिजिटल इंडिया, स्वच्छ भारत अभियान, पीएम सूर्यघर योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना सहित अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से गरीब, किसान, महिला, युवा और वंचित वर्गों को सशक्त बनाने का कार्य हुआ है। प्रधानमंत्री जी के 25 वर्षों के सार्वजनिक जीवन और राष्ट्र सेवा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत व्यापक जनसंपर्क एवं सेवा गतिविधियां आयोजित की जा रही है। यह अभियान सेवा, संवेदनशीलता और अनुशासन को सामाजिक जीवन का हिस्सा बनाने का संकल्प है, जिसके माध्यम से सरकार की योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने और प्रत्येक नागरिक को विकसित भारत के संकल्प से जोड़ने का कार्य किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार उद्योग, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, रोजगार, युवा विकास और सामाजिक कल्याण सहित सभी क्षेत्रों में निरंतर बेहतर कार्य कर रही है तथा समाज के प्रत्येक वर्ग के विकास को प्राथमिकता दे रही है। भाजपा के विभिन्न मोर्चे भी समाज के अलग-अलग वर्गों के बीच निरंतर सक्रिय हैं। जनजाति मोर्चा जनजातीय समाज के गौरव, संस्कृति और विकास के लिए, महिला मोर्चा महिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए, युवा मोर्चा युवाओं को बेहतर भविष्य और विकसित भारत 2047 के संकल्प से जोड़ने के लिए तथा किसान मोर्चा किसान कल्याण, प्राकृतिक खेती और कृषि विकास के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। भाजपा संगठन केवल चुनाव के समय नहीं, बल्कि 24 घंटे, 365 दिन समाज के बीच रहकर सेवा करता है और सरकार की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का कार्य करता है। कार्यकर्ता सेवा, अनुशासन, संवेदनशीलता और राष्ट्र भक्ति की भावना के साथ समाज के बीच सक्रिय रहकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सेवा यात्रा से प्रेरणा लें और सेवा को संकल्प, संगठन को

शक्ति तथा राष्ट्र निर्माण को अपना सर्वोच्च लक्ष्य बनाते हुए विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में अपनी भूमिका निभाएं।

भाजपा प्रदेश कार्यसमिति मध्यप्रदेश कि बैठक में सेवा, सुशासन, सामाजिक समरसता के साथ ही मध्यप्रदेश को विकसित राज्य बनाने के लिए निर्णय लिए गए। इस दौरान राजनीतिक प्रस्ताव भी पारित किया गया। बैठक में संगठन को और ज्यादा मजबूत करने, सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने, सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने तथा विकसित भारत और विकसित मध्यप्रदेश के संकल्प को साकार करने पर व्यापक मंथन हुआ। राजनीतिक प्रस्ताव में बुंदेलखंड विकास एवं गरीब कल्याण, औद्योगिक विकास एवं रोजगार, किसान कल्याण तथा महिला सशक्तिकरण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई।

भाजपा प्रदेश कार्यसमिति मध्यप्रदेश की बैठक में 'समरसता का संकल्प' और 'विकसित भारत 2047' जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी विचार-विमर्श हुआ। भाजपा का मूल आधार सेवा, संगठन और सामाजिक समरसता है। संत शिरोमणि रविदास महाराज की 650वीं जयंती के अवसर पर चलाए जा रहे 'समरसता संकल्प अभियान' के माध्यम से समाज में समानता, भाईचारे और समरसता का संदेश पहुंचाने का संकल्प लिया गया। भाजपा प्रदेश कार्यसमिति मध्यप्रदेश की बैठक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 25 वर्षों के लोकसेवा कार्यकाल का अभिनंदन करते हुए कार्यकर्ताओं से उनके सेवा, सुशासन, आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया गया।

भाजपा प्रदेश कार्यसमिति मध्यप्रदेश की बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भाजपा सरकार के कार्यकाल सहित उनके नेतृत्व के ढाई वर्षों का भी लेखा-जोखा सामने रखा। वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस दौरान किसानों की आय, सिंचाई, बिजली और कृषि उत्पादन बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आने वाला वर्ष महिलाओं के लिए समर्पित रहेगा। केन-बेतवा परियोजना बुंदेलखंड के विकास की दिशा में ऐतिहासिक कदम है, जिससे सिंचाई, पेयजल और विद्युत सुविधाओं का विस्तार होगा।

भाजपा संगठन को बूथ स्तर तक और मजबूत करते हुए सेवा, सुशासन, सामाजिक समरसता और विकास के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। ओरछा की पावन धरती से बुंदेलखंड की गौरवशाली विरासत और विकास की नई संभावनाओं को आगे बढ़ाने तथा मध्यप्रदेश को विकसित, समृद्ध और आत्मनिर्भर राज्य बनाने के संकल्प के साथ कार्यकर्ता पूरी शक्ति से जुटेंगे। ▪

एक ही लक्ष्य - 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था

सीए अखिलेश जैन

मोदी सरकार द्वारा तय लक्ष्य 5 -ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था को हॉसिल करने के लिए सरकार लगातार विभिन्न दिशाओं में लगातार ठोस प्रयास कर रही है। विकसित भारत के लक्ष्य में सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण पहलु है। नभ से लेकर समुद्र की गहराईयों तक सुरक्षा का अभेद किला अर्थव्यवस्था की गति को बनाये रखने के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना सावन भादो में बरसात का होना। भारत ने अनुभवों से सिद्ध कर दिया है कि राष्ट्र की सुरक्षा में पूर्णतः आत्मनिर्भर होना अत्यावश्यक है। इसी दिशा में एक कदम और आगे बढ़ाते हुए भारत सरकार ने सेना के लिए एमक्यू-9बी सी गार्डियन हाई-एल्टीट्यूड लॉन्ग-एंड्योरेंस (एचएएलई) रिमोटली पायलेटेड एयरक्राफ्ट सिस्टम (आरपीएएस) को लेने हेतु जनरल एटॉमिक्स एरोनॉटिकल सिस्टम्स, इंक. (जीए-एएसआई) के साथ अनुबंध

किया है। उन्नत प्रणालियों, अत्याधुनिक सेंसरों और परिष्कृत पेलोड से सुसज्जित एमक्यू-9बी सी गार्डियन एचएएलई आरपीएएस भारतीय नौसेना की समुद्री क्षेत्र जागरूकता क्षमताओं को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाएगा। अब विशाल समुद्री क्षेत्रों से 24x365 दिन निरंतर खुफिया जानकारी, निगरानी और टोही कवरेज सम्भव हो जावेगा, जिससे समुद्री क्षेत्रों की प्रत्येक दुस्साहस पर दृष्टि और प्रतिक्रिया देने की भारत की क्षमता सुदृढ़ होगी।

प्रतिरोधक क्षमता में विस्तार से नौसेना की मारक क्षमता में विस्तार होगा, भारत की मारक क्षमता बहुत ज्यादा मजबूत हो चुकी है. इन ड्रोनों की सहायता से बहुत ऊंचाई से सीमाओं पर होने वाली प्रत्येक गतिविधि की निगरानी सम्भव हो जावेगी। इन शक्तिशाली ड्रोनों से तीनों सेनाओं की ताकत में बहुत इजाफा होगा।

इस उपलब्धि के साथ-साथ समुद्री इलाकों की सुरक्षा बेहद मजबूत हो जावेगी। गहरे पानी के नीचे छिपी पनडुब्बियाँ हमेशा खतरा बनी रहती हैं। समंदर में गहरे पानी में इन पनडुब्बियों को पहचानना बेहद ही कठिन काम होता है। अब इस खतरे व डर से अपना भारत सदैव के लिए बाहर आ जावेगा तीनों सेना इन ड्रोनों के उपयोग से अचूक वार करने में सक्षम होगीं। सीमापार भी सटीक वार सम्भव हो गया है।

कुल मिलाकर भारत की सीमाओं की सुरक्षा के लिए बेहद मजबूत, सक्षम पहरेदार भारत को मिल गया है। भारतीय सेना की मजबूती क्षेत्रीय एकता व अखण्डता के लिए सदैव उपयोगी रहती है। भारत अपनी ताकत का उपयोग विस्तारवादी नीतियों के लिए कभी नही करता है। परंतु भारत, कुदृष्टि का मुंहतोड़ जबाब देने में सक्षमता हासिल कर चुका है। भारत की बढ़ती मजबूत ताकत शांति का संदेश देती है। निश्चित ही मोदी सरकार के ठोस एवं दूरदृष्टि से भरे प्रयासों के फलस्वरूप भारत 5- ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को शीघ्रतापूर्वक हासिल करने में सफल होगा। ▪

(लेखक भाजपा मप्र के कोषाध्यक्ष हैं)

भारतीय जनता पार्टी, मध्यप्रदेश
राजनीतिक प्रस्ताव
प्रदेश कार्यसमिति बैठक
30 एवं 31 अगस्त 2026, ओरछा

भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश की प्रदेश कार्यसमिति, भगवान रामराजा सरकार की तीर्थ स्थली ओरछा में, भगवान श्री राम के सुशासन, सामाजिक जीवन की मर्यादा, जन-कल्याण और ''जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है'' जैसे सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक संदेशों को आत्मसात कर रही है। यह वही भूमि है, जो महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद की कर्मभूमि और क्रांति की रणनीति बनाने की स्थली रही है।

मध्यप्रदेश की यह कार्यसमिति ऐसे समय पर संपन्न हो रही है, जब देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपनी लोकसेवा के 25 वर्षों का कार्यकाल पूरा कर रहे हैं। 25 वर्षों की तपस्या, सेवा और समर्पण के इस अवसर पर यह कार्यसमिति प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को बधाई देते हुए उनका हार्दिक अभिनंदन करती है।

स्वतंत्रता के पश्चात पश्चिम बंगाल में पहली बार ऐतिहासिक जीत के साथ भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है। असम एवं पांडुचेरी में भी हमने पुनः जीत दर्ज की है। गंगोत्री से लेकर गंगा सागर तक, आज देश भर के 22 राज्यों में भारतीय जनता पार्टी एवं सहयोगी दलों की सरकार है। हम उन सैकड़ों कार्यकर्ताओं के संघर्ष को नमन करते हैं, जिन्होंने अपने प्राणों तक की आहुति दे दी। उनके परिवारों ने प्रताड़ना सही, लेकिन वे थमे नहीं, झुके नहीं, डटे रहे और वैचारिक समर्पण के साथ पार्टी को विजय दिलाने में जुटे रहे यह हमारी विचारधारा की जीत है, सुशासन एवं जनकल्याण के प्रति प्रतिबद्ध हमारे गौरवशाली जननेता माननीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की जीत है।

यह कार्यसमिति राष्ट्रीय नेतृत्व आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी, श्री नितिन नवीन जी एवं श्री अमित शाह जी को बधाई प्रेषित करती है।

भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश ने 'संगठन पर्व 2025' को सफलता पूर्वक आयोजित कर बूथ से लेकर प्रदेश तक सभी इकाइयों के गठन और प्रशिक्षण का कीर्तिमान स्थापित किया है। इकाईयों के गठन के साथ ही प्रशिक्षण और फिर लगातार अभियानों एवं कार्यक्रमों के आयोजन की श्रृंखला हमारे कार्यकर्ताओं ने चलाई है। हमारे मोर्चे और प्रकोष्ठ अपने गठन के साथ ही अलग-अलग नवाचारों में जुटे हुए हैं। देश इस समय संतशिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज का 650वाँ जयंती वर्ष मना रहा है। भाजपा की मध्यप्रदेश इकाई पूरी श्रद्धा और प्रतिबद्धता के साथ इन आयोजनों में जुटी हुई है।

यह कार्यसमिति गर्व करती है कि ऐसी ही शाश्वत सनातन आस्था और प्रखर राष्ट्रवाद की भावना के साथ भारतीय जनता पार्टी, एक राजनीतिक दल के तौर पर हो या केंद्र एवं प्रदेश की सरकार के नाते, अपनी भूमिका का सार्थक और सफल निर्वहन कर रही है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने अपनी रणनीतिक कुशलता के साथ, दुनिया के भीषण भू-राजनीतिक परिदृश्य में युद्ध की आग से उपजे दुष्परिणामों से अपनी जनता को झुलसने से बचाने का कार्य किया, जबकि दुनिया के दूसरे शक्तिशाली देश भी स्वयं को नहीं बचा पाए। भारत तेज गति से आर्थिक महाशक्ति बन रहा है।

आज निर्माण के क्षेत्र में मोबाइल, रक्षा उपकरण, सेमी कंडक्टर और ई-व्हीकल जैसे क्षेत्रों में हम दुनिया के लिए आदर्श बन रहे हैं।

ऑपरेशन सिंदूर देश की रक्षा के नए पैमाने को दर्शाता है। हमारे रक्षा बलों ने सीमित समय में असीमित शौर्य का परिचय देकर दुश्मन के घर में घुसकर मारने का काम किया है।

यह कार्यसमिति प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में माननीय श्री अमित शाह जी को हार्दिक बधाई देती है कि उनकी इच्छा शक्ति एवं नेतृत्व क्षमता ने निर्धारित समय-सीमा के भीतर देश में वर्षों से फैले नक्सलवाद के कैंसर को जड़ों से समाप्त कर दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में भी ऐतिहासिक रूप से नक्सलवाद को समूल नष्ट कर दिया गया है। यह कार्यसमिति मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी को भी हार्दिक बधाई प्रस्तुत करती है।

मध्यप्रदेश की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था

मध्यप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2025-26 में 1 लाख 69 हजार रुपये से अधिक हो गई है, जो लगभग 9 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है। प्रदेश का सकल घरेलू उत्पाद वर्ष 2025-26 में 18.48 लाख करोड़ रुपये पर पहुँच गया है, जो पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 10.69 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 2025 को मध्यप्रदेश में ''उद्योग वर्ष'' के रूप में मनाया गया। प्रदेश में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट से 30.77 लाख करोड़ रुपये के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जिनसे 21.40 लाख रोजगार के अवसर सृजित होंगे। एक वर्ष में सर्वाधिक निवेश प्रस्ताव लाने वाला मध्यप्रदेश देश का तीसरा राज्य बना है। प्रदेश से होने वाले निर्यात में वर्ष 2024-25 में 6 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है।

माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के कुशल मार्गदर्शन एवं निर्णयों के कारण टेक्सटाइल इंडस्ट्री, रक्षा उपकरण इंडस्ट्री, फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री, आईटी सेक्टर, नवकरणीय ऊर्जा, दवा निर्माण और डेटा सेंटर जैसे क्षेत्रों में भारी मात्रा में निवेश प्राप्त हुआ है। इस ऐतिहासिक आर्थिक उपलब्धि के लिए यह कार्यसमिति मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी को बधाई प्रेषित करती है।

वहीं वैश्विक मंच पर सक्षम और आधुनिक भारत ने एआई सम्मेलन की सार्थकता से दुनिया भर को चौंका दिया है। भारत के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को दूसरे देशों की मान्यता भी मिल रही है और मांग भी बढ़ रही है। भारत और यूरोपीय संघ के मुक्त व्यापार समझौते ने लगभग तीन लाख करोड़ रुपये के निर्यात की संभावनाएँ खोली हैं। आईटी और सेवा क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। बीते 10 वर्षों में भारत-अमेरिका के द्विपक्षीय समझौतों से 70 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का प्रत्यक्ष निवेश प्राप्त हुआ है। हमने संकट के दिनों में दुनिया के लगभग 100 देशों की प्रत्यक्ष मदद की है और उनसे सेवा एवं संवेदना के साथ संबंध बनाए हैं। आज 41 देशों के साथ तेल और गैस का व्यापार है। ''भारत प्रथम'' की नीति विदेश व्यापार हो या रणनीतिक मामले, सभी में एक समान है। राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से भारत की सीमा पर दो गुनी सड़कें बनी हैं, पुल बने हैं। जहाँ मात्र एक सुरंग थी, वहाँ अब लगभग 25 सुरंगे तैयार हो रही हैं। परमाणु ऊर्जा मिशन, भारत का पहला स्वदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर एवं नौ सेना की शक्ति आईएनएस विक्रांत तथा स्वदेशी एयर डिफेंस सिस्टम ने भारत की ताकत को उजागर किया है।

माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपनी सरकार में यह सुनिश्चित किया कि विरासत भी होगी और विकास भी। भव्य, दिव्य और नव्य सांस्कृतिक पुनर्जागरण की गाथा भारत लिख रहा है। योग से लेकर आयुर्वेद तक, विश्व के सबसे बड़े संग्रहालय से प्राचीन पांडुलिपियों के संकलन तक, जनजातीय नायकों के सम्मान से लेकर द्वीपों के औपनिवेशिक नाम हटाए जाने तक, ज्ञान भारतम मिशन से लेकर वंदेमातरम् मिशन तक-भारत लगातार अपनी सांस्कृतिक विरासत की, वर्तमान शोध एवं तकनीक के दम पर, पुनर्स्थापना में जुटा हुआ है और दुनिया में अपना स्थान बना रहा है।

मध्यप्रदेश भी इस दिशा में लगातार ऐतिहासिक निर्णय ले रहा है, जिनमें रामराजा लोक ओरछा, हनुमान लोक सौंसर, कुंडेश्वर लोक टीकमगढ़, माँ पीतांबरा माई लोक दतिया, देवी लोक सलकनपुर, वनवासी लोक चित्रकूट, रविदास धाम सागर एवं वाग्देवी सरस्वती लोक धाम जैसे महत्वपूर्ण कार्य संचालित हैं।

कृषक कल्याण वर्ष 2026

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी की किसानों के प्रति संवेदनशीलता के कारण वर्ष 2026 प्रदेश के किसानों को समर्पित किया गया है। सरकार ने 1 लाख 15 हजार करोड़ रुपये का बजट कृषि से संबंधित क्षेत्र के लिए आवंटित किया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत 84 लाख किसानों को लगभग 1 लाख करोड़ रुपये की राशि दी जा चुकी है।

मध्यप्रदेश दलहन, टमाटर, सोयाबीन, मक्का एवं जैविक मक्का उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है, वहीं तिलहन, खाद्यान्न, गेहूँ, चना, उड़द एवं मसूर उत्पादन में देश में द्वितीय स्थान पर है।

प्रदेश में श्री अन्न के उत्पादन को लगातार प्रोत्साहन दिया जा रहा है तथा गेहूँ, मूँग, उड़द और दालों की खरीद का रिकॉर्ड बनाया जा रहा है। प्रदेश में किसानों के हित में भावांतर योजना भी संचालित की जा रही है।

सरकार वर्ष 2028-29 तक सिंचाई क्षमता 100 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाने का लक्ष्य लेकर चल रही है। केन-बेतवा लिंक परियोजना एवं बरगी दायीं तट नहर की ऐतिहासिक टनल बन जाने से इस लक्ष्य को प्राप्त किया जाएगा। केन-बेतवा परियोजना सिंचाई, पेयजल एवं विद्युत उत्पादन में प्रदेश के लिए मील का पत्थर साबित होगी, जिसका सर्वाधिक लाभ बुंदेलखंड की धरती को मिलेगा।

पार्वती-काली सिंध-चंबल लिंक परियोजना का लाभ प्रदेश के 10 जिलों को मिलेगा। ताप्ती बेसिन मेगा रिचार्ज परियोजना से 1 लाख हेक्टेयर भूमि को लाभ मिलेगा। ओरछा में आयोजित यह कार्यसमिति माननीय प्रधानमंत्री जी एवं माननीय मुख्यमंत्री जी को हार्दिक धन्यवाद देती है एवं आभार व्यक्त करती है।

जल संरक्षण

जल संरक्षण में मध्यप्रदेश अग्रणी रहा है। 10 हजार 514 करोड़ रुपये की लागत से 3 लाख 63 हजार से अधिक कार्य पूर्ण हुए। ''जल गंगा संवर्धन अभियान'' ने सोशल मीडिया के माध्यम से प्रदेश के साथ देश और विदेश के लगभग 7 करोड़ परिवारों तक पहुँच बना कर जनभागीदारी का एक नया इतिहास रचा। भू-जल संवर्धन को

बढ़ावा देने के लिए रिकॉर्ड समय में 67 हजार 708 खेत-तालाब, 225 अमृत सरोवर और 97 हजार 614 कूप रिचार्ज संरचनाएँ तैयार की गईं। इसके अलावा 10 हजार से अधिक कुओं, नदियों और प्राचीन बावड़ियों की सफाई व सौंदर्यीकरण कर उन्हें अतिक्रमण मुक्त कराया गया।

गौ-संवर्धन एवं दुग्ध उत्पादन

अब पशुपालन विभाग, गौ-पालन विभाग के नाम से जाना जा रहा है। स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना नीति 2025 और डॉ. अंबेडकर विकास योजना परिणामकारी सिद्ध हो रही हैं। गौशालाओं में 3 लाख 98 हजार से अधिक गौ वंश का पालन हो रहा है। इनके बेहतर आहार के लिए मिलने वाली 20 रुपये की राशि बढ़ा कर 40 रुपये कर दी गई है। माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने मध्यप्रदेश को दुग्ध राजधानी बनाने का संकल्प दिलाया है। प्रदेश में दुग्ध संकलन का लक्ष्य 10 लाख लीटर से बढ़ा कर 50 लाख लीटर और कवरेज वाले गाँवों की संख्या 9 हजार से बढ़ा कर 26 हजार करने का लक्ष्य लिया गया है। भाजपा प्रदेश कार्यसमिति प्रदेश सरकार के इन संकल्पों से स्वयं को संबद्ध करती है।

औद्योगिकीकरण में बढ़ता मध्यप्रदेश

यह प्रदेश कार्यसमिति माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी की भूरि-भूरि प्रशंसा करती है कि उनके अथक और अनवरत प्रयासों से मध्यप्रदेश का तेजी से औद्योगिक विकास हो रहा है। 8 लाख 73 हजार करोड़ रुपये के निवेश के कार्य धरातल पर उतर चुके हैं। क्षेत्रीय आकांक्षाओं को महत्व दिया गया है और प्रदेश के सभी क्षेत्रों में निवेश पहुँच रहा है। बदलती दुनिया के साथ विज्ञान और तकनीक पर भी ध्यान दिया जा रहा है। मध्यप्रदेश देश का लॉजिस्टिक हब बने, इस लक्ष्य को लेकर मध्यप्रदेश लॉजिस्टिक नीति 2025 को मंजूरी दी गई है। निर्यात प्रोत्साहन और विश्व स्तर पर ''मेड इन मध्यप्रदेश'' बाजार को विकसित करने के लिए एक्सपोर्ट प्रमोशन नीति 2025 लागू की गई है। इसी प्रकार रोजगार, नवाचार, विज्ञान और तकनीक के उपयोग जैसे विषयों पर ध्यान रखते हुए ड्रोन संवर्धन एवं उपयोग नीति 2025, मध्यप्रदेश सेमीकंडक्टर नीति 2025 और स्पेस टेक पॉलिसी 2025 लागू की गई हैं। यही कारण है कि अब मध्यप्रदेश में सेटेलाइट डेटा, रिमोट सेसिंग और स्पेस स्टार्टअप को प्रोत्साहन मिल रहा है।

प्रदेश में पहली बार उज्जैन में स्पिरिचुअल एंड वेलनेस समिट का आयोजन हुआ, जिसका बहुआयामी लाभ मिल रहा है। इसी प्रकार टेक ग्रोथ, कृषि उद्योग, राइज, टूरिज्म और माइनिंग कॉन्क्लेव भी आयोजित किए गए। देश के पहले पीएम मित्र पार्क का भूमि पूजन धार में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किया गया। यह 2000 करोड़ रुपये की लागत से 2 हजार 158 एकड़ भूमि पर विकसित होने वाला भारत का सबसे बड़ा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल पार्क होगा। इस पार्क से 3 लाख रोजगार के अवसर सृजित होंगे और 6 लाख कपास उत्पादकों को लाभ मिलेगा।

गरीब कल्याण

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास'' का मंत्र दिया और इसे सिद्ध करने का कार्य मध्यप्रदेश की धरती पर भाजपा की माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सरकार कर रही है। मध्यप्रदेश में 1 करोड़ 33 लाख परिवारों को निःशुल्क खाद्यान्न वितरित किया जा रहा है। स्वामित्व योजना के माध्यम से 45 लाख 60 हजार के लक्ष्य के करीब पहुँच चुके हैं। मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना में लगभग 7 लाख प्रकरणों में साढ़े छह हजार करोड़ रुपये की सहायता राशि दी जा चुकी है। पिछले वर्ष 2025-26 में 51 हजार 899 हितग्राहियों को मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना और 28 हजार 362 हितग्राहियों को मुख्यमंत्री निकाह योजना का लाभ दिया गया। अनुसूचित जनजाति वर्ग के बजट में 26 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी की गई। तेंदूपत्ता संग्राहकों का पारिश्रमिक 3 हजार रुपये प्रति बोरा से बढ़ाकर 4 हजार रुपये कर दिया गया है। पीएम जनमन योजना का लाभ बड़ी संख्या में हितग्राहियों को मिल रहा है। अनुसूचित जाति और पिछड़ा वर्ग कल्याण के लिए भी इसी गति से सरकार कार्य कर रही है।

भारतीय जनता पार्टी सामाजिक समरसता और अंत्योदय की राजनीति में विश्वास करती है। प्रदेश कार्यसमिति अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्गों, घुमंतू एवं विमुक्त समुदायों तथा समाज के प्रत्येक वंचित वर्ग के सम्मान, अवसर और अधिकारों के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराती है।

अधो संरचना विकास

मध्यप्रदेश देश में अब बेहतरीन सड़कों के लिए जाना जाता है। लगातार छोटी-बड़ी सड़कों से लेकर एक्सप्रेस हाइवे भी बनाए जा रहे हैं। प्रदेश में 5 लाख किलो मीटर सड़कों का जाल बिछ चुका है,जो कि देश का चौथा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क है। अगले पाँच वर्षों में 1 लाख किलो मीटर सड़कों का निर्माण होगा। बीते दिनों 4 हजार 4 सौ करोड़ रुपये की लागत से 8 राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास हुआ, जो मध्य भारत और बुंदेलखंड के लिए बड़ी उपलब्धि है। 3 हजार करोड़ रुपये की लागत से इंदौर-उज्जैन ग्रीन फील्ड नॉन-एलिवेटेड मार्ग के निर्माण का कार्य शुरू हुआ है। मुख्यमंत्री मजरा-टोला सड़क योजना और मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के माध्यम से दूरस्थ गाँवों में रहने वाले ग्रामीणों को भी सड़क सुविधा का लाभ देने का लक्ष्य सरकार ने लिया है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में 20 हजार किलोमीटर सड़क और 1200 पुलों का निर्माण 31 मार्च 2031 तक किया जा रहा है। आगामी वर्ष 2028 और 2029 तक नर्मदा प्रगति पथ, विंध्य एक्सप्रेस वे, मालवा-निमाड़ विकास पथ, अटल प्रगति पथ, बुंदेलखंड विकास पथ और मध्य भारत विकास पथ प्रदेश और देश के विकास को नए आयाम देंगे। प्रदेश के समस्त नगरीय निकायों में अधोसंरचना विकास के लिए मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना विकास योजना के पंचम चरण हेतु 5 हजार करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई है।

रीवा, दतिया और सतना हवाई अड्डों के लोकार्पण के बाद मध्यप्रदेश में हवाई अड्डों की संख्या 8 हो गई है। ग्वालियर में सबसे कम समय में बनकर तैयार हुए मध्यप्रदेश के सबसे बड़े राजमाता विजया राजे सिंधिया एयरपोर्ट का उद्घाटन किया गया।

मध्यप्रदेश में पिछले बजट में रेल अधो संरचना के लिए 14 हजार 745 करोड़ रुपये दिए गए हैं। इंदौर-मनमाड़ रेलवे लाइन परियोजना का कार्य प्रगति पर है, जो मालवा-निमाड़ को लाभान्वित करने वाली है। लगभग डेढ़ दर्जन जिलों से वंदे भारत ट्रेन गुजरकर लाभ दे रही है। इसी प्रकार विभिन्न छोटी-बड़ी 364 रेल परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है। अमृत स्टेशनों का लोकार्पण किया जा रहा है और नए चरण में नए स्टेशनों को भी शामिल किया जा रहा है। इंदौर और भोपाल में मेट्रो सेवा शुरू हो चुकी है।

नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में मध्यप्रदेश तेजी से विकास कर रहा है। रीवा, ओंकारेश्वर, मुरैना, आगर और नीमच की परियोजनाएँ उल्लेखनीय हैं। मध्यप्रदेश का लक्ष्य है कि वर्ष 2030 तक 50 प्रतिशत ऊर्जा खपत नवकरणीय स्रोतों से हो, वर्ष 2027 तक 10 हजार मेगावाट के नवकरणीय पार्क बनें और 10 हजार मेगावाट हरित ऊर्जा

का अन्य राज्यों को निर्यात हो। मध्यप्रदेश ग्रीन सिटिज और ग्रीन जोन की अवधारणा पर कार्य कर रहा है। साँची और खजुराहो में पायलट प्रोजेक्ट प्रारंभ किए गए हैं। आगामी वर्ष 2030 तक सभी सरकारी कार्यालयों, धरोहर शहरों और प्रमुख संस्थानों द्वारा नेट जीरो एनर्जी फुटप्रिंट हासिल करने का लक्ष्य है। मध्यप्रदेश में देश का पहला विद्युत एवं नवकरणीय ऊर्जा उपकरण विनिर्माण क्षेत्र विकसित हो रहा है।

मध्यप्रदेश महानगरीय विकास में भी क्रांतिकारी कार्य कर रहा है। मध्यप्रदेश महानगर क्षेत्र नियोजन एवं विकास अधिनियम 2025 को स्वीकृति दी गई, जिसमे इंदौर, उज्जैन, भोपाल, जबलपुर और ग्वालियर को मेट्रोपॉलिटन सिटी बनाया जाएगा। अभी दो मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र विकसित होंगे-पहला इंदौर-उज्जैन-देवास-धार और दूसरा भोपाल-सीहोर-रायसेन-विदिशा-ब्यावरा। अधो संरचना विकास को गति देते हुए द्वारका योजना के तहत आगामी तीन वर्षों में 5 हजार करोड़ रुपये की राशि से शहरों का विकास किया जा रहा है। कुल मिला कर कहा जाए तो प्रदेश की भाजपा सरकार सर्वाधिक पूँजीगत व्यय करने वाली सरकार है, जिसकी उत्पादकता और पुनरुत्पादकता अधिक है।

महिला सशक्तिकरण

लाड़ली बहना योजना पर कटाक्ष और व्यंग्य कसने वाली कांग्रेस को लगातार करारा जवाब देने का कार्य माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने किया है। न केवल यह योजना सुचारु रूप से चलाई जा रही है, बल्कि क्रमशः राशि की वृद्धि भी भाजपा सरकार कर रही है। भारतीय जनता पार्टी का विश्वास है कि महिला सशक्तिकरण केवल किसी योजना का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का आधार है। लाड़ली बहना जैसी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक संबल देने के साथ-साथ सरकार द्वारा महिला सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास और स्वावलंबन पर निरंतर कार्य किया जा रहा है। नारी शक्ति केवल हितग्राही नहीं, बल्कि विकसित मध्यप्रदेश की नेतृत्वकारी शक्ति है।

प्रदेश में 14 वर्ष की बेटियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए 471 केंद्रों पर एचपीवी टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है। सरकारी नौकरियों में महिलाओं का आरक्षण बढ़ा कर 35 प्रतिशत कर दिया गया है। 5 लाख स्व-सहायता समूहों के माध्यम से 62 लाख ग्रामीण बहनें आत्मनिर्भर बनी हैं। आंगनवाड़ी एवं मिनी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को

प्रधानमंत्री जी वन ज्योति बीमा एवं प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना का लाभ देने का निर्णय किया गया है।

छात्रों एवं युवाओं के व्यापक हित में भाजपा सरकार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू करने वाला देश का पहला राज्य मध्यप्रदेश बना है। शिक्षा विकास के बजट में 11 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। प्राथमिक विद्यालयों में ड्रॉपआउट दर शून्य हुई है, जो मध्यप्रदेश की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रदेश में नवाचारयुक्त, आधुनिक एवं सर्वसुविधा संपन्न सांदीपनि विद्यालयों के लिए 3892 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया, जिनमें से 369 विद्यालयों का संचालन प्रारंभ हो गया है। प्रदेश में स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए 730 स्कूलों को 530 करोड़ रुपये की राशि से पीएमश्री स्कूलों के रूप में विकसित किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हर जिले में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का प्रयोग सफलता सिद्ध कर रहा है। प्रदेश सरकार ने जनजातीय नायकों और स्वतंत्रता आंदोलन के महानायकों को पाठ्यक्रम में शामिल करने का निर्णय लिया है। महाविद्यालयों के लिए 2000 से अधिक पद सृजित किए गए। शासकीय महाविद्यालयों में कृषि को एक विषय के रूप में जोड़ा गया है। पायलट ट्रेनिंग के लिए विश्वविद्यालयों में प्रावधान किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना के अनुसार सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है।

सभी सरकारी विभागों में सरकारी भर्ती जारी है। प्रदेश के स्टार्टअप को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में सहभागिता के लिए डेढ़ लाख रुपये तक की आर्थिक मदद दी जा रही है। राज्य स्तरीय रोजगार दिवस के अवसर पर 7 लाख युवाओं को 5 हजार करोड़ रुपये का स्वरोजगार ऋण दिया गया है। अग्नि वीर योजना में प्रदेश के अधिक से अधिक युवाओं का चयन हो, इस हेतु 360 घंटे के प्रशिक्षण का प्रावधान किया गया है। प्रदेश के सभी 55 जिलों में खेल स्टेडियम बनाए जा रहे हैं, पैरा ओलंपिक के खिलाड़ियों के लिए कुल एक करोड़ रुपये की सम्मान राशि निर्धारित की गई है तथा विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के माध्यम से खिलाड़ियों को प्रोत्साहन एवं सुविधाएँ लगातार उपलब्ध कराई जा रही हैं।

स्वास्थ्य की गारंटी : भाजपा सरकार

मध्यप्रदेश में शासकीय मेडिकल कॉलेजों की संख्या 14 से बढ़कर 19 हो गई है और निजी मेडिकल कॉलेज 12 से बढ़कर 14 हो गए हैं। इस कारण अब एमबीबीएस की 5550 और पी जी की 28 62 सीटें उपलब्ध हैं। वहीं दूसरी ओर आयुष्मान भारत योजना माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के सपने को साकार कर रही है। अब तक 4 करोड़ 43 लाख आयुष्मान कार्ड वितरित हुए और 58 लाख से अधिक रोगियों का निःशुल्क उपचार हुआ। सिकल सेल उन्मूलन में मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। प्रदेश में शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालयों की संख्या एक वर्ष में 7 से बढ़कर 15 हो गई है। बालाघाट में जनजातीय कार्य विभाग के सहयोग से बन रहा औषधीय वनस्पति शोध केंद्र दुनिया में अपनी पहचान और स्थान बनाने वाला है। 12 जिलों में 30 बिस्तरीय चिकित्सालयों का संचालन सुचारु किया जा रहा है। 800 आयुष औषधालयों को आयुष्मान आरोग्य मंदिर बनाया गया है।

विरासत से विकास के पथ पर

विभिन्न महापुरुषों के स्मरणीय दिवसों पर अलग-अलग स्थानों में प्रदेश सरकार की कैबिनेट बैठक के आयोजन से महापुरुषों के संदेश को समाज में पुनः स्मरण कराने का कार्य किया गया। प्रदेश में बड़े स्तर पर हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पर्व एवं त्यौहार मनाए जा रहे हैं। हर विकास खंड में एक वृंदावन गाँव और नगरों में गीता भवन बनाने का निर्णय हो या चित्रकूट विकास प्राधिकरण की स्थापना-यह बताता है कि मध्यप्रदेश केवल भौगोलिक प्रदेश नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना की महत्वपूर्ण भूमि है। भारतीय जनता पार्टी मानती है कि विकास और विरासत परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। पिछले एक वर्ष में 13 करोड़ से अधिक पर्यटक मध्यप्रदेश आए हैं, जो किसी भी राज्य की तुलना में बहुत अधिक है। सांस्कृतिक राजधानी उज्जैन में इस वर्ष 139 दिनों तक विक्रमोत्सव चला। सम्राट विक्रमादित्य के सम्मान में देश का सबसे प्रतिष्ठित अलंकरण सम्मान स्थापित हुआ है। देश के कई शहरों में विक्रमादित्य महानाट्य का मंचन हुआ। माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के करकमलों

से विक्रमोत्सव के अवसर पर विश्व की पहली विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का शुभारंभ कर भारतीय काल गणना का साक्षात्कार पूरी दुनिया से कराया गया। मध्यप्रदेश की तीन सांस्कृतिक परंपराएँ- भील जनजाति का भगोरिया नृत्य, गोंड चित्रकला और नर्मदा परिक्रमा-भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की राष्ट्रीय सूची में शामिल की गई हैं।

धार स्थित भोजशाला परिसर में भव्य सरस्वती लोक बनाया जाएगा। धार में राजा भोज शोध संस्थान की भी स्थापना की जाएगी। विधि सम्मत तरीके से विदेश से वाग्देवी की प्रतिमा लाने का प्रबंध भी किया जाएगा।

समान नागरिक संहिता विधेयक का अभिनंदन

माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार ने समान नागरिक संहिता विधेयक विधानसभा में पारित कर एक अभूतपूर्व उपलब्धि प्राप्त की है। समान नागरिक संहिता का संकल्प जनसंघ से लेकर लगातार भारतीय जनता पार्टी का रहा है। यह प्रदेश कार्यसमिति माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी एवं प्रदेश भाजपा सरकार का अभिनंदन करती है। समान नागरिक संहिता केवल कानून में समानता का विषय नहीं, बल्कि महिलाओं के अधिकार, गरिमा और न्याय का विषय है। यह विधेयक विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और अन्य पारिवारिक मामलों में समान कानूनी ढाँचे की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

सिंहस्थ 2028

दुनिया की प्रतिष्ठित धार्मिक एवं आध्यात्मिक परंपरा का अनुपम उदाहरण सिंहस्थ 2028 में होने वाला है। माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में प्रदेश की भाजपा सरकार सिंहस्थ की सेवा में जुटी है। इस सिंहस्थ की तैयारी में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी जा रही है। मध्यप्रदेश का प्रसिद्ध कुंभ सिंहस्थ यूनेस्को की सूची में शामिल है। इस सिंहस्थ से दुनिया भारत के आध्यात्मिक वैभव को देखकर प्रभावित होने वाली है। बढ़ती संख्या के अनुमान पर क्राउड मैनेजमेंट तथा साधु-संतों और श्रद्धालुओं का ध्यान रखते हुए विभिन्न विकास कार्य किए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय गौरव-वंदेमातरम्

वंदेमातरम् के150वें वर्ष में केंद्र व राज्य सरकारों के विविध आयोजन हुए। केंद्र ने वंदेमातरम् को पुनः छह छंदों में गाने का प्रावधान किया। संसद में राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण विधेयक में संशोधन कर वंदेमातरम् के अपमान पर भी सजा का प्रावधान किया। जिस वंदेमातरम् को गाते हुए पूरा भारत एक हो कर अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहा था, कांग्रेस ने उसी वंदेमातरम् को तुष्टीकरण की राजनीति के कारण 1937 में छह छंदों से दो छंदों में कर डाला और मोहम्मद अली जिन्ना के आगे घुटने टेक दिए। इस विभाजनकारी मानसिकता ने भारत का विभाजन तक कर दिया। स्वतंत्र भारत में भी वंदेमातरम् को वह स्थान व सम्मान नहीं मिल पाया, जिसका संकल्प लाखों बलिदानियों और करोड़ों नागरिकों ने व्यक्त किया था। दुर्भाग्य है कि कांग्रेस भारत के संविधान और संसद के निर्णय की अपेक्षा अपनी सीडब्ल्यूसी के 1937 के निर्णय की दुहाई दे रही है। कारण बहुत स्पष्ट है कि कांग्रेस में वही विभाजनकारी मानसिकता और तुष्टीकरण की राजनीति विद्यमान है।

कांग्रेस का नकारात्मक रवैया

लगातार केंद्र में और राज्य में सरकार में रहते हुए भारतीय जनता पार्टी विकास और विरासत के साथ प्रदेश को आगे ले जा रही है, तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस विपक्ष के रूप में घृणित और विकृत रूप अपनाए हुए है। कई बार ऐसा लगता है, मानो वह प्रतिपक्ष न हो कर देश व समाज के विरोध में ही खड़ी हो चली है। राष्ट्रीय महापुरुषों के अपमान से लेकर अब लगातार सनातन और उस पर आस्था रखने वालों पर भी चोट कर रही है। सिद्धांतहीन, अवसरवादी और समाज घाती कांग्रेस की यह राजनीति सामान्य समाज के लिए चुनौती का कारण बन गई है। पिछले मानसून सत्र में संसद में कांग्रेस का रवैया न केवल हठधर्मी था, बल्कि भारत के संसदीय लोकतंत्र के लिए शर्मिंदा करने वाला भी रहा है। लोकसभा और राज्यसभा में विरोध, नारे बाजी तक ही नहीं, बल्कि फूहड़ प्रदर्शन और विकृत नारे अपनी कर्कश आवाजों में संसद की मर्यादा को तार-तार करते हुए नजर आए। कांग्रेस के हठी, अपरिपक्व और षड्यंत्रकारी शक्तियों की गिरोह बंदी में लिप्त नेतृत्व के कारण संसद में चर्चा नहीं, हुड़दंग और संवाद नहीं, संघर्ष दिखाई दिया।

मध्यप्रदेश में कांग्रेस मुद्दाविहीन है। नेतृत्व की चाटुकारिता में लगातार प्रदेश के हित की अपेक्षा नकारात्मक विपक्ष के रूप में अपना रवैया बनाए हुए है। आपस में गुटबाजी से ग्रस्त कांग्रेस के पास आज तक अपना कोई वैकल्पिक एजेंडा नहीं रहा है। झूठे और तथ्यहीन बातों पर राजनीति करना और प्रदेश को बदनाम करना उनका शगल बन गया है। राजनीति से ऊपर उठकर जिस केन-बेतवा परियोजना का अभिनंदन कई लोगों ने किया और बुंदेलखंड की बरसों की समस्या के समाधान के रूप में देखा, उसी परियोजना का विरोध कांग्रेस कर रही है। यह विरोध बुंदेलखंड की खुशहाली और समृद्धि का विरोध है, जो कि वामपंथी षडयंत्रकारी चंगुल में फँसे नेतृत्व से उपजा है। भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश कार्यसमिति कांग्रेस के इस रवैये की भर्त्सना करती है और स्पष्ट आरोप लगाती है कि सूखा, पिछड़ेपन और पलायन के लिए मजबूर बुंदेलखंड की दोषी कांग्रेस आज भी उसे समृद्धि के मार्ग पर जाने से रोकने का कार्य कर रही है।

कांग्रेस बार-बार तथ्य के स्थान पर राजनीतिक आरोप, विकास के स्थान पर नकारात्मकता, नीति के स्थान पर भ्रम और जनहित के स्थान पर राजनीतिक स्वार्थ को प्राथमिकता देती दिखाई देती है। प्रदेश कार्यसमिति कांग्रेस से पूछना चाहती है-क्या केवल सरकार का विरोध ही विपक्ष की राजनीति है?

संकल्प

भारतीय जनता पार्टी, मध्यप्रदेश के माननीय प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी की अध्यक्षता में प्रदेश कार्यसमिति यह संकल्प लेती है कि भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश को गरीबी से मुक्त, रोजगारयुक्त, कृषि-संपन्न, औद्योगिक रूप से मजबूत, तकनीकी रूप से सक्षम, महिला-सशक्त, युवा-ऊर्जावान, सामाजिक रूप से समरस, सांस्कृतिक रूप से गौरवशाली और सुशासन आधारित विकसित प्रदेश बनाने के लिए पूर्ण शक्ति के साथ कार्य करेगी।

हमारा लक्ष्य मात्र चुनाव जीतना नहीं है। हमारा लक्ष्य है-मध्यप्रदेश के प्रत्येक नागरिक का भरोसा जीतना। हमारा संकल्प है-ऐसा शासन देना, जिस पर मध्यप्रदेश की जनता गर्व करे। हमारा उद्देश्य केवल विकास के आँकड़े बढ़ाना नहीं है। हमारा उद्देश्य है-विकास का लाभ अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुँचाना। प्रदेश कार्यसमिति प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के ''विकसित भारत 2047'' के संकल्प के साथ कदम से कदम मिलाते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण का संकल्प दोहराती है।

अंत्योदय से आत्मनिर्भरता तक,
सुशासन से समृद्धि तक,
संस्कृति से स्वाभिमान तक,
और मध्यप्रदेश से विकसित भारत तक -
भारतीय जनता पार्टी का यह संकल्प
निरंतर आगे बढ़ेगा।
वंदेमातरम्। ■

लक्ष्य अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना - हेमंत खण्डेलवाल

- **समरसता संकल्प अभियान संत रविदास जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचा रहा है।**
- **किसानों तक योजनाओं का लाभ और सरकार की उपलब्धियां पहुंचाने में कार्यकर्ता प्रभावी भूमिका निभाएं।**
- **युवा भारत का भविष्य, युवाओं तक पहुंचाएं संगठन व सरकार के कार्य।**
- **युवा कल की ताकत, उन तक सही जानकारी पहुंचाना सभी का दायित्व।**
- **युवाओं का भविष्य संवारने के लिए खुद को समर्पित करें, समाज में स्वीकारोक्ति बढ़ेगी।**
- **गरीब, वंचित की आर्थिक प्रगति भाजपा की प्राथमिकता।**
- **किसानों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करना संगठन की जिम्मेदारी।**

कांग्रेस ने बाबा साहब अंबेडकर का हमेशा अपमान किया, भाजपा ने सम्मान दिया।

किसानों की आवाज बनकर संगठन और सरकार के बीच मजबूत कड़ी का काम करे किसान मोर्चा।

सभी मोर्चे संगठन को मजबूत करने के साथ केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। कांग्रेस ने संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का हमेशा अपमान किया है, भाजपा ने उन्हें सम्मान दिया है। समरसता संकल्प अभियान संत रविदास जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचा रहा है। किसान मोर्चा के कार्यकर्ता किसानों की आवाज बनकर संगठन और सरकार के बीच मजबूत कड़ी का काम करें। कार्यकर्ता किसानों तक योजनाओं का लाभ और सरकार की उपलब्धियां पहुंचाने में प्रभावी भूमिका निभाएं। युवा भारत के भविष्य हैं। सभी युवा कार्यकर्ता आने वाले समय में देश का नेतृत्व करेंगे। तथ्यों के साथ युवाओं के बीच जाएं और तुलनात्मक जानकारी देकर युवाओं को संगठन से जोड़ें और सरकार के कार्य उन्हें बताएं। युवा कल की ताकत हैं, उन तक सही जानकारी पहुंचाना सभी का दायित्व है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि सभी पात्र व्यक्तियों तक योजनाओं का लाभ पहुंचे और वह आर्थिक रूप से सशक्त बने।

भाजपा का हर कार्यकर्ता संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का सम्मान करते हैं, वहीं कांग्रेस ने बाबा साहब को चुनाव में हराने से लेकर उनकी उपेक्षा करने तक का काम किया। भाजपा ने हमेशा बाबा साहब के विचारों और संविधान के प्रति सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। केंद्र में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार रही हो या प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार, भाजपा ने हमेशा समाज के गरीब, वंचित और पिछड़े वर्गों की आर्थिक प्रगति और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए काम किया है। मध्यप्रदेश में पहले भाजपा की सरकारों ने और अब मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार हर वर्ग और हर क्षेत्र के विकास को प्राथमिकता देते हुए लोगों को मजबूत बनाने का काम कर रही है। वर्ष 2003 के पहले मध्यप्रदेश में सड़क, बिजली और ग्रामीण बुनियादी सुविधाओं की स्थिति क्या थी, यह पुरानी पीढ़ी अच्छी तरह जानती है। भाजपा सरकारों के कार्यकाल में बिजली व्यवस्था में सुधार, गांवों को सड़कों से जोड़ने और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए बड़े स्तर पर काम हुआ। भाजपा सरकार ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क

योजना से ऐसे अनेक गांवों को मुख्य मार्गों से जोड़ा, जो पहले जिला मुख्यालयों से भी कटे रहते थे। संत शिरोमणि रविदास महाराज की 650वीं जयंती के अवसर पर भाजपा द्वारा देशभर में चलाया जा रहा समरसता संकल्प अभियान सामाजिक एकता और समरसता का व्यापक संदेश दे रहा है। संत रविदास जी के विचारों और उनके संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए भाजपा संगठन द्वारा यात्राएं और विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। विपक्षी दलों ने संत रविदास जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने और सामाजिक समरसता का संदेश देने के लिए इस तरह का कोई अभियान क्यों नहीं चलाया। युवा पीढ़ी जब सवाल पूछे, तो कार्यकर्ता उन्हें हमारी सरकारों के कार्यों और उपलब्धियों की जानकारी तथ्यों के आधार पर दें, ताकि वे हर बात को सही ढंग से समझ सकें। समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चलें और संगठन तथा समाज के बीच मजबूत सेतु की भूमिका निभाएं।

मध्यप्रदेश सरकार ने वर्ष 2026 को 'किसान वर्ष' घोषित किया है। पिछला वर्ष उद्योगों को समर्पित था, जबकि इस वर्ष किसानों के हित, कल्याण और सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी जा रही है। ऐसे में किसान मोर्चा की भूमिका और जिम्मेदारी और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। किसान मोर्चा किसानों की आवाज बनकर संगठन और सरकार के बीच महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करता है। हमारा प्रयास है कि सरकार और संगठन की योजनाओं, निर्णयों एवं उपलब्धियों की जानकारी प्रदेश के प्रत्येक किसान तक पहुंचे। किसान मोर्चा लंबे समय से किसानों के हितों और उनकी समस्याओं को लेकर सक्रियता से कार्य करता रहा है और आने वाले समय में भी उसे इसी प्रतिबद्धता के साथ अपनी भूमिका निभानी होगी। किसान मोर्चा कार्यकर्ता गांव-गांव और किसानों के बीच संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं को समझें और पुख्ता आंकड़ों व तथ्यों के साथ अपनी बात रखें। भाजपा सरकार द्वारा किसानों के हित में किए गए कार्यों और उपलब्धियों की सही जानकारी आमजन तक पहुंचाने से जनता का भाजपा के प्रति विश्वास और मजबूत होगा। वर्ष 2003 से पूर्व कांग्रेस शासनकाल में मध्यप्रदेश में सिंचाई का रकबा सिर्फ साढ़े सात लाख हेक्टेयर था, लेकिन भाजपा की सरकार बनने के बाद सिंचाई के क्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ है और सिंचाई का रकबा वर्तमान में 55 लाख हेक्टेयर पहुंच गया है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से किसानों को प्राकृतिक आपदाओं और फसल नुकसान की स्थिति में आर्थिक सुरक्षा मिली है। किसानों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करना संगठन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। भाजपा सरकार ने किसानों के लिए बाजार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराए हैं। खुला बाजार मिलने से किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त करने और अधिक लाभ कमाने के अवसर मिले हैं। किसान मोर्चा इन उपलब्धियों को किसानों और आमजन तक पहुंचाने के साथ ही किसानों के हित में निरंतर सक्रिय रहकर अपनी जिम्मेदारी का प्रभावी निर्वहन करें।

युवा मोर्चा के कार्यकर्ता देश और मध्यप्रदेश के युवाओं का भविष्य संवारने के लिए खुद को समर्पित करें, तभी समाज में आप की स्वीकारोक्ति और बढ़ेगी। समाज में सकारात्मक तथ्य पहुंचाएं, नकारात्मकता बहुत समय तक नहीं चलती। समाज में सकारात्मक मुद्दों को लेकर राजनीति करने वाले, कार्य करने वाले आज भी याद किए जा रहे हैं और जिन्होंने नकारात्मकता को बढ़ावा दिया, नकारात्मकता को अपनी राजनीति का जरिया बनाया, उन्हें आज कोई याद नहीं करता। भाजपा हमेशा राष्ट्र प्रथम के साथ सकारात्मकता को लेकर चलने वाली पार्टी है, इसलिए आज दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक दल बन सकी। हमें सभी समाज वर्ग को साथ लेकर उनके हितों के लिए कार्य करना है। आज के युवा सोशल मीडिया फ्रेंडली हैं, विरोधी दल इसका फायदा उठाते हैं। विपक्षी दल सोशल मीडिया के जरिए भाजपा सरकारों के खिलाफ माहौल बनाने का प्रयास करते रहते हैं, इसलिए युवा मोर्चा के कार्यकर्ता आंकड़ों व तथ्यों के साथ युवाओं तक जानकारी पहुंचाएं। युवा मोर्चा कार्यकर्ता जनता को और युवाओं को बताएं कि वर्ष 2003 में भाजपा की सरकार बनने से पहले सिंचाई का रकबा सिर्फ साढ़े सात लाख हेक्टेयर था, जिसे भाजपा सरकार ने 55 लाख हेक्टेयर तक पहुंचाया है और एक लाख तक पहुंचाने का लक्ष्य लेकर कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार रोजगार, निवेश, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, स्व-रोजगार, के साथ सड़क, बिजली, पानी को लेकर ऐतिहासिक कार्य कर रही हैं। भाजपा सरकार की उपलब्धियां मोर्चा कार्यकर्ता युवाओं तक पहुंचाएं और उन्हें संगठन से जोड़ने के साथ संगठन को मजबूती देने के लिए कार्य करें। ▪

एकता और अखंडता के साथ समझौता अस्वीकार -डॉ. महेन्द्र सिंह

तिरंगा भारत की पहचान ही नहीं, बल्कि उसकी शक्ति और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने दुनिया को यह दिखाया है कि 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक शक्ति जब संकल्प में बदलती है, तो कोई भी चुनौती बड़ी नहीं रहती। आज भारत अपनी सीमाओं की रक्षा करने में सक्षम है, अपने राष्ट्रीय हितों पर दृढ़ता से निर्णय लेता है और वैश्विक मंच पर पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखता है। तिरंगा यात्रा देश के वीर जवानों के शौर्य को नमन करने और प्रत्येक नागरिक में राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना को और मजबूत करने का अवसर है।

'वंदे मातरम्' और 'भारत माता की जय' के उद्घोष यह संदेश दे रहे हैं कि देश की एकता और अखंडता के साथ किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत अब केवल संभावनाओं वाला देश नहीं, बल्कि अपनी शक्ति, सामर्थ्य और संकल्प से दुनिया को दिशा देने वाला राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है। तिरंगे के नीचे एकजुट भारत ही नए भारत की सबसे बड़ी पहचान है। ▪

क्रांतिकारियों ने दिलाई आजादी -डॉ. मोहन यादव

महात्मा गांधी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान किया था, जिसने अंग्रेजी हुकूमत की चूलें हिला दी थीं। देश की आजादी के लिए क्रांतिकारियों के बलिदान, संघर्ष और अहिंसक आंदोलनों से जो जन ज्वार खड़ा हुआ, उसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और देश स्वतंत्र हुआ। लंबे संघर्ष और असंख्य बलिदानों से मिली इस आजादी के 15 अगस्त को 80 वर्ष पूर्ण हुऐं। हमें देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को सदैव स्मरण करना चाहिए। उनके योगदान के कारण ही हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं।

देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले सभी शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान से ही भारत को आजादी मिली है। हम देश के सभी वर्गों और नागरिकों के साथ मिलकर आजादी का पर्व मनाएं तथा अपने उत्तरदायित्व का पूरी निष्ठा के साथ पालन करें। हम 'वसुधैव कुटुम्बकम' के मार्ग पर चलें और कामना करें कि हमारा भारत चिर युवा एवं चिर स्वतंत्र रहे। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन के आह्वान पर पूरे देश में तिरंगा यात्राएं निकाली जा रही हैं। उम्मीद है कि पूरे देश में तिरंगा यात्रा के माध्यम से युवा, बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं मिलकर संकल्प करेंगे कि वे आजीवन देश की सेवा करते रहेंगे। ▪

राष्ट्र सर्वोपरि - हेमंत खण्डेलवाल

तिरंगे का सैलाब भारत की अटूट राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय चेतना की ताकत को दर्शाता है। हजारों हाथों में लहराता तिरंगा और 'भारत माता की जय' के गगनभेदी उद्घोष बताते हैं कि देश का नागरिक अपने राष्ट्र के सम्मान और गौरव के लिए पूरी मजबूती के साथ खड़ा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देशवासियों के भीतर आत्मविश्वास जगाया है और दुनिया के सामने भारत की शक्ति का

प्रभाव स्थापित किया है। आज भारत का युवा केवल रोजगार तलाशने वाला नहीं, बल्कि नए भारत के निर्माण में नेतृत्व करने वाला युवा है।

तिरंगा यात्रा का संदेश स्पष्ट है राष्ट्र सर्वोपरि है और भारत की एकता, अखंडता तथा सम्मान से बड़ा कुछ नहीं है। हमें अपने शहीदों के बलिदान को केवल स्मरण नहीं करना है, बल्कि उनके सपनों के भारत के निर्माण के लिए अपने कर्तव्यों का पूरी निष्ठा से निर्वहन करना है। ▪

तिरंगा यात्रा को जन-जन का अभियान बनाएं कार्यकर्ता - अजय जामवाल

तिरंगा यात्रा केवल एक कार्यक्रम नहीं,जन-जन और घर-घर का अभियान है। प्रत्येक कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में आमजन को इस अभियान से जोड़ते हुए उन्हें तिरंगे के गौरव और देश की उपलब्धियों से परिचित कराएं। युवा शक्ति को विशेष रूप से इस अभियान से जोड़कर उनके भीतर राष्ट्र सेवा और राष्ट्र निर्माण की भावना को और मजबूत करने का प्रयास किया जाए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत विश्व पटल पर अपनी नई पहचान बना रहा है। देश की सीमाओं की सुरक्षा से लेकर विकास, गरीब कल्याण, आत्मनिर्भर भारत, महिला सशक्तिकरण और युवाओं के लिए नए अवसर उपलब्ध कराने तक अनेक क्षेत्रों में भारत निरंतर आगे बढ़ रहा है। हमें इन उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने के साथ ही प्रत्येक नागरिक में देश के प्रति गर्व की भावना को और मजबूत करना है। तिरंगा यात्रा किसी एक संगठन या वर्ग का कार्यक्रम नहीं, बल्कि पूरे देश का उत्सव और राष्ट्रभक्ति का पर्व है। तिरंगा हमारा राष्ट्रीय ध्वज होने के साथ-साथ देश की ताकत और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है। तिरंगे के नीचे एकजुट होकर ही एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। असंख्य वीरों के त्याग और बलिदान के कारण आज हम स्वतंत्र भारत में अपने राष्ट्रीय ध्वज को गर्व के साथ फहरा रहे हैं। इसलिए तिरंगे का सम्मान करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। तिरंगा हमें यह संदेश देता है कि देश सबसे पहले है और राष्ट्रहित से बढ़कर कुछ भी नहीं है। ▪

महापुरूषों के विचारों को आचरण में आत्मसात करें - डॉ. मोहन यादव

- **संत रविदास जी की 650वीं जयंती वर्ष को मध्यप्रदेश में श्रद्धा, भव्यता और व्यापक जनभागीदारी के साथ मनाएगी सरकार।**
- **उज्जैन में संत शिरोमणि जी के नाम से गुरूद्वारा का कराया जाएगा निर्माण।**
- **भाजपा संगठन, सरकार और समाज मिलकर संत रविदास जी का जयंती वर्ष मना रहे।**

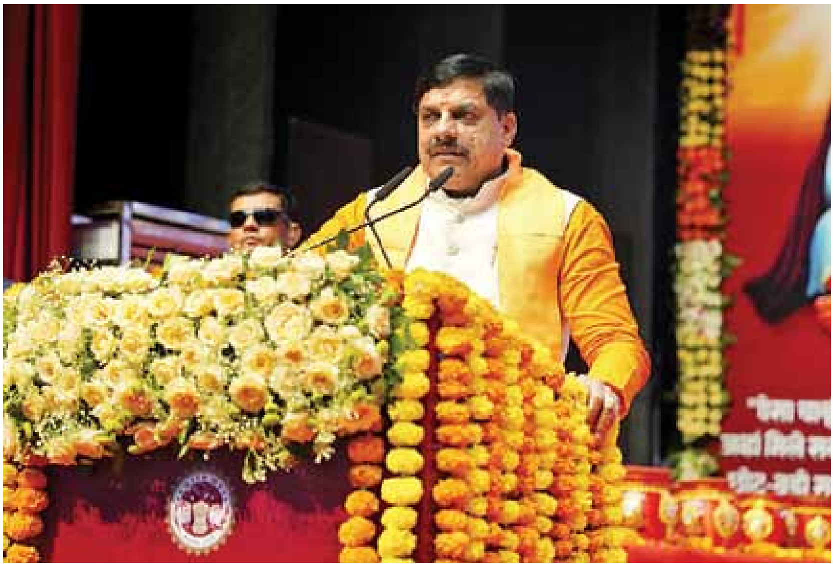

संत शिरोमणि गुरु रविदास जी के संदेश को जीवन में उतारकर सामाजिक समरसता को मजबूत करें।

जातिवाद और छुआछूत की विसंगतियां दूर कर एकजुट समाज का निर्माण हमारा संकल्प।

संत शिरोमणि रविदास महाराज का जीवन सामाजिक समरसता, भक्ति, कर्म और मानवता का अद्भुत संदेश देता है। संत शिरोमणि रविदास महाराज की 650वीं जयंती वर्ष को मध्यप्रदेश में श्रद्धा, भव्यता और व्यापक जनभागीदारी के साथ मनाया जाएगा। सरकार संत रविदास जी के बताए मार्ग को समाज और नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेगी। संत रविदास जी का जीवन हमें सिखाता है कि कर्म और भक्ति दोनों को साथ लेकर चलना चाहिए। संत जी ने कठिन सामाजिक परिस्थितियों में भी मानवता, समानता और भक्ति का मार्ग नहीं छोड़ा। उनका संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके समय में था। संत रविदास जी ने समाज में व्याप्त भेदभाव और विसंगतियों के बीच समरसता का मार्ग दिखाया। आज आवश्यकता है कि जातिवाद, छुआछूत और मन में मौजूद अहंकार जैसी विसंगतियों को दूर कर समाज को एकजुट किया जाए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सामाजिक समरसता और वंचित वर्गों के सम्मान के जिस भाव को आगे बढ़ाया है, वह संत रविदास जी के विचारों से भी जुड़ा हुआ है।

अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण के साथ महर्षि वाल्मीकि के नाम पर एयरपोर्ट का नामकरण और पंजाब में संत रविदास जी के नाम पर विमानतल का नामकरण सामाजिक समरसता और महापुरुषों के सम्मान की भावना को दर्शाता है। यह ऐसा समय है, जब हमें अपने महापुरुषों के विचारों को केवल स्मरण करने के बजाय उन्हें अपने आचरण में उतारने की आवश्यकता है। मध्यप्रदेश के लिए यह गौरव की बात है कि संत रविदास जी की 650वीं जयंती वर्ष के अवसर पर सागर में लगभग 100 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किए जा रहे संत रविदास जी से जुड़े स्मारक एवं तीर्थस्थल का लोकार्पण भव्य रूप से किया जाएगा। हमारे बीच गंगा जल का आगमन भी संत रविदास जी की ''मन चंगा तो कठौती में गंगा'' पवित्र भावना का प्रतीक है, जिसमें मन की पवित्रता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

संत रविदास जी की 650वीं जयंती वर्ष के पूरे कार्यक्रम में सरकार, समाज और भारतीय जनता पार्टी की सभी इकाईयां मिलकर भागीदारी करेंगी। यह आयोजन केवल उत्सव तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि संत रविदास जी के विचारों, उनके कर्मयोग, भक्ति और सामाजिक समरसता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम बनेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में गरीब, वंचित और पिछड़े वर्गों के सम्मान तथा सामाजिक एकता के लिए निरंतर कार्य हो रहा है। मध्यप्रदेश सरकार भी संत-महात्माओं के मार्गदर्शन में समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर विकास और समरसता की दिशा में आगे बढ़ रही है। सभी को संत शिरोमणि रविदास जी के आदर्शों को जीवन में आत्मसात करने और सामाजिक समरसता को मजबूत बनाने का आवश्यकता है। ▪

समरसता अभियान, व्यापक आंदोलन है - हेमंत खण्डेलवाल

- **संत रविदास जी की सामाजिक समरसता भाजपा की विचारधारा का मूल आधार।**

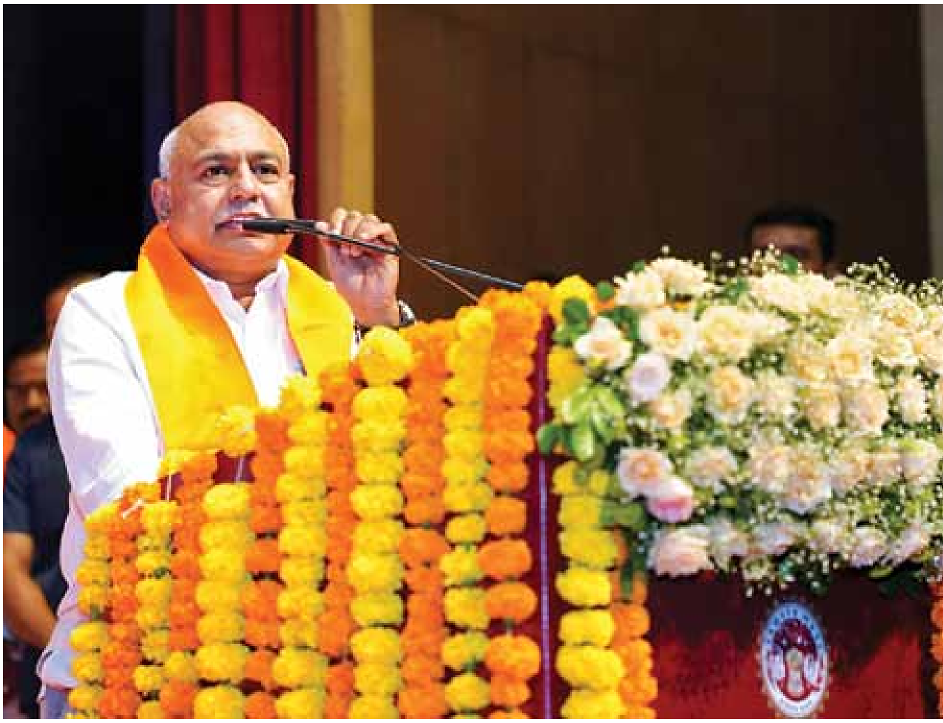

संत रविदास जी के समरसता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाएगी भाजपा।

सात माह तक चलेगा समरसता अभियान, हर गांव, हर समाज तक पहुंचाएंगे संत रविदास जी का संदेश।

संत शिरोमणि रविदास जी महाराज की 650वीं जयंती के अवसर पर प्रारंभ किया जा रहा समरसता संकल्प अभियान केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता का व्यापक आंदोलन है। यह अभियान गुरु पूर्णिमा से प्रारंभ होकर संत रविदास जी की जयंती तक सात माह तक चलेगा। भाजपा कार्यकर्ता इस अभियान को प्रदेश के प्रत्येक जिले, मंडल और गांव तक लेकर जाएंगे। संत शिरोमणि रविदास जी महाराज ने अपने समय में समाज में व्याप्त कटुता और भेदभाव को समाप्त कर समरसता, समानता, सद्भाव और सामाजिक एकता का संदेश दिया था। संत जी ने समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने का मार्ग दिखाया। हम सभी का दायित्व है कि उनके विचारों को केवल स्मरण करने तक सीमित न रखें, बल्कि उन्हें अपने जीवन और सामाजिक व्यवहार में आत्मसात करें। भाजपा सामाजिक समरसता को निरंतर बढ़ावा देती है। पार्टी की मूल भावना ही समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चलने और अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को सम्मान एवं अवसर देने की है। भाजपा कार्यकर्ता संत रविदास जी के बताए मार्ग पर चलते हुए जनता की सेवा और राष्ट्र के परम वैभव के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं।

इस अभियान की शुरुआत गुरु से और समापन भी गुरु के स्मरण के साथ होना संत रविदास जी की महान संत परंपरा के प्रति हमारी श्रद्धा को दर्शाता है। सात माह की अवधि में प्रदेश भर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर संत रविदास जी के जीवन, दर्शन, संघर्ष और सामाजिक समरसता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता इसे जिले से मंडल, मंडल से शक्ति केंद्र और गांव-गांव तक लेकर जाएं। समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ संवाद स्थापित कर संत रविदास जी के समरसता के विचारों को आगे बढ़ाया जाए। संत रविदास जी ने लगभग 650 वर्ष पूर्व समाज को जो संदेश दिया था, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उन्होंने समाज को जाति, ऊंच-नीच और भेदभाव से ऊपर उठकर मानवता तथा समानता के आधार पर एकजुट होने का मार्ग दिखाया। आज जब देश विकसित भारत के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब सामाजिक एकता और समरसता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। भाजपा का स्पष्ट मत है कि जब समाज एकजुट और समरस होगा, तभी राष्ट्र मजबूत होगा। इसलिए भाजपा केवल राजनीतिक संगठन के रूप में नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चलने वाले संगठन के रूप में कार्य कर रही है। संत-महात्माओं ने सदैव समाज को सही दिशा देने का कार्य किया है। भारतीय संस्कृति में संत परंपरा ने समाज को जोड़ने, बुराइयों को दूर करने और मानवता का मार्ग दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संत रविदास जी इसी महान परंपरा के ऐसे संत थे, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी समाज को तोड़ने के बजाय जोड़ने का काम किया। ▪

समरसता अभियान महाअभियान है - दुर्गादास उइके

- **संत रविदास जी की शिक्षाएं सामाजिक समरसता और समानता का मार्ग दिखाती हैं।**

संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज जी केवल संत नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता के संदेश वाहक, मानवता के उपासक और सामाजिक चेतना के महान प्रवर्तक थे। उन्होंने अपनी वाणी और जीवन के माध्यम से समाज को यह संदेश दिया कि ईश्वर की दृष्टि में सभी समान हैं और मनुष्य की वास्तविक महानता उसके आचरण, चिंतन एवं चरित्र से होती है।

सामाजिक समरसता केवल शब्द नहीं, बल्कि भाजपा का संकल्प है। समरसता का अर्थ है कि किसी व्यक्ति को जाति या आर्थिक स्थिति के आधार पर छोटा न समझा जाए और एक-दूसरे के सम्मान को अपना सम्मान माना जाए। गुरु रविदास जी की 650वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 'संत रविदास समरसता संकल्प अभियान' उनके विचारों और वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का महाअभियान है। कलश वितरण के माध्यम से गुरु रविदास जी का प्रेरक संदेश प्रदेश के प्रत्येक जिले और जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। ■

संत रविदास जी ने समानता का संदेश दिया - लाल सिंह आर्य

- **संत रविदास जी के विचार और वाणी जन-जन तक पहुंचाना समरसता संकल्प अभियान का उद्देश्य।**

संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज जी ने सामाजिक समरसता, मानव कल्याण, कर्म की प्रधानता और समानता का संदेश दिया। उनकी 650वीं जयंती मनाने का उद्देश्य केवल जन्म जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित करना नहीं, बल्कि उनके विचारों और वाणी को जन-जन एवं गांव-गांव तक पहुंचाना है। इसी उद्देश्य से 'समरसता संकल्प अभियान' चलाया जा रहा है। यह केवल कार्यक्रमों की श्रृंखला नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता के संकल्प को समाज तक पहुंचाने का महाअभियान है। अभियान की शुरुआत काशी की पावन भूमि से हुई। देशभर में 51 हजार स्थानों पर 'समरसता दीप' प्रज्ज्वलित किए गए तथा संत संपर्क अभियान के माध्यम से विभिन्न

संप्रदायों के संतों से संपर्क एवं संवाद किया जा रहा है। कलश वंदन अभियान के तहत संत रविदास जी की जन्मस्थली की पावन मिट्टी से पूजित कलश प्रदेश के जिलों और मंडलों तक पहुंचाए जाएंगे। जिला मुख्यालयों पर कलश वितरण के बाद मंदिरों में विधि-विधान से कलश स्थापित कर पूजन, भजन एवं संत रविदास जी के जीवन और विचारों से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। पूरे मध्यप्रदेश में कलश वंदन कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसके बाद मंडल और पंचायत स्तर तक कलश की शोभायात्राएं निकाली जाएंगी। अभियान के अगले चरण में छात्रावास संपर्क अभियान के माध्यम से अनुसूचित जाति-जनजाति के छात्रावासों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में युवाओं के बीच संत रविदास जी के जीवन और विचारों को पहुंचाया जाएगा। अभियान के अंतर्गत संत संपर्क, कलश वंदन, छात्रावास संपर्क और समरसता यात्रा सहित विभिन्न कार्यक्रम होंगे। देश के अलग-अलग राज्यों से निकलने वाली उपयात्राएं मुख्य यात्रा में शामिल होंगी। यह सामाजिक समरसता और समाज को जोड़ने का संकल्प है, जो भारत के लिए मील का पत्थर साबित होगा। ■

विकसित भारत संकल्प, जन-जन तक पहुंचाऐं - हेमंत खण्डेलवाल

- **विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में सोशल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण।**
- **युवा सोशल मीडिया को राष्ट्र निर्माण का माध्यम बनाएं।**
- **सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स की भूमिका समाज के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण।**
- **युवाओं की सोशल मीडिया में हर पोस्ट-संदेश में देश के उज्ज्वल भविष्य की झलक दिखनी चाहिए।**

विकसित भारत के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने और इसे जनभागीदारी का व्यापक आंदोलन बनाने में सोशल मीडिया की भूमिका अत्यंत प्रभावशाली है। कार्यकर्ता सोशल मीडिया का उपयोग विकसित भारत के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने में करें। एक पोस्ट, एक वीडियो, एक रील या एक सकारात्मक विचार कुछ ही समय में लाखों लोगों तक पहुंच सकता है। इसलिए सोशल मीडिया के जरिए कार्यकर्ताओं की जितनी पहुंच है, देश को विकसित बनाने में कार्यकर्ताओं की भागीदारी भी उतनी ही बड़ी हो जाती है। सभी कार्यकर्ताओं का प्रयास होना चाहिए कि सोशल मीडिया के माध्यम से सकारात्मकता, राष्ट्र निर्माण, नवाचार, युवा शक्ति, आत्मनिर्भरता और विकास की सोच को आगे बढ़ाया जाए। देश की उपलब्धियों, युवाओं की सफलता, स्टार्ट-अप, तकनीक, शिक्षा, रोजगार, महिला सशक्तिकरण और जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाई जाए।

सोशल मीडिया को समाज को जागरूक करने, जोड़ने और राष्ट्र निर्माण में सहभागी बनाने का माध्यम बनाना है। हर पोस्ट और हर संदेश में भारत के उज्ज्वल भविष्य की झलक दिखाई देनी चाहिए। वर्ष 2047 का विकसित भारत तभी संभव होगा, जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के प्रयासों के साथ समाज की सक्रिय भागीदारी भी सुनिश्चित होगी। इस महान संकल्प को जनआंदोलन बनाने में सभी कार्यकर्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। युवाओं और इंफ्लुएंसर्स मिलकर सोशल मीडिया की शक्ति को सकारात्मक दिशा दें और विकसित, आत्मनिर्भर एवं सशक्त भारत के निर्माण में अपना योगदान सुनिश्चित करें। ▪

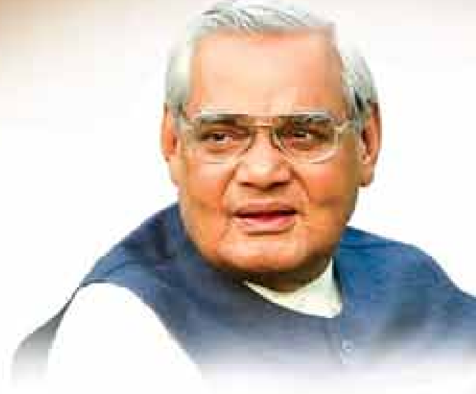

दूर कहीं कोई रोता है

अटल बिहारी वाजपेयी

तन पर पहरा, भटक रहा मन,
साथी है केवल सूनापन,
बिछुड़ गया क्या स्वजन किसी का,
क्रन्दन सदा करूण होता है।

जन्म-दिवस पर हम इठलाते,
क्यों न मरण-त्योहार मनाते,
अंतिम यात्रा के अवसर पर,
आँसू का अशकुन होता है।

अंतर रोये, आँख न रोए,
धुल जाएँगे स्वप्न सँजोए,
छलना भरे विश्व में
केवल सपना ही तो सच होता है।
इस जीवन से मृत्यु भली है,
आतंकित जब गली-गली है।
मैं भी रोता आसपास जब

कोई कहीं नहीं होता है।
दूर कहीं कोई रोता है।

विस्थापन मानव निर्मित भयानक त्रासदी - हेमंत खण्डेलवाल

- **विभाजन की त्रासदी को याद कर राष्ट्र की एकता-अखंडता की रक्षा का संकल्प लें।**
- **आने वाली पीढ़ी को सच्चे इतिहास से परिचित कराना आवश्यक।**
- **सत्ता की लालसा के कारण लाखों लोगों को विस्थापन का दंश झेलना पड़ा।**

जवाहरलाल नेहरू और मोहम्मद अली जिन्ना की सत्ता की लालसा के चलते देश का विभाजन हुआ और लाखों लोगों को अपने घर, व्यवसाय, जमीन-जायदाद और मातृभूमि छोड़कर विस्थापन का असहनीय दर्द झेलना पड़ा। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2021 से 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। इसका उद्देश्य देश की भावी पीढ़ी को विभाजन की त्रासदी, उसके कारणों और उसमें हुए बलिदानों की गौरवगाथा से परिचित कराना है, ताकि युवा पीढ़ी इतिहास के इस काले अध्याय से सीख लेकर राष्ट्र की एकता और अखंडता को और मजबूत करने के लिए संकल्पित हो सके। विभाजन की त्रासदी को स्मरण करना किसी के प्रति वैमनस्य पैदा करना नहीं, बल्कि इतिहास की सच्चाई को समझना और उससे सीख लेना है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियां उस दौर की पीड़ा और बलिदानों से परिचित हों तथा राष्ट्र की एकता, अखंडता और संप्रभुता के प्रति अपने दायित्व को समझें। विभाजन की पीड़ा हमें सदैव राष्ट्र की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए संकल्पित रहने की प्रेरणा देती है।

आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत एक सशक्त, आत्मविश्वासी और एकजुट राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ रहा है। हमें जाति, पंथ, भाषा और क्षेत्र से ऊपर उठकर राष्ट्र हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सामाजिक समरसता और भाईचारे को मजबूत करना है। विभाजन की विभीषिका से हमें यह सीख मिलती है कि देश की एकता और अखंडता सर्वोपरि है तथा इसे कमजोर करने वाली हर चुनौती का मिलकर सामना करना होगा। ▪

भाजपा और मजबूत - हेमंत खण्डेलवाल

- **भाजपा की राष्ट्रीय टीम संगठन को और मजबूती प्रदान करेगी।**

भाजपा के राष्ट्रीय संगठन में नई जिम्मेदारियां प्राप्त करने वाले सभी कार्यकर्ता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी एवं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी के मार्गदर्शन में भाजपा संगठन को और अधिक मजबूती प्रदान करेंगे। उनके अनुभव, कार्यकुशलता और समर्पण से भाजपा की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने तथा संगठन के कार्यों को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। भाजपा का मूल मंत्र 'राष्ट्र प्रथम' है। राष्ट्रीय दायित्व प्राप्त सभी नेता इसी भावना के साथ संगठन और राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

सभी नेता अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से संगठन को बुलंदियों तक पहुंचाते हुए भारत को परम वैभव तक ले जाने के अभियान में प्रभावी योगदान देंगे।

भाजपा के सभी नवनियुक्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों के नेतृत्व, अनुभव और परिश्रम से भारतीय जनता पार्टी का संगठन और अधिक सशक्त होगा तथा पार्टी की विचारधारा और राष्ट्रसेवा का संकल्प समाज के प्रत्येक वर्ग तक और व्यापक रूप से पहुंचेगा। ▪

सभी का सहयोग अत्यावश्यक - हेमंत खण्डेलवाल

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सोच केवल महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनका उद्देश्य ऐसा सशक्त महिला नेतृत्व तैयार करना है, जो आने वाले समय में बिना किसी की सहायता के अपनी योग्यता, क्षमता और मेहनत के दम पर देश और समाज का नेतृत्व करें। पार्टी कार्यकर्ता पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति सहित सभी समाज वर्ग तक भाजपा सरकार की उपलब्धियां पहुंचाएं और संगठन को मजबूत बनाने के लिए कार्य करें।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश की संसद और प्रदेशों की विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का कानून बनाया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार में महिलाओं को नगरीय निकायों व त्रि-स्तरीय पंचायत चुनाव में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है। मध्यप्रदेश में महिलाओं को शासकीय नौकरियों में आरक्षण दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, आवास, गैस कनेक्शन, डिजिटल लेन-देन, स्वच्छता और अन्य क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुआ है। आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं ने गरीब परिवारों को इलाज के लिए बड़ी राहत दी है। आज भारत दुनिया में डिजिटल ट्रांजेक्शन के क्षेत्र में अग्रणी देशों में है और स्वच्छता के क्षेत्र में इंदौर ने देश-दुनिया में पहचान बनाई है। महिलाएं किसी की दया की पात्र नहीं हैं। उन्हें अपने सम्मान, संयम और क्षमता के साथ आगे बढ़ना है। आज के समय में महिलाओं की भूमिका हर क्षेत्र में बढ़ गई है। आज प्रशासन से लेकर राजनीति और व्यवसाय तक महिलाओं की प्रभावी भागीदारी दिखाई दे रही है। पार्टी कार्यकर्ता प्रत्येक समाज और वर्ग की महिलाओं को पार्टी संगठन से जोड़ने का प्रयास करें। समाज और संगठन की मजबूती तभी होगी, जब हर समाज की महिलाओं का प्रतिनिधित्व और सहभागिता सुनिश्चित होगी। आज की युवा पीढ़ी सवाल करेंगी, क्योंकि उन्होंने वह दौर नहीं देखा, जो हमारी पीढ़ी ने देखा है।

हम उनके सवालों का तथ्यों के साथ जवाब देंगे, तो उन्हें देश की विकास यात्रा को समझने में आसानी होगी।

मध्यप्रदेश की पहचान जनजातीय समाज से भी जुड़ी है। मध्यप्रदेश में जनजातीय समाज की बड़ी आबादी निवास करती है। भाजपा सरकारें जनजातीय समाज के लिए अनेकों योजनाएं चला रही हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जनजातीय समाज को सम्मान देने के लिए 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। प्रधानमंत्री आवास योजना में गरीबों को पक्के घर, उज्ज्वला गैस कनेक्शन, आयुष्मान भारत से पांच लाख रुपये तक का उपचार, बैंक खाते और फसल बीमा जैसी सुविधाओं ने ग्रामीण जीवन में बदलाव किया है। भाजपा की डबल इंजन सरकार की उपलब्धियां जनजातीय समाज के लोगों तक पहुंचाकर उन्हें संगठन से जोड़ें। पहले साहूकारों पर निर्भरता और ऊंची ब्याज दरों के कारण किसान परेशान रहते थे, लेकिन सरकार ने कानून बनाया। अब कम ब्याज पर संस्थागत ऋण की सुविधा सरकार मुहैया करा रही है। कार्यकर्ता जनजातीय समाज को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए जनता के बीच जाकर, उसकी संस्कृति और त्योहारों का सम्मान करते हुए काम करें। कार्यकर्ताओं को समाज के बीच रहकर उसकी जरूरतें समझनी चाहिए। कार्यकर्ता को गांवों में पहुंचकर लोगों से सीधे संवाद करना है।

पार्टी ने मध्यप्रदेश में चार मुख्यमंत्री पिछड़ा वर्ग से दिए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा पिछड़ा वर्ग के सभी समाजों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने का कार्य कर रही है। पिछड़ा वर्ग भाजपा के साथ वर्षों से विश्वास व्यक्त करता आ रहा है। भाजपा की सफलता में ओबीसी मोर्चे का महत्वपूर्ण योगदान है। पार्टी इस ऐतिहासिक सफलता को अनवरत बनाए रखने के लिए ओबीसी मोर्चा को सभी समाजों का सहयोग आवश्यक है, इसके लिए कार्यकर्ता गांव-गांव, घर-घर जाएं और भाजपा सरकारों की उपलब्धियां बताने के साथ यह भी बताएं कि वर्ष 2003 से पहले का मध्यप्रदेश कैसा था। पार्टी कार्यकर्ता समाज के युवाओं को पार्टी संगठन से जोड़ने के लिए कार्य करें। इसके साथ ही युवाओं को यह भी बताएं कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के वर्ष 2014 में प्रथम सेवक के रूप में कार्य संभालने से पहले देश की क्या स्थिति थी। वर्ष 2014 के बाद देश सभी क्षेत्रों में कितनी तेजी से तरक्की कर रहा है। युवाओं को गैर भाजपा सरकारों के समय की स्थिति बताना इसलिए भी आवश्यक है, ताकि वह विपक्षी दलों द्वारा फैलाए जा रहे भ्रम और किए जा रहे भ्रामक प्रचार-प्रसार को अच्छी तरीके से समझ सकें। ▪

नशा मुक्त भारत के मिशन से जुड़ने का आव्हान

- **www.bharatrajya.com वेबसाइट पर आप आसानी से जान सकते हैं कि उस समय भारत के किस हिस्से पर किसका शासन था।**
- **बाबा बर्फानी की पवित्र यात्रा में स्वच्छता भी सेवा और आस्था का एक रूप बन गई।**
- **मैथिली जी और देबरीगढ़ की बहनों ने दिखाया है कि प्रकृति की रक्षा भी हो सकती है और जीवन में समृद्धि भी आ सकती है।**
- **कर्नाटक के चिक्कमगलुरु में कुछ किसान भाई-बहनों ने कॉफी प्लांटेशन के बीच एवोकाडो लगाया है।**
- **महानायक उत्तम कुमार जी एक बहुमुखी अभिनेता थे, जो अपने अभिनय से लोगों के दिलों में रच-बस गए।**

'नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत' अभियान इस समय पूरे देश में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

'PM स्वनिधि योजना' के लाभार्थियों में लगभग 46 प्रतिशत महिलाएं हैं।

'मन की बात'

एक ऐसा मंच है जहां हम नए प्रयासों को सामने लाते हैं। देशवासियों के Innovative Ideas पर चर्चा करते हैं। इनमें से कितने ही Ideas ऐसे होते हैं जिनके पीछे लोगों ने जीवन की अथक ऊर्जा लगाई होती है।

कुछ समय पहले social media पर किसी ने लिखा था ''आषाढ़ी एकादशी के पावन अवसर पर मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इतिहास को रोचक बनाने के अपने प्रयास का शुभारंभ कर रहा हूँ।'' ये idea बहुत ही simple है।

आप इस website पर जाएँ और कोई भी एक वर्ष चुन लें। यहाँ आपको आसानी से पता चलेगा कि उस समय भारत के किस हिस्से पर किसका शासन था। मुझे भी यह काफी दिलचस्प लगा। मैंने सोचा कि इसके बारे में और अधिक जानकारी ली जाए। मुझे पता चला कि ये काम मुंबई में रहने वाले श्रीमान कृष्णा शेषाद्री जी ने किया है। मजे की बात ये है कि कृष्णा जी ने website का नाम भी बहुत simple रखा है www.bharatrajya.com उन्होंने जो प्रयास किया है, उसकी जानकारी आप लोगों तक भी जरूर पहुंचनी चाहिए।

इसलिए, मैंने सोचा कि क्यों न सीधे श्री कृष्णा जी से ही बात की जाए।

प्रधानमंत्री : कृष्णा जी नमस्ते।

कृष्णा शेषाद्रीः नमस्ते sir नमस्ते।

प्रधानमंत्रीः भाई, मुझे पता चला है, न आप tech की दुनिया से हो, न आप history teacher हो, फिर भी, आपने technology का प्रयोग करके history की site बना डाली। तो मुझे बहुत उत्सुकता है, ये सब कैसे हुआ?

कृष्णा शेषाद्रीः धन्यवाद sir आपसे बात करके बहुत मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है तो sir मेरे बारे अगर मैं थोड़ा बताऊँ, तो sir मैं एक engineer था, फिर मैंने MBA किया, फिर मैं marketing field में चला गया लेकिन ये सब जब भी करता था तब भी मेरे को बचपन से इतिहास (History) में बहुत interest था। तो I always wanted to do something on History, how to make it interesting and मेरे को ये भी लगता था कि हम जैसे History सिखाते हैं उसमें हम बहुत improvement कर सकते हैं उसमें हम बहुत बदलाव लेकर आ सकते हैं History को एक कहानी बनाकर लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

प्रधानमंत्रीः कृष्णा जी, भारतीय इतिहास का ऐसा कौन-सा पहलू है, जिसके बारे में आपको लगा कि इसकी जानकारी ज्यादा-से-ज्यादा लोगों

को होनी चाहिए।

कृष्णा शेषाद्रीः Sir, अगर हम भारतीय इतिहास जैसे हमारे स्कूलों या कॉलजों में सिखाया जाता है जैसा आप देखते हो वो एक कोई एक empire या कोई एक kingdom उसके दृष्टिकोण से, उसके नजरिए से सिखाया जाता है और वो empires को disproportionate attention भी मिलता है। इस चक्कर में बाकी के बहुत सारे जो हमारे साम्राज्य थे जो महान साम्राज्य थे जैसे cholas, pallavas, karkota dynasty था कश्मीर में Ahoms थे जिन्होंने कम से कम 600 साल असम में अपनी संस्कृति, अपनी values system को बरकरार रखा ये सबके बारे में हम नहीं जानते। तो मैंने सोचा कि कोई ऐसा कोई site बनाएं जो ऐसे महान साम्राज्य को भी लोगों से इनको introduce किया जाए।

प्रधानमंत्रीः कृष्णा जी आप इतनी मेहनत करते हैं, मैं ऐसे ही आपको hypothetical सवाल पूछता हूँ। अगर आपको Indian History के किसी भी तीन लोगों से बातचीत का अवसर मिले, तो आप किनसे बात करना चाहेंगे और क्यों?

कृष्णा शेषाद्रीः हाँ सर, तो पहले मैं बात करूंगा, राजाराजा चोला या राजेन्द्र चोला सर जो चोला साम्राज्य के सबसे most powerful या सबसे important राजाओं में से थे, तो मैं उनसे ये जानना चाहूँगा कि पहले उनको ये vision कैसे आया जैसे उन्होंने बृहदेश्वर temple या गंगईकोंडा चोलपुरम जो बड़े बड़े मंदिर हैं, शिवजी के मंदिर हैं, वो execute करने के लिए वो vision कहाँ से आया वो planning कैसे की, उनको वो thought कैसे आया कि हम ऐसा कुछ बना के जाएं जो अगले हजार या दो हजार साल तक दूसरे लोगों को प्रेरित कर सके। तो वो मुझे उनसे जानना है। और दूसरी जो personality हैं ये actually मेरे हिसाब से Indian history में एक बहुत under rated personality है। सर उनका नाम है हेमू, तो हम उनके बारे में ज्यादा-से-ज्यादा Indian इतिहास में दो या तीन line पढ़ते है। हमको ये नहीं पता है कि वो जो हेमू जो थे वो एक common man थे, एक साधारण इंसान थे, वो एक व्यापारी थे, उधर से उन्होंने एक empire खड़ा किया और वो not only वो एक empire builder थे वो एक military thinker भी थे, military genius थे जिन्होंने अपने carrier में 23 लड़ाईयाँ लड़ीं उसमें से उन्होंने 22 लड़ाईयां जीतीं, तो उनका thought process कैसा था, और वो कैसे एक आम आदमी से इतने बड़े राजा बने, वो उनका वो journey मैं जानने की बहुत दिलचस्पी रखता हूँ सर। और तीसरी जो है ये this is a very interesting personality, she is a women sir, त्रिभुवन महादेवी, तो ये जो है एक ओडिसा में एक kingdom है जिसका नाम था भौमाकारा dynasty तो इनकी भी कहानी बहुत दिलचस्प है। उन्होंने जब 850 ईस्वी के आसपास जो साल में उनके जो neighbor पाला empire ने, इनके empire पर धावा बोल दिया था सर, और इनके राजा जो इनके husband थे वो उस लड़ाई में शहीद हो गए थे। और इसकी वजह से वो empire बहुत छोटा हो गया और उसके जो सरदार थे, उसके जो leaders थे वो empire छोड़कर जाने लग गए थे तो ये जो त्रिभुवन महादेवी जो lady थी इन्होंने वो सरकार संभाली and she became one of the first independent rulers in the history of India और उन्होंने सरकार को not only stabilize किया but इतना उसको powerful बना दिया कि वो अगले सौ साल तक कलिंगा और वो area में राज करते रहे। तो these are three interesting personalities whom I would like to meet in history sir.

प्रधानमंत्रीः कृष्णा जी आपको अब लगता है कि इतिहास को जी रहे हैं। आप पूरी तरह इतिहास में डूब चुके है। देखिये मैंने भी बड़े उत्सुकता के साथ आपकी site देखी है और मुझे सबसे interesting ये लगा कि आपकी site पर एक ऐसा tab है, जहां लोग corrections और suggestions भी दे सकते हैं। ऐसे constructive feedback के लिए open रहना ये अपने आप में बहुत बड़ी बात है। क्या आपको लोगों से सुझाव मिलना शुरू हुआ है क्या? और आप उन पर कैसे काम करते हैं?

कृष्णा शेषाद्रीः हाँ सर इन लोगों से बहुत सुझाव आते हैं सर। सुझाव दो प्रकार के आते हैं। एक सुझाव ऐसे आते हैं जो हमको correction suggest करते हैं - इस प्रदेश में, इस time में, इस राष्ट्र में ये राजा थे या इस time में ये युद्ध हुआ था तो ऐसे कुछ suggestion आते हैं। दूसरे suggestion आते हैं कि आप इस website में ये feature भी डाल सकते हैं या वो feature भी डाल सकते हो तो हमको दोनों प्रकार के suggestion आते हैं तो जैसे अगर हमको ऐसा एक suggestion आए कि इस प्रदेश में, इस राजा ने, इस time पे राज किया था तो हम वो suggestion को लेते हैं, तो हमारे जो sources हैं। जैसे हमको किसी ने suggestion में दिया था कि आपने India को तो दिखा दिया अगर प्रदेश के level पर भी दिखा सकते हैं तो और अच्छा होगा तो हमने वो feature implement किया और फिर हमने दूसरे feature आया था जिसमें हमने एक trump card जैसा बनाया था सारे empire के data statistics दे के ताकि वो बच्चों तक पहुँच सके तो किसी ने एक suggestion दिया था कि उसको आप एक जगह पर लेकर आइए ताकि हम सब download करके हम सब share कर सके तो वो हम feature implement कर रहे हैं। तो हमे इतना जानना important है कि हम गलती करेंगे, हम क्योंकि हम सर्वश्रेष्ठ नहीं हैं और वो जान के ही हमने वो correction का tab लगाया ताकि ये हम सबकी site हो और आगे जाके सारे contributions के हिसाब से हम एक ऐसा site बनाए जो अगले कुछ साल तक इतिहास एक मजेदार subject बनाए।

प्रधानमंत्रीः कृष्णा जी आपने सचमुच में एक बहुत बड़ा काम किया है। अच्छा History के अलावा आपकी कई सारी Hobbies होगी और भी बहुत कुछ करते होंगे आप ?

कृष्णा शेषाद्रीः हाँ, नहीं sir हम थोड़े boring type आदमी हैं sir.

प्रधानमंत्रीः हँसते हुए

कृष्णा शेषाद्रीः हम technology में बहुत दिलचस्पी रखते हैं और इतिहास में रखते हैं और जब अब technology और इतिहास मिल गया इसी में हम डूबे रहते हैं पूरा दिन।

प्रधानमंत्रीः चलिए कृष्णा जी आपको मेरी बहुत-बहुत शुभकामना है आपने एक अच्छी शुरुआत की है और आपका तरीका भी ऐसा है कि लोग जुड़ेंगे।

कृष्णा जी का ये प्रयास सिर्फ इतिहास के विद्यार्थियों को नहीं, ये हम सबको अपने अतीत को रोचक तरीके से जानने में मदद करेगा। आपके पास भी ऐसे प्रयासों के बारे में जानकारी हो, तो उसे जरूर share करें।

'नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत' यह अभियान इस समय पूरे देश में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसका लक्ष्य बिल्कुल साफ है - नशा मुक्त युवा, Drug Free India. बहुत सारे लोग, विशेषकर हमारे युवा बहुत बड़ी संख्या में इसका हिस्सा बन रहे हैं। आखिर यह भारत के युवाओं की health, उनकी happiness और उज्ज्वल

भविष्य के लिए ही हमारा सामूहिक संकल्प है।

नशे की लत सिर्फ एक व्यक्ति को अपने लपेटे में नहीं लेती, इसके दुष्परिणाम पूरे परिवार और समाज को भी झेलने पड़ते हैं। मैं उन लोगों की सराहना करूंगा जो drugs के खिलाफ दूसरों को जागरूक करते हैं और नशे की लत से जूझ रहे लोगों की मदद में आगे आते हैं। नशा मुक्त भारत के लिए क्या आप कोई powerful slogan बना सकते हैं? क्या हमारे young musicians ऐसे songs बना सकते हैं, जिनमें drug free life का message हो? क्या students और theatre groups दिल को छू लेने वाले short plays लिख सकते हैं जिनमें drugs के खतरों के साथ-साथ उनसे बाहर निकलने का रास्ता भी हो। हमारे देश में बेहतरीन content creaters की कमी नहीं हैं। मेरा आग्रह है कि वे अलग-अलग भाषाओं में ऐसा content बनाएं जिससे इस दिशा में समाज को मदद मिले। आप अपने प्रयासों को Hashtag के साथ social media पर भी जरूर share करें। कई बार creative effort formal campaign से ज्यादा असरदार होते हैं। आइए, भारत के युवा को नशे से दूर रखने, नशे से मुक्त रखने - इस पवित्र कार्य में हम सब अपनी भूमिका निभाएं। आप अपने प्रयास को # नशा मुक्त युवा के साथ social media पर भी जरूर share करें।

अगस्त के महीने में हमें हर तरफ देशभक्ति के अनेक रंग देखने को मिलते हैं। इस समय हर व्यक्ति के मन में राष्ट्र-प्रेम की भावना और प्रबल हो जाती है। 'National Handloom Day' और 'भारत छोड़ो आंदोलन' की वर्षगांठ से लेकर विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस इसे खास बनाते हैं। 'स्वतंत्रता दिवस' और 'National Space Day' इसके अवसर तो हर देशवासी को गर्व से भर देते हैं। 'हर घर तिरंगा अभियान' इस भावना को और मजबूत करता है। 'वंदे मातरम्' के डेढ़-सौ वर्ष पूरे होने से यह साल और भी विशेष बन गया है। इस बार 8 करोड़ से अधिक तिरंगा selfie upload की गई और तिरंगे का ये उत्सव केवल भारत तक ही सीमित नहीं रहा - इस साल 'सूर्यपथ तिरंगा' के जरिए हमारा तिरंगा दुनिया-भर की एक अनोखी यात्रा पर निकला। Fiji के सुवा में सूरज की पहली किरण के साथ तिरंगा फहराया गया। इसके बाद Asia, Africa, Europe और फिर America के San Francisco तक Indian Missions और Posts पर तिरंगा लहराता गया। आप कल्पना कर सकते हैं, ये दृश्य कितने अद्भुत रहे होंगे। जैसे-जैसे दुनिया-भर में सूरज आगे बढ़ता गया, वैसे-वैसे भारतीय तिरंगा भी लहराता गया। ऐसे प्रयास समाज को एक सूत्र में पिरोते हैं। इनसे देश के साथ भी हमारा जुड़ाव और गहरा होता है।

हमारे शहरों और कस्बों की सड़कों पर रोज सुबह से शाम तक, लाखों महिलाएं अपने-अपने काम में जुटी रहती हैं। कोई सब्जी बेचती है, कोई फल, कोई चाय का ठेला लगाती है, तो कोई फूल, दिये और पूजा की सामग्री बेचती हैं। कई बार, बस थोड़ी सी पूंजी की कमी, इनके कारोबार को आगे बढ़ने से रोक देती है। लेकिन अब ऐसी लाखों माताओं-बहनों को 'PM स्वनिधि योजना' से नई ताकत मिल रही है। 'महिला सशक्तिकरण' के इस पहलू की उतनी चर्चा नहीं होती, जितनी होनी चाहिए। 'PM स्वनिधि योजना' की लाभार्थियों में करीब 46 प्रतिशत महिलाएं हैं। यानी देशभर में लगभग 35 लाख महिलाएं इस योजना से जुड़कर अपने कारोबार को आगे बढ़ा रही हैं।

गाजियाबाद की बबीता शर्मा जी, इसका बहुत अच्छा उदाहरण है। बबीता जी, पूजा की सामग्री का एक छोटा सा stall लगाती थीं। फूल, दिये, अगरबत्ती, नारियल जैसी चीजें बेचकर, वो अपने परिवार की आजीविका में हाथ बंटाती थीं। मेहनत खूब थी, लेकिन कारोबार बढ़ाने के लिए पूंजी की जरूरत थी। 'PM स्वनिधि' से उन्हें आर्थिक मदद मिली। उन्होंने अपने stall पर सामान बढ़ाया, कारोबार का विस्तार किया। ग्राहक बढ़े, आमदनी बढ़ी और धीरे-धीरे सड़क किनारे का उनका छोटा सा stall एक दुकान में बदल गया।

बेंगलुरू की टी.एस. निनाम्मा जी की मिसाल भी बहुत प्रेरक है। निनाम्मा जी और उनके पति ने मिलकर इडली, डोसा और सांभर बेचने का छोटा सा काम शुरू किया। काम चल पड़ा, लेकिन इसे आगे बढ़ाने के लिए पूंजी की जरूरत थी। निनाम्मा जी को भी 'PM स्वनिधि' से सहयोग मिला। उन्होंने अपनी Cart बेहतर की। सामान थोक में खरीदना शुरू किया और Menu में भी कई नई चीजें जोड़ीं। ग्राहक बढ़े, कमाई बढ़ी और परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर हुई। आज वो अपने तीन बच्चों को बेहतर Education देने में सक्षम हुई हैं।

जब एक महिला का कारोबार बढ़ता है, तो उसके साथ पूरे परिवार का भविष्य आगे बढ़ता है। बच्चों की Education बेहतर होती है, घर की जरूरतें पूरी होती हैं, और महिला के भीतर आत्मविश्वास और मजबूत होता है। यही तो है 'महिला सशक्तिकरण' का एक जीवंत रूप।

स्वच्छता की एक बहुत बड़ी खूबी होती है। जब किसी जगह को स्वच्छ रखने का संकल्प वहां के लोगों का अपना संकल्प बन जाता है, तो बदलाव केवल साफ-सफाई तक सीमित नहीं रहता। इससे उस जगह की पूरी पहचान ही बदल जाती है। देश के अलग-अलग हिस्सों में स्वच्छता के लिए ऐसे प्रयास, हमें निरंतर प्रेरणा देते हैं। उत्तर प्रदेश के रामपुर में एक गांव है- पटवाई। वहां आकाश और रोहन नाम के दो दोस्तों ने देखा कि उनके आसपास का इलाका गंदगी से भर गया है। बस, फिर क्या था, आकाश और रोहन ने कचरे के बैग उठाए और सफाई के लिए निकल पड़े। धीरे-धीरे दूसरे युवा भी उनके साथ जुड़ने लगे। एक Team भी बन गई। जिसका नाम है- 'क्लीन-अप पटवाई'। ये युवा अब तक चार गंगा घाटों को साफ कर चुके हैं। एक टन से अधिक Plastic कचरा हटा चुके हैं। इन्होंने कितने ही तालाबों और सार्वजनिक जगहों की सफाई की है।

इस बार श्री अमरनाथ जी की यात्रा में भी, स्वच्छता और जनभागीदारी की ऐसी ही प्रेरक तस्वीर देखने को मिली। कठिन रास्तों पर, हजारों स्वच्छता कर्मी दिन-रात सेवा में जुटे रहे। इस वर्ष यात्रा के दौरान, 400 Metric टन से ज्यादा कचरे को collect और process किया गया। मुझे इस प्रयास की एक बात विशेष रूप से अच्छी लगी। स्वच्छता के इस अभियान में श्रद्धालु भी भागीदार बने।16 हजार से अधिक यात्रियों ने स्वच्छता का संकल्प लिया। 10 हजार से अधिक यात्रियों को 'Responsible Yatri' Certificate भी दिया गया। यहां एक बहुत अनोखा प्रयोग भी हुआ। यात्रा में घोड़ों और खच्चरों के गोबर को, Biogas में बदला गया और उसी Clean Energy से, 'स्वच्छ ज्योत' प्रज्वलित की गई। यानी बाबा बर्फानी की इस पवित्र यात्रा में, स्वच्छता भी सेवा और आस्था का एक रूप बन गई।

हमारे गाँव हो या शहर, हमारी नदियां हों या तीर्थस्थल। इनकी पहचान हमारे व्यवहार से भी बनती है। और जब स्वच्छता इस व्यवहार में शामिल हो जाती है, उस स्थान की शोभा और बढ़ जाती है।

कभी-कभी हमारा एक छोटा सा शौक, जीवन में एक बड़ी संभावना का रास्ता खोल देता है। नागालैंड के फेक(Phek) जिले की वेसालु पुरो जी की यात्रा भी कुछ ऐसी ही है। वेसालु जी किसान परिवार में पली-बढ़ीं। बचपन से उन्होंने अपने माता-पिता को खेती करते देखा था और उन्हें खुद फूलों से बहुत लगाव था। साल 2021

में उन्होंने इसी शौक के साथ छोटे स्तर पर फूल उगाने की शुरुआत की। धीरे-धीरे उन्हें इसमें एक संभावना दिखाई देने लगी। उन्होंने देखा कि शादी-विवाह हों या फिर अन्य त्योहार, फूलों की मांग हमेशा बनी रहती है। वेसालु जी ने अपने इस शौक को आगे बढ़ाने का फैसला किया। इस सफर में उन्हें स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र से फूलों की वैज्ञानिक खेती की training मिली, फिर उन्होंने केवल एक चौथाई एकड़ जमीन पर, gladiolus के हजारों पौधे लगाए । पहले ही प्रयास में 5 हजार से ज्यादा फूल खिल उठे। ये सफलता वेसालु जी के लिए एक नई शुरुआत बन गई। उन्होंने फूलों की खेती को और आगे बढ़ाया। जो फूल कभी स्थानीय बाजार में रह जाते थे, आज वो नागालैंड से निकलकर दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों तक जा रहे हैं। वेसालु पुरो जी की यात्रा हमें बताती है कि शौक जब मेहनत और सही मार्गदर्शन से जुड़ जाता है, तो वह नई संभावनाओं का रास्ता खोल सकता है।

हमारे आसपास ऐसे कई लोग हैं, जो एक छोटा सा प्रयास शुरू करते हैं और देखते-ही-देखते उनका प्रयास बहुत से लोगों के जीवन में बदलाव का रास्ता बना देता है। ओडिशा के देबरीगढ़ में एक गाँव है 'धोड़रोकुसुम'। कुछ साल पहले तक इस गाँव की मैथिली भुए जी लगभग हर दिन जंगल जाती थीं-कभी जलावन की लकड़ी लेने, कभी महुआ और तेंदु पत्ता चुनने, तो कभी बांस की कोपलें और दूसरी वन उपज लाने। उनके और वहाँ के अनेक परिवारों की बहुत सी जरूरतें इसी जंगल से पूरी होती थीं, लेकिन फिर मैथिली जी देबरीगढ़ Eco–Tourism से जुड़ीं । यहाँ से जंगल के साथ उनका रिश्ता एक नई दिशा में बदल गया। अब जंगल का संरक्षण भी उनकी आजीविका का माध्यम बन गया। मैथिली जी के जीवन में आए इस बदलाव ने दूसरी महिलाओं को भी प्रेरित किया। आज 60 से अधिक महिलाएं जंगल के संरक्षण में जुड़ चुकी हैं। कोई वन्य-जीवों की सुरक्षा का दायित्व संभाल रही हैं, कोई घास के मैदानों के विकास से जुड़ी हैं, तो कुछ महिलाएं Eco–Tourism activities में योगदान दे रही हैं। मैथिली जी और देबरीगढ़ की इन बहनों ने दिखाया है कि प्रकृति की रक्षा भी हो सकती है और जीवन में समृद्धि भी आ सकती है।

आज हमारी बेटियों के सपनों की उड़ान, धरती से निकलकर अंतरिक्ष तक पहुंच रही है और भारत, ऐसे सपने देखने वाली दुनिया की हजारों बेटियों को एक साथ जोड़ रहा है। इस प्रयास का नाम है Mission ShaktiSAT। इसके माध्यम से 108 देशों की 12 हजार छात्राओं को Satellite Technology सीखने और innovation के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा है। 23 अगस्त, National Space Day पर इस मिशन की एक सुंदर तस्वीर उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में देखने को मिली। गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय में Mission ShaktiSAT के दूसरे चरण की शुरुआत हुई। इस अवसर पर दुनिया के अलग-अलग देशों और भारत से आई करीब 100 छात्राएं एक साथ जुटीं। भारत के दूर-दराज क्षेत्रों से चुनी हुई छात्राएं भी इसमें हिस्सा ले रही हैं। इस पूरे प्रयास का लक्ष्य भी बहुत खास है। पूरी तरह छात्राओं की भागीदारी से तैयार एक satellite को Moon की Orbit में भेजने की तैयारी है।

आजकल Avocado फल की बड़ी धूम है। इस फल को पहले शायद ही कोई जानता था। इसकी value और demand दोनों कम थी, लेकिन आज इसे dining table पर खूब देखा जा रहा है। आज यह health और premium market की पसंद बन गया है।

हमारे किसान भाई-बहनों के लिए भी ये बहुत मददगार है। आंध्र प्रदेश में कडपा के वरदराज जी का उदाहरण है। वे कई वर्षों से अपने खेत में टमाटर और केले की खेती कर रहे थे। एक दिन उन्होंने अपने दोस्तों के farm में avocado की फसल देखी। इसके बाद उन्होंने Youtube से इस पर जानकारी जुटाई। अब तक वे करीब 4 टन avocado का उत्पादन कर चुके हैं। आज वे सीधे स्थानीय दुकानों को इसकी सप्लाई कर रहे हैं। नई फसल, वैज्ञानिक सलाह और सीधी marketing से उनके छोटे से farm की कमाई पूरी तरह बदल गई है। तमिलनाडु के कोडाइकनाल के किसान चन्द्रशेखरन जी ने आधी हेक्टेयर जमीन पर avocado उगाना शुरू किया। उन्हें इसके अच्छे दाम मिल रहे हैं और कमाई भी बढ़ी है। कर्नाटक में चिक्कमगलुरु के कुछ किसान भाई-बहनों ने तो coffee plantation के बीच avocado लगाया है। इससे उन्हें coffee और काली मिर्च के साथ अतिरिक्त कमाई भी हो रही है।

हम शहरों के restaurant में अक्सर avocado toast के बारे में सुनते हैं, लेकिन इसी avocado के जरिए हमारे innovative किसानों ने कमाई की एक नई recipe ढूंढ ली है। यानि अपने देश के avocado से आपके toast का स्वाद भी बढ़ा और किसानों की आमदनी भी बढ़ गई है।

3 सितंबर को हम महानायक उत्तम कुमार जी की जन्म-शताब्दी मनाएंगे। उत्तम कुमार जी एक versatile actor थे, जो अपने अभिनय से लोगों के दिलों में रच-बस गए। Film lovers का मानना है कि श्रीमान सत्यजीत रे ने फिल्म 'नायक-the hero' की पूरी script महानायक उत्तम कुमार जी को ध्यान में रखकर लिखी थी। श्रीमान सत्यजीत रे ने कहा था कि उनमें dignity के साथ-साथ अद्भुत emotional depth भी था। किरदार को वो जीवंत बनाने के लिए बहुत मेहनत करते थे। उत्तम कुमार जी अपनी सहजता के साथ ही philanthropy के लिए भी जाने जाते थे। उनके जीवन से कभी भी हार न मानने की एक और बड़ी सीख भी मिलती है। उनकी शुरुआती फिल्में बहुत नहीं चलीं, लेकिन उन्होंने अपने काम पर focus बनाए रखा। इसी का परिणाम था कि उन्होंने इतनी ऊंचाई हासिल की। मुझे ध्यान है कि जब मैं कोलकाता में road show कर रहा था, तो मैं उत्तम कुमार जी के घर के सामने से भी गुजरा था। वहाँ मुझे एक व्यक्ति ने उनकी एक तस्वीर भी भेंट की थी। ''महानायक उत्तम कुमार चीरोदिन मानुषेर हृदये राज कोरबेन''

हमारे पर्व और त्योहार, हमारी परंपराओं के साथ-साथ, हमें एक-दूसरे से जुड़नें का भी अवसर देते हैं। आने वाले दिनों में हम और भी कई महत्वपूर्ण पर्व मनाने जा रहे हैं। 4 सितंबर को जन्माष्टमी का पावन पर्व है। सितंबर में ही हम विश्वकर्मा पूजा भी मनाएगें। इस अवसर पर अपने आसपास के कारीगरों, शिल्पकारों और विश्वकर्मा साथियों का सम्मान करना चाहिए। कुछ महीनों बाद दीपावली भी आने वाली है, इसकी तैयारियां भी धीरे-धीरे शुरू हो रही हैं। त्योहारों के इस मौसम में, मैं एक बार फिर, आपसे, vocal for local का आग्रह दोहराऊंगा और vocal for local का मतलब केवल मिट्टी के दीये खरीदना नहीं है, इसका vision बहुत बड़ा है। हम अपने घर के लिए जो भी सामान खरीदते हैं, उसे एक बार जरूर देख लें कि वो भारत में बना हो। भारत के आत्मनिर्भर बनने का मार्ग, भारत में बनी चीजों पर गर्व करने से ही प्रशस्त होगा। इस संदेश को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुंचाना भी हमारी जिम्मेदारी है। हमारे creative world के साथियों, influencers और celebrities की भी इसमें बहुत बड़ी भूमिका है। मेरा आपसे आग्रह है कि स्वयं भी vocal for local को अपनाए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित कीजिए। ▪

अटल जी राष्ट्रसेवा का संकल्प - डॉ. मोहन यादव

- **प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अटल बिहारी वाजपेयी जी के सपनों को कर रहे साकार।**
- **24 दलों को साथ लेकर गठबंधन सरकार चलाकर अटल जी ने लोकतंत्र में नई मिसाल कायम की।**

श्रद्धेय अटल जी का संपूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा, लोकतांत्रिक मूल्यों, सुशासन और राष्ट्रहित के प्रति समर्पण का अनुपम उदाहरण है। जब भारत-पाकिस्तान के बीच बांग्लादेश के घटनाक्रम चल रहे थे, तब विपक्ष के नेता होने के बावजूद उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी के साथ कदम से कदम मिलाकर देशहित और लोकतांत्रिक भावना का परिचय दिया। अटल जी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी में भाषण देकर विश्व पटल पर भारत का गौरव बढ़ाया। विदेश मंत्री के रूप में उन्होंने भारत की विदेश नीति को नई दिशा दी। पाकिस्तान के साथ संवाद की पहल कर उन्होंने शांति और सद्भाव का संदेश दिया, वहीं पोखरण परमाणु परीक्षण के माध्यम से भारत को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाने का साहसिक निर्णय लिया। कारगिल युद्ध के दौरान अटल जी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने अदम्य पराक्रम का परिचय दिया। पाकिस्तान की घुसपैठ का दृढ़ता से जवाब दिया। युद्ध के दौरान भी अटल जी ने भारतीय संस्कृति की उदारता और मानवीय संवेदनाओं का परिचय देते हुए पाकिस्तानी सैनिकों के शवों को सम्मानपूर्वक दफनाने की व्यवस्था कराई।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और स्वर्णिम चतुर्भुज योजना अटल जी की दूरदृष्टि और विकास की सोच के सशक्त उदाहरण हैं। इन योजनाओं ने देश में सड़क, संपर्क और आर्थिक विकास को नई गति दी। अटल जी ने अपने दृढ़ निर्णयों और दूरदर्शी नीतियों से आधुनिक भारत के विकास की मजबूत आधारशिला रखी। आज उसी विकास यात्रा को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के संकल्प को साकार कर रहे हैं।

श्रद्धेय अटल जी ने लोकतंत्र, राष्ट्रवाद और सुशासन को नई दिशा दी, उनका जीवन सदैव प्रेरणादायी है।

अटल जी के राष्ट्रसेवा, सुशासन और राष्ट्रहित के आदर्शों से विकसित भारत की नींव मजबूत हो रही है।

भारतीय जनता पार्टी के लिए यह गौरव की बात है कि श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी पार्टी के पहले ऐसे नेता थे, जिन्होंने तीन बार देश के प्रधानमंत्री के रूप में नेतृत्व किया। उन्होंने 24 दलों को साथ लेकर सहमति, संवाद और विश्वास के आधार पर गठबंधन सरकार चलाकर भारतीय लोकतंत्र में एक नई मिसाल कायम की।

अटल जी ने भारतीय जनता पार्टी को एक पौधे के रूप में रोपा था, जिसे उनके विचारों, कार्यकर्ताओं के परिश्रम और राष्ट्रसेवा के संकल्प ने आज विशाल वटवृक्ष बना दिया है। आज भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के रूप में देश की सेवा कर रही है। यह अटल जी की दूरदृष्टि और उनके विचारों की शक्ति का प्रमाण है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, अटल जी के विचारों और उनके सपनों को साकार करते हुए भारत को विश्व की अग्रणी शक्ति बनाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहे हैं। अटल जी का सपना था कि भारत सशक्त, समृद्ध, आत्मनिर्भर और विश्व का मार्गदर्शन करने वाला राष्ट्र बने। आज देश उसी दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। अटल जी का जीवन लोकतंत्र, राष्ट्रवाद, सुशासन, उदारता, संवेदनशीलता और राष्ट्रसेवा का आदर्श है। हमें उनके जीवन और विचारों को केवल स्मरण ही नहीं करना है, बल्कि उन्हें अपने आचरण में उतारना है। ▪

अटल जी, युग थे - हेमंत खण्डेलवाल

- **अटल बिहारी जी की संवेदनशीलता और राष्ट्रवाद सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।**
- **अटल जी ने सिखाया कितनी भी ऊंचाइयों पर पहुंचें, अपनी जड़ों और अतीत को कभी नहीं भूलें।**

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक युग थे। उनकी सोच में दूरदृष्टि, व्यवहार में आत्मीयता, वाणी में ओज, कविता में संवेदनशीलता और राजनीति में राष्ट्र सर्वोपरि था। ऐसे विराट व्यक्तित्व के बारे में कुछ कहना किसी के लिए भी कठिन है, क्योंकि अटल जी केवल भाजपा के कार्यकर्ताओं के नहीं, बल्कि देश के करोड़ों नागरिकों के हृदय में बसे हुए हैं। प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी ने भारत को नई दिशा और नई पहचान दी। उन्होंने देश को विकास, आत्मविश्वास और राष्ट्रहित के मार्ग पर आगे बढ़ाया, वहीं भारतीय विचारधारा को भी नई ऊर्जा और व्यापक दृष्टि प्रदान की। अटल जी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं और आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करते रहेंगे। अटल जी की प्रतिमा केवल पत्थर या धातु की प्रतिमा नहीं है, बल्कि यह उनके विराट व्यक्तित्व, विचारों और राष्ट्र समर्पण की जीवंत स्मृति है। अटल जी की प्रतिमा हमें हमेशा यह संदेश देती रहेगी कि जीवन में हम कितनी भी ऊंचाइयों पर पहुंचें, अपनी जड़ों, अपने अतीत और अपने विचारों से कभी अलग नहीं होना चाहिए। अटल जी जिस विचारधारा के वाहक थे, वही विचारधारा आज हम सभी को राष्ट्र सेवा के पथ पर आगे बढ़ा रही है।

श्रद्धेय अटल जी दिल में बसते हैं और देश के करोड़ों नागरिकों के हृदय में उनका विशेष स्थान है। अटल जी के विचारों और आदर्शों को अपने जीवन में उतारकर राष्ट्र हित एवं समाजसेवा के लिए कार्य करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ▪

अटल जी ने नई दिशा दी - डॉ. महेंद्र सिंह

- **अटल जी का जीवन राष्ट्रसेवा, संकल्प और सुशासन की प्रेरणा का प्रतीक।**
- **अटल जी के विचार और राष्ट्र प्रथम की भावना सदैव मार्गदर्शन करेगी।**

अटल बिहारी वाजपेयी जी सदैव अटल रहने वाले ऐसे महान व्यक्तित्व थे, जिन्होंने पत्रकार, कवि, राजनेता, नेता प्रतिपक्ष, सांसद और प्रधानमंत्री के रूप में राष्ट्र की अद्‌भुत सेवा की। उनके जीवन का प्रत्येक अध्याय देशभक्ति, लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्र प्रथम की भावना से प्रेरित रहा।

अटल जी तीन बार देश के प्रधानमंत्री बने और उनके तीनों कार्यकाल राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से ऐतिहासिक रहे। अटल जी के नेतृत्व में भारत ने आर्थिक विकास, सामरिक शक्ति और आधारभूत संरचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं। पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद जब दुनिया ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए, तब अटल जी ने दृढ़ता के साथ राष्ट्र का नेतृत्व करते हुए स्पष्ट संदेश दिया कि भारत किसी के सामने हाथ नहीं फैलाएगा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के माध्यम से गांव-गांव को सड़क से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य अटल जी की दूरदृष्टि का उदाहरण है। वहीं कारगिल युद्ध के दौरान उन्होंने देश के वीर जवानों का मनोबल बढ़ाया। टाइगर हिल पर तिरंगा फहराने वाले वीर सैनिकों के शौर्य ने पूरे देश को गौरवान्वित किया और अटल जी के नेतृत्व में भारत ने पूरी दुनिया को अपनी सामरिक क्षमता और राष्ट्रीय संकल्प का परिचय दिया।

''छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता और टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।'' अटल जी का यह संदेश आज भी हर कार्यकर्ता को संघर्ष में धैर्य, विपरीत परिस्थितियों में आत्मविश्वास और राष्ट्रहित में अडिग रहने की प्रेरणा देता है।

अटल जी का मानना था कि भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि एक जीता-जागता राष्ट्र है। यही भावना प्रत्येक भारतीय के भीतर राष्ट्र प्रथम के संकल्प को मजबूत करती है। संसद में उनका ओजस्वी व्यक्तित्व, लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और राष्ट्रहित को सर्वोच्च रखने की उनकी राजनीति भारतीय लोकतंत्र की अमूल्य विरासत है।

अटल जी का जीवन हमें सिखाता है कि राजनीति सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा का संकल्प है। उनके विचारों, आदर्शों और राष्ट्र प्रथम की भावना को आत्मसात कर आगे बढ़ना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ▪

देश सेवा में डॉ. विश्वेश्वरैया

अभियंता दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 15 सितम्बर को मनाया जाता है। इसी दिन भारत के महान अभियंता और भारतरत्न प्राप्त मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म दिवस होता है। आज भी मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को आधुनिक भारत के विश्वकर्मा के रूप में बड़े सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। अपने समय के बहुत बड़े इंजीनियर, वैज्ञानिक और निर्माता के रूप में देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को भारत ही नहीं, वरन विश्व की महान प्रतिभाओं में गिना जाता है।

एक सौ एक वर्ष का यशस्वी जीवन जीने वाले मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया सदैव भारतीय आकाश में अपना प्रकाश बिखेरते रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 1968 ई. में डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जन्म तिथि को अभियंता दिवस घोषित किया गया था। तब से हर वर्ष इस पुनीत अवसर पर सभी भारतीय अभियंता एकत्रित होकर उनकी प्रेरणादायिनी कृतित्व एवं आदर्शों के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित कर अपने कार्य-कलापों का आत्म विमोचन करते हैं और इसे संकल्प दिवस के रूप में मनाने का प्रण लेते हैं। संकल्प अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों का समर्पित भाव से निर्वहन करते हैं।

भारत की आजादी के बाद नये भारत के निर्माण और विकास में प्रतिभावान इंजीनियरों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गांव एवं शहरों के समग्र विकास के लिए सड़कों, पुल-पुलियों और सिंचाई जलाशयों सहित अधोसंरचना निर्माण के अनेक कार्य हो रहे हैं। हमारे इंजीनियरों ने अपनी कुशलता से इन सभी निर्माण कार्यों को गति प्रदान की है। राज्य और देश के विकास में इंजीनियरों के इस योगदान के साथ-साथ अभियंता दिवस के इस मौके पर भारतरत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की प्रेरणादायक जीवन गाथा को भी याद किया जाता है। विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर, जो कि अब कर्नाटक में है, के मुद्देनाहल्ली नामक स्थान पर 15 सितम्बर, 1861 को हुआ था। बहुत ही गरीब परिवार में जन्मे विश्वेश्वरैया का बाल्यकाल बहुत ही आर्थिक संकट में व्यतीत हुआ था। उनके पिता वैद्य थे। वर्षों पहले उनके पूर्वज आंध्र प्रदेश के मोक्षगुंडम नामक स्थान से मैसूर में आकर बस गये थे। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने प्रारंभिक शिक्षा

जन्म स्थान से ही पूरी की। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने बंगलूर के सेंट्रल कॉलेज में दाखिला लिया। लेकिन यहाँ उनके पास धन का अभाव था। अतः उन्हें ट्यूशन करना पड़ा। विश्वेश्वरैया ने 1881 में बी.ए. की परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त किया। इसके बाद मैसूर सरकार की मदद से इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए पूना के साइंस कॉलेज में दाखिला लिया। 1883 की एल.सी.ई. व एफ.सी.ई. (वर्तमान समय की बीई उपाधि) की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके अपनी योग्यता का परिचय दिया। इसी उपलिब्ध के चलते महाराष्ट्र की सरकार ने इन्हें नासिक में सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया था।

दक्षिण भारत के मैसूर, कर्नाटक को एक विकसित एवं समृद्धशाली क्षेत्र बनाने में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का अभूतपूर्व योगदान रहा है। जब देश स्वंतत्र नहीं था, तब कृष्ण राज सागर बांध, भद्रावती आयरन एंड स्टील वर्क्स, मैसूर संदल ऑयल एंड सोप फैक्टरी, मैसूर विश्वविद्यालय, बैंक ऑफ मैसूर समेत अन्य कई महान् उपलिब्धयां मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के कड़े प्रयास से ही संभव हो पाई। इसीलिए इन्हें कर्नाटक का भगीरथ भी कहते हैं। जब वह केवल 32 वर्ष के थे, उन्होंने सिंधु नदी से सुक्कुर कस्बे को पानी की पूर्ति भेजने का प्लान तैयार किया, जो सभी इंजीनियरों को पसंद आया। सरकार ने सिंचाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के उपायों को ढूंढने के लिए समिति बनाई। इसके लिए विश्वेश्वरैया ने एक नए लॉक सिस्टम को ईजाद किया। उन्होंने स्टील के दरवाजे बनाए, जो कि बांध से पानी के बहाव को रोकने में मदद करता था। उनके इस सिस्टम की प्रशंसा ब्रिटिश अधिकारियों ने मुक्त कंठ से की थी। आज यह प्रणाली पूरे विश्व में प्रयोग में लाई जा रही है। विश्वेश्वरैया ने मूसा व इसा नामक दो नदियों के पानी को बांधने के लिए भी प्लान तैयार किए। इसके बाद उन्हें मैसूर का चीफ इंजीनियर नियुक्त किया गया। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य भी हैं, जो आज किसी भी अभियन्ता को प्रेरणा प्रदान करने की अभूतपूर्व सामर्थ्य रखते हैं।

जब भारत में अंग्रेजों का शासन था, खचाखच भरी एक रेलगाड़ी चली जा रही थी। यात्रियों में अधिकतर अंग्रेज थे। एक डिब्बे में एक भारतीय मुसाफिर गंभीर मुद्रा में बैठा था। सांवले रंग और मंझले कद का वह यात्री साधारण वेशभूषा में था, इसलिए वहाँ बैठे अंग्रेज उसे मूर्ख और अनपढ़ समझ रहे थे और उसका मजाक उड़ा रहे थे। पर वह व्यक्ति किसी की बात पर ध्यान नहीं दे रहा था। अचानक उस व्यक्ति ने उठकर गाड़ी की जंजीर खींच दी।

तेज रफ्तार में दौड़ती वह गाड़ी तत्काल रुक गई। सभी यात्री उसे भला-बुरा कहने लगे। थोड़ी देर में गार्ड भी आ गया और उसने पूछा 'जंजीर किसने खींची है?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया 'मैंने खींची है।' कारण पूछने पर उसने बताया 'मेरा अनुमान है कि यहाँ से लगभग एक फर्लांग की दूरी पर रेल की पटरी उखड़ी हुई है।' गार्ड ने पूछा 'आपको कैसे पता चला?' वह बोला 'श्रीमान! मैंने अनुभव किया कि गाड़ी की स्वाभाविक आवाज की गति में अंतर आ गया है। पटरी से गूंजने वाली आवाज की गति से मुझे खतरे का आभास हो रहा है।'

गार्ड उस व्यक्ति को साथ लेकर जब कुछ दूरी पर पहुँचा तो यह देखकर दंग रहा गया कि वास्तव में एक जगह से रेल की पटरी के जोड़ खुले हुए थे और सब नट-बोल्ट अलग बिखरे पड़े थे। दूसरे यात्री भी वहाँ आ पहुँचे। जब लोगों को पता चला कि उस व्यक्ति की सूझबूझ के कारण उनकी जान बच गई है तो वे उसकी प्रशंसा करने लगे। गार्ड ने पूछा 'आप कौन हैं?' उस व्यक्ति ने कहा 'मैं एक इंजीनियर हूँ और मेरा नाम है डॉ. एम. विश्वेश्वरैया।' नाम सुन कर सब स्तब्ध रह गए। दरअसल उस समय तक देश में डॉ. विश्वेश्वरैया की ख्याति फैल चुकी थी। लोग उनसे क्षमा मांगने लगे। डॉ. विश्वेश्वरैया का उत्तर था 'आप सब ने मुझे जो कुछ भी कहा होगा, मुझे तो बिल्कुल याद नहीं है।' ▪

संपूर्ण शिक्षक बिरादरी के सम्मान का दिन है शिक्षक दिवस

स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने राजनीति में आने से पूर्व अपने जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत किये। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे।

उन्होंने अपना जन्म दिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किये जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी जिसके परिणामस्वरूप आज भी सारे देश में उनका जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के नाम से ही मनाया जाता है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति रहे। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, उत्कृष्ट वक्ता, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे। उन्हें 1931 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा सर की उपाधि प्रदान की गयी थी लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उसका औचित्य डॉ. राधाकृष्णन के लिये समाप्त हो चुका था। जब वे उपराष्ट्रपति बन गये तो स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1954 में उन्हें उनकी महान दार्शनिक व शैक्षिक उपलिब्धयों के लिये देश का सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' प्रदान किया।

डॉ. राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरूतनी ग्राम में, जो तत्कालीन मद्रास से लगभग 64 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, 5 सितम्बर 1888 को हुआ था। जिस परिवार में उन्होंने जन्म लिया वह एक गरीब किन्तु विद्वान ब्राह्मण परिवार था। उनका जन्म स्थान भी एक पवित्र तीर्थस्थल के रूप में विख्यात रहा है। राधाकृष्णन के पुरखे पहले कभी सर्वपल्ली नामक ग्राम में रहते थे और 18वीं शताब्दी के मध्य में उनका परिवार तिरूतनी ग्राम आ गया था, लेकिन उनके पुरखे चाहते थे कि उनके नाम के साथ उनके जन्मस्थल के ग्राम का बोध भी सदैव रहना चाहिये। इसी कारण उनके परिजन अपने नाम के पूर्व सर्वपल्ली धारण करने लगे थे। उनके पिता का नाम सर्वपल्ली वीरास्वामी और माता का नाम सीतामा था।

स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने राजनीति में आने से पूर्व अपने

जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत किये। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे। उन्होंने अपना जन्म दिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किये जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी, जिसके परिणामस्वरूप आज भी सारे देश में उनका जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के नाम से ही मनाया जाता है। इन दिनों जब शिक्षा की गुणात्मकता का ह्रास होता जा रहा है और गुरु-शिष्य सबन्धों की पवित्रता को ग्रहण लगता जा रहा है,उनका पुण्य स्मरण फिर एक नयी चेतना पैदा कर सकता है। 1962 में जब वे भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने, तो उनके कुछ शिष्य और प्रशंसक उनके पास गए। उन्होंने उनसे निवेदन किया की वे उनके जन्मदिन को एक समारोह के रूप में मनाना चाहते हैं। यह सुनकर उन्होंने कहा सिर्फ मेरा जन्मदिन मनाने से अच्छा अगर तुम इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाओगे तो मुझे ज्यादा खुशी होगी। तब से 5 सितम्बर सारे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। उनकी यह इच्छा अध्यापन के प्रति उनके प्रेम को दर्शाती है। वे जीवनभर अपने आप को शिक्षक मानते रहे।

शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. राधाकृष्णन ने जो अमूल्य योगदान दिया वह निश्चय ही अविस्मरणीय रहेगा। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। यद्यपि वे एक जाने-माने विद्वान, शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, राजनयिक, देशभक्त और शिक्षा शास्त्री थे, तथापि अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में अनेक उच्च पदों पर काम करते हुए भी वे शिक्षा के क्षेत्र में सतत योगदान करते रहे। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाये तो समाज की अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। डॉ. राधाकृष्णन कहा करते थे कि मात्र जानकारियाँ देना शिक्षा नहीं है। यद्यपि जानकारी का अपना महत्व है और आधुनिक युग में तकनीक की जानकारी महत्वपूर्ण भी है तथापि व्यक्ति के बौद्धिक झुकाव और उसकी लोकतान्त्रिक भावना का

भी बड़ा महत्व है। ये बातें व्यक्ति को एक उत्तरदायी नागरिक बनाती हैं। शिक्षा का लक्ष्य है ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरन्तर सीखते रहने की प्रवृत्ति। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को ज्ञान और कौशल दोनों प्रदान करती है तथा इनका जीवन में उपयोग करने का मार्ग प्रशस्त करती है। करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं।

वे कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती। एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण उनमें विद्यमान थे। उनका कहना था कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनाया जाना चाहिये जो सबसे अधिक बुद्धिमान हों। शिक्षक को मात्र अच्छी तरह अध्यापन करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिये अपितु उसे अपने छात्रों का स्नेह और आदर भी अर्जित करना चाहिये। सम्मान शिक्षक होने भर से नहीं मिलता, उसे अर्जित करना पड़ता है।

हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन

शिक्षा का प्रभाव जहाँ प्रत्येक व्यक्ति पर निश्चित रूप से पड़ता है, वहीं शैक्षिक संस्थान की गुणवत्ता भी अपना प्रभाव छोड़ती है। क्रिश्चियन संस्थाओं द्वारा उस समय पश्चिमी जीवन मूल्यों को विद्यार्थियों के भीतर काफी गहराई तक स्थापित किया जाता था। यही कारण है कि क्रिश्चियन संस्थाओं में अध्ययन करते हुए राधाकृष्णन के जीवन में उच्च गुण समाहित हो गये। लेकिन उनमें एक अन्य परिवर्तन भी आया जो कि क्रिश्चियन संस्थाओं के कारण ही था। कुछ लोग हिन्दुत्ववादी विचारों को हेय दृष्टि से देखते थे और उनकी आलोचना करते थे। उनकी आलोचना को डॉ. राधाकृष्णन ने चुनौती की तरह लिया और हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन करना आरंभ कर दिया। डॉ. राधाकृष्णन यह जानना चाहते थे कि वस्तुतः किस संस्कृति के विचारों में चेतनता है और किस संस्कृति के विचारों में जड़ता है, तब स्वाभाविक अंतर्प्रज्ञा द्वारा इस बात पर दृढ़ता से विश्वास करना आरंभ कर दिया कि भारत के दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले गरीब तथा अनपढ़ व्यक्ति भी प्राचीन सत्य को जानते थे। इस कारण राधाकृष्णन ने तुलनात्मक रूप से यह जान लिया कि भारतीय आध्यात्म काफी समृद्ध है और क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा हिन्दुत्व की आलोचनाएँ निराधार हैं। इससे इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति धर्म, ज्ञान और सत्य पर आधारित है जो प्राणी को जीवन का सच्चा सन्देश देती है।

गुरु का महत्व

गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागूं पांय
बलिहारी गुरु आपकी गोविंद दियो बताए।

कबीरदास द्वारा लिखी गई उक्त पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्व को वर्णित करने के लिए काफी हैं। भारत में प्राचीन समय से ही गुरु व शिक्षक परंपरा चली आ रही है। गुरुओं की महिमा का वृत्तांत ग्रंथों में भी मिलता है। जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता, क्योंकि वे ही हमें इस रंगीन खूबसूरत दुनिया में लाते हैं। उनका ऋण हम किसी भी रूप में उतार नहीं सकते, लेकिन जिस समाज में रहना है, उसके योग्य हमें केवल शिक्षक ही बनाते हैं। यद्यपि परिवार को बच्चे के प्रारंभिक विद्यालय का दर्जा दिया जाता है, लेकिन जीने का असली सलीका उसे शिक्षक ही सिखाता है। समाज के शिल्पकार कहे जाने वाले शिक्षकों का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता, क्योंकि वह ना सिर्फ विद्यार्थी को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं,बल्कि उसके सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है। ▪

भारतीय संस्कृति

डॉ. राधाकृष्णन ने यह भली भाँति जान लिया था कि जीवन बहुत ही छोटा है परन्तु इसमें व्याप्त खुशियाँ अनिश्चित हैं। इस कारण व्यक्ति को सुख-दुख में समभाव से रहना चाहिये। वस्तुतः मृत्यु एक अटल सच्चाई है, जो अमीर गरीब सभी को अपना ग्रास बनाती है तथा किसी प्रकार का वर्ग भेद नहीं करती। सच्चा ज्ञान वही है जो आपके अन्दर के अज्ञान को समाप्त कर सकता है। सादगी-पूर्ण, संतोष-प्रवृत्ति का जीवन अमीरों के अहंकारी जीवन से बेहतर है, जिनमें असन्तोष का निवास है।

एक शान्त मस्तिष्क बेहतर है, तालियों की उन गड़गड़ाहटों से, जो संसदों एवं दरबारों में सुनायी देती हैं। वस्तुतः इसी कारण डॉ. राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को समझ पाने में सफल रहे, क्योंकि वे विभिन्न समुदायों द्वारा की गई आलोचनाओं के सत्य को स्वयं परखना चाहते थे। इसीलिए कहा गया है कि आलोचनाएँ परिशुद्धि का कार्य करती हैं। सभी माताएँ अपने बच्चों में उच्च संस्कार देखना चाहती हैं। इसी कारण वे बच्चों को ईश्वर पर विश्वास रखने, पाप से दूर रहने एवं मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करने का पाठ पढ़ाती हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने यह भी जाना कि भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों का आदर करना सिखाया गया है और सभी धर्मों के लिये समता का भाव भी हिन्दू संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान को समझा और उसके काफी नजदीक हो गये।

जीवन दर्शन एक आदर्श शिक्षक

डॉ. राधाकृष्णन समस्त विश्व को एक शिक्षालय मानते थे। उनकी मान्यता थी कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जाना संभव है। इसीलिए समस्त विश्व को एक इकाई समझकर ही शिक्षा का प्रबन्धन किया जाना चाहिये। एक बार ब्रिटेन के एडिनबरा विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था कि मानव की जाति एक होनी चाहिये।

मानव इतिहास का सम्पूर्ण लक्ष्य मानव जाति की मुक्ति है। यह तभी संभव है जब समस्त देशों की नीतियों का आधार विश्व शान्ति की स्थापना का प्रयत्न करना हो। वे अपनी बुद्धिमतापूर्ण व्याख्याओं, आनन्ददायी अभिव्यक्तियों और हँसाने व गुदगुदाने वाली कहानियों से अपने छात्रों को मन्त्रमुग्ध कर दिया करते थे। वे छात्रों को प्रेरित करते थे कि वे उच्च नैतिक मूल्यों को अपने आचरण में उतारें। वे जिस विषय को पढ़ाते थे, पढ़ाने के पहले स्वयं उसका अच्छा अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी वे अपनी शैली की नवीनता से सरल और रोचक बना देते थे।

मात्र ढाई हजार वेतन!!

1952 से 1962 तक देश के उपराष्ट्रपति रहने के बाद सन् 1962 में वे भारत के राष्ट्रपति चुने गए। उन दिनों राष्ट्रपति का वेतन 10 हजार रुपए मासिक था लेकिन डॉ. राधाकृष्णन मात्र ढाई हजार रुपए ही लेते थे और शेष राशि प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय राहत कोष में जमा करा देते थे। देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचकर भी वे सादगी भरा जीवन बिताते रहे। ▪

राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

पं. दीनदयाल उपाध्याय

प्राचीन साहित्य में कहीं-कहीं जहाँ राजा का वर्णन किया गया है और राज्यधर्म का उसको उपदेश दिया गया है, वहाँ उसे अत्यन्त महत्वशाली अवश्य बताया गया है। यह शायद इसलिए कि उसे अपने कर्तव्य का भान रहे, अपने दायित्व की जानकारी रहे। वह संपूर्ण समाज जीवन के ऊपर प्रभाव डालने वाला व्यक्ति है। उसे अपने ऊपर पूरा ध्यान देना चाहिए। महाभारत में भीष्म ने यही बात कहीं। राजा काल का कारण है अथवा काल राजा का कारण? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने बिल्कुल निश्चयात्मक रूप से बतलाया। **राजा कालस्य कारणम् कि** राजा ही काल का कारण है। अब इसमें से कुछ लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि उन्होंने राजा को ही सर्वोपरि माना है, परन्तु यह बात सत्य नहीं है। भीष्म ने राजा को इतना महत्व देते हुए भी विधि से ऊपर नहीं बताया। राजा का प्रभाव होता है सत्य है और राजा, समाज में धर्म रहे, इस बात को देखने की जिम्मेदारी लेकर चलता है, यह भी सत्य है। किन्तु राजा धर्म का निर्माण करने वाला नहीं होता। धर्म का लोग पालन करें यही बात वह देखने वाला है। यानि एक प्रकार से कहा जाय तो राजा का स्थान उतना ही है, जितना आज के समय में कार्यपालिका का होता है।

जिम्मेदार कार्यपालिका

कार्यपालिका आज भी कानून नहीं बनाती, परन्तु राज्य ठीक प्रकार से चले यह जिम्मेदारी कार्यपालिका पर होती है। अगर कार्यपालिका ठीक न चले तो कानून की कैसी धज्जियां उड़ती हैं, वह आज हम अच्छी तरह से देख रहे है। आज भी हम कह सकते हैं कार्यपालिका **कालस्य कारणम् कि** आज जो बुराइयाँ चल रही हैं उसमें कार्यपालिका की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आखिर नशाबन्दी क्यों असफल हो गई है? यहाँ उसके लिए कौन जिम्मेदार है? जिन लोगों पर इस बात का दायित्व डाला गया कि नशाबन्दी चलेगी कहाँ से? उसके लिए जिम्मेदारी कार्यपालिका पर आती है। इसी जिम्मेदारी के रूप में भीष्म की उपर्युक्त सर्वप्रभुता संपन्न माना है। अगर ऐसा होता तो फिर अत्याचारी राजा वेण को राज्यसिंहासन से हटाकर पृथु को गद्दी पर बिठाने का काम ऋषियों ने न किया होता। ऋषियों के इस कार्य को किसी भी शास्त्र ने, किसी भी इतिहास ने बुरा नहीं कहा, बल्कि अच्छा ही कहा। धर्म की प्रभुता स्वीकार करने पर ही ऋषियों को अधर्मी राजा को हटाने का अधिकार प्राप्त होता है, अन्यथा राजा को हटाना अवैध माना जाता। यदि राजा अपने कर्तव्य का पालन न करे तो राजा को हटाना धर्म है। किन्तु पश्चिम में एक राजा को दूसरे राजा ने संघर्ष करके हटाया या जनता ने उस समय हटाया जब उन्होंने तत्वतः राजपद्धति को अमान्य कर दिया। वहाँ राजा ईश्वर का प्रतिनिधि है और किसी भी परिस्थिति में नहीं हटाया जा सकता।

समाज व्यवस्था में अनेक संस्थायें

राजा या राज्य सर्वोपरि तो है ही नहीं, वह एकमेव संस्था भी नहीं है। समाज की व्यवस्था तथा उसके जीवन का नियमन करने वाली, समाज की व्यवस्था देखने वाली, अनेक संस्थायें हैं। उनका प्रादेशिक और व्यवसायिक दोनों आधारों पर गठन हुआ है। पंचायतें और जनपद सभायें हमारे यहाँ रही है। बड़े-से-बड़े चक्रवर्ती सार्वभौम राजा ने कभी पंचायतों को समाप्त नहीं किया। इसी प्रकार व्यवसायिक संगठन भी रहे हैं। उन्हें भी किसी ने समाप्त नहीं किया, अपितु उनकी स्वायात्तता को स्वीकार किया गया। अपने-अपने क्षेत्र में उन्होंने नियम बनाये। जाति की पंचायतें, श्रेणियाँ, निगम, ग्राम पंचायतें, जनपद सभायें आदि संस्थायें नियम बनाती थीं। राज्य का काम यही था कि इन नियमों का पालन होता है कि नहीं, यह देखें। राज्य ने कभी उनके मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया। इस प्रकार हमारे यहाँ राज्य तो जीवन के थोड़े से हिस्से को ही छूता था। इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में भी अनेक संस्थाएं जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से हमें आज कुछ अर्थव्यवस्था का भी विचार करना पड़ेगा। अर्थव्यवस्था कैसी हो? हमें ऐसी व्यवस्था चाहिए जो हमारे मानवत्व को विकसित कर सके, हमारे मानव्य को समाप्त न करें, उसके ऊपर प्रतिकूल प्रभाव न डाले और जिसके द्वारा हम मानव से ऊँचे उठकर देवत्व को प्राप्त कर सकें। क्योंकि हमारे यहाँ पर मानव जीवन का पूर्ण विकास उसका देवत्व के रूप में आविर्भाव ही माना गया। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अर्थव्यवस्था की क्या मर्यादायें होनी चाहिए, इसका विचार करें।

अर्थव्यवस्था की मर्यादायें

लोगों के भरण-पोषण के लिए, जीवन के विकास के लिए और राष्ट्र की धारणा और विकास के लिए जिन मौलिक साधनों की आवश्यकता होती है उनका उत्पादन अर्थव्यवस्था का लक्ष्य होना चाहिए। न्यूनतम मर्यादा के बाद और अधिक समृद्धि एवं सुख के लिए अर्थोत्पादन करना चाहिए या नहीं, यह स्वाभाविक प्रश्न पैदा होता है। पश्चिम का अर्थशास्त्र तो इच्छाओं को बराबर समझता है। इस विषय में उसकी कोई अधिकतम मर्यादा नहीं है। सामान्यतयाः तो पहले इच्छा होती है और फिर उसकी पूर्ति के साधन जुटाये जाते है, उसके उपयोग हो इसके लिए लोगों में इच्छा पैदा की जाती है। बाजार के लिए माल पैदा करने के स्थान पर पैदा किये हुए के लिए बाजार ढूँढना, न मिले तो बाजार पैदा करना आज की अर्थनीति का प्रमुख अंग बन गया है। आरंभ में उत्पादन उपभोग का अनुसरण करता था, अब उपभोग

उत्पादन का अनुचर है।

हम चाय का ही उदाहरण लें। चाय की माँग थी, इसलिए चाय नहीं पैदा की गई। किन्तु चाय पैदा की गई और इसलिए हमें पीना सिखाई गई। हम जब चाय पीते हैं। वह हमारे जीवन का एक अंग बन गई है। इसी प्रकार हम आजकल वनस्पति तेल का उपभोग कर रहे हैं। क्या हमने कभी इसकी माँग की थी? वास्तव में वनस्पति पैदा किया गया और फिर हमें उसका उपभोग सिखाया गया। जो कुछ पैदा होता है यदि उसका उपभोग न करें तो वहाँ पर मन्दी आ जावेगी। 1930-32 की मन्दी का जमाना हमें याद होगा। उस समय माल तो था पर उसकी खपत नहीं थी, इसलिए धड़ाधड़ कारखाने बन्द होते जाते थे। दिवाले निकल रहे थे तथा बेकारी बढ़ती जाती थी। इसलिए आज महत्व की वस्तु यह हो गई है कि पैदा माल की खपत हो जाय।

अंग्रेजी के साप्ताहिक ऑर्गनाइजर के संपादक कुछ वर्ष पूर्व अमरीका गये थे। वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने एक मजेदार घटना बताई। वहाँ आलू छीलने का चाकू बनाने का एक कारखाना है। उस कारखाने का उत्पादन इतना बढ़ गया कि लोगों की आवश्यकता से ज्यादा पैदा करने लगा। अतः प्रश्न पैदा हुआ कि लोग चाकू अधिक संख्या में खरीदें इसका कोई तरीका ढूंढा जाए। कारखाने के सेल्समेनों की बैठक हुई। एक सुझाव रखा गया कि यदि चाकू के बेंटे का रंग आलू के छिलके जैसा ही बनाया जाय तो आलू छीलने क बाद छिलके के साथ चाकू को भी कूड़े की टोकरी में फेंकने की संभावना बढ़ जाएगी। इस प्रकार माल की अधिक खपत होगी। चाकू को आकर्षक बनाने के लिए सुन्दर पैकिंग की भी व्यवस्था की गई। अब यह अर्थव्यवस्था उपभोग प्रधान न होकर विनाशोन्मुख है। पुराना फेंको और नया खरीदों। नया खरीदने की चाह उपभोक्ता में पैदा करना, मांग पूरी करना नहीं, मांग पैदा करना यही आज अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हो गया है।

प्रकृति की मर्यादा न भूलें

किन्तु उत्पादन का संबंध प्राकृतिक साधनों से भी है। यदि अन्धाधुन्ध उत्पादन बढ़ाते गए तो ये प्राकृतिक साधन कब तक साथ देंगे? कुछ लोग यह कहकर समाधान कर देते हैं कि यदि एक प्रकार के साधन समाप्त हो गए तो दूसरी प्रकार की वस्तुओं की खोज हो जाएगी। नये इंस्टीट्यूट ढूँढे जा सकते हैं। उनके इस तर्क में निहित बल को स्वीकार करने के बाद भी यह कहना पड़ेगा कि प्रकृति की सम्पदा अपार होने पर भी उसकी मर्यादा है। यदि बड़ी तेजी के साथ आवश्यक रूप से हम उसका खर्च करते गए तो एक दिन हमें पछताना पड़ेगा।

प्रकृति से उच्छृंखलता

प्रकृति की संपदा की मर्यादा की चिन्ता न भी करें तो कम से कम इतना तो हमें मानना ही पड़ेगा कि प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं के बीच एक परस्परावलंबी सबन्ध हैं। एक-दूसरे के सहारे खड़ी तीन लकड़ियों में से यदि हम एक की स्थिति में परिवर्तन कर दें तो शेष दो अपने आप गिर जाएंगी। आज की अर्थव्यवस्था और उत्पादन की पद्धति इस सामंजस्य को बड़ी तेजी से बिगाड़ती जा रही है। परिणामतः जहाँ एक ओर हम नये-नये प्रश्न हमारी संपूर्ण सभ्यता और मानवता को समाप्त करने के लिए पैदा होते जा रहे है। हम प्रकृति से उतना तथा इस प्रकार लें कि वह उस कमी को स्वयं पुनः पूरित कर ले। पेड़ से फल लेने में उसकी हानि नहीं होती, लाभ होता है। पर भूमि से अधिक फसल लेने के लोभ में हम ऐसे उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं जिनसे कुछ दिनों के बाद उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो जाती है। आज अमरीका मे लाखों एकड़ भूमि इस प्रकार की खेती के कारण ऊसर हो चुकी है। यह विनाशलीला कब तक चलती रहेगी?

कारखानेदार मशीन आदि के लिए घिसाई-निधि की व्यवस्था करता है। परन्तु प्रकृति के इस कारखाने के लिए हम किसी भी घिसाई निधि की चिन्ता न करें, यह कैसे हो सकता है, इस दृष्टि से विचार किया जाए तो कहना होगा कि हमारी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य अमर्यादा उपभोग नहीं अपितु संयमित उपभोग होना चाहिए। सोद्देश्य, सुखी, विकासमान जीवन के लिए जिन भौतिक साधनों की आवश्यकता है वे अवश्य ही प्राप्त होने चाहिए। भगवान की सृष्टि का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उतनी व्यवस्था उसने की है। किन्तु जब हम यह समझ कर कि भगवान ने मनुष्य को केवल उपभोग प्रवण प्राणी बनाया है और उसके लिए अन्धाधुन्ध उपभोग के लिए ही अपनी संपूर्ण शक्ति खर्च करें, तो यह ठीक नहीं। इंजिन को चलाने के लिए कोयला चाहिए। किन्तु कोयला खाने के लिए इंजिन नहीं बनाया गया।

प्रत्युत हमारा प्रयत्न तो यही रहता है कि कम से कम ईंधन से ज्यादा से ज्यादा शक्ति कैसे पैदा हो। यह बचत का दृष्टिकोण है। मानव जीवन के उद्देश्य का विचार करके हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वह न्यूनतम ईंधन से अधिकतम गति के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकें। यह अर्थव्यवस्था माननी होगी। यह मानव के एक पहलू का विचार न कर उसके पूर्ण जीवन का तथा अन्तिम उद्देश्य का विचार करेगी। यह संहारात्मक न होकर सृजनात्मक होगी। यह प्रकृति के शोषण पर निर्भर न रहकर उसके पोषण पर निर्भर रहेगी। शोषण नहीं, दोहन हमारा आधार होना चाहिए था। प्रकृति का स्तन्य हमारे लिए जीवनदायी हो, यही व्यवस्था करनी चाहिए।

पश्चिम के घातक आर्थिक नारे

अर्थव्यवस्था का यह मानवी उद्देश्य रहा तो आर्थिक प्रश्नों की ओर देखने की हमारी दृष्टि बदल जायेगी। पश्चिम की अर्थव्यवस्था में, वह पूंजीवादी हो या समाजवादी, मूल्य को अत्यन्त महत्व का एवं केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। उसके चारों ओर ही संपूर्ण आर्थिक विचार चक्कर लगाता रहता है। एक नैयायिक की दृष्टि से मूल्य सबन्धी विश्लेषण का चाहे जो महत्व हो किन्तु उसके आधार पर जो जीवनदर्शन बने हैं वे बहुत ही अधूरे, अमानवीय एवं कुछ अंशों में नीति-विहीन भी हैं। एक उदाहरण लें। आजकल का नारा लगाया जाता है कमाने वाला खाएगा। सामान्यतया यह नारा कम्यूनिस्ट लगाते हैं, किन्तु पूंजीवादी भी इस नारे के मूल में निहित सिद्धान्त से असहमत नहीं। यदि दोनों में झगड़ा है तो इसी बात का कि कौन कितना कमाता है। पूंजीवादी साहस और पूँजी को महत्व देते हैं और इसलिए खाने में उनका प्रमुख भाग रहा तो उसे वे उचित ही मानते हैं। दूसरी ओर कम्यूनिस्ट श्रम को ही निर्माण मानते हैं, इसलिए वे श्रमिक को ही खाने का अधिकार देते हैं। ये दोनों ही विचार ठीक नहीं हैं। वास्तव में तो हमारा नारा होना चाहिए 'कमाने वाला खिलायेगा' तथा जन्मा सो खायेगा। खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है। कमाने की पात्रता शिक्षा से आती है। समाज में जो कमाते नहीं वे भी खाते हैं। बच्चे, बूढ़े, रोगी, अपाहिज सबकी चिन्ता समाज को करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज इस कर्तव्य का निर्वाह करता है। मानव की सामाजिकता और संस्कृति का मापदण्ड इस कर्तव्य के निर्वाह की तत्परता ही है। इस कर्तव्य के निर्वाह की क्षमता पैदा करना ही अर्थव्यवस्था का काम है। अर्थशास्त्र इस कर्तव्य की प्रेरणा का विचार नहीं कर पाता। काम तो मनुष्य अपने इस कर्तव्य के निर्वाह के लिए करता है, अन्यथा जिनकी भूख मिट गई है वे काम ही नहीं करेंगे।

न्यूनतम स्तर

मानव के नाते भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी अर्थव्यवस्था का न्यूनतम स्तर है। रोटी, कपड़ा और मकान मोटे रूप में इन आवश्यकताओं की अभिव्यंज्जना करते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति को समाज के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए सक्षम बनाना भी समाज का आधारभूत दायित्व है। और किसी भी प्रकार के अस्वास्थ्य की दशा में व्यक्ति को स्वस्थ्य बनाने की व्यवस्था करना तथा उसके निर्वाह की व्यवस्था करना भी समाज का काम है। इतना कम से कम जिस राज्य में हो वही धर्मराज्य है, नहीं तो अधर्म राज्य है। ▪

▪ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी से भेंट कर संगठनात्मक विषयों पर सार्थक चर्चा की।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से बलराम कृषि महोत्सव में शामिल हुए।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रानी अवंती बाई लोधी की जयंती पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

▪ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने खेल प्रकोष्ठ के प्रदेश पदाधिकारियों की परिचयात्मक बैठक को संबोधित किया।

▪ भाजपा क्षेत्रीय संगठन महामंत्री श्री अजय जामवाल ने तिरंगा यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पीएम उज्ज्वला योजना, लाड़ली बहना योजना एवं समग्र पेंशन योजना के अंर्तगत सिंगल क्लिक से राशि का अंतरण किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भूत भावन भगवान महाकालेश्वर की पंचम सवारी में शामिल हुए।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने ओरछा में ऐतिहासिक जहाँगीर महल में चल रहे निर्माण एवं संरक्षण कार्यों का निरीक्षण किया।

अनेकता में एकता और विभिन्न रूपों में एकता की अभिव्यक्ति भारतीय संस्कृति की सोच रही है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय